राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

जो लिखेगा, वही टिकेगा

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UPHIN/2019/79073 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

लखनऊ से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

लखनऊ, सोमवार, 05 मई 2025

वर्ष 06, अंक 216, पृष्ट 12, मूल्यः 03 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें........
9511151254

खुजौली की कीमती सरकारी जमीन पर हुआ अवैध कब्जा......03

खेलों प्रतियोगिताओं में यूआईडी अनिवार्य, नहीं ले सकेंगे भाग.....12

वक्फ पर कल फिर सुप्रीम कोर्ट में होगी सुनवाई, कानून की संवैधानिक वैधता को दी गई है चुनौती

● सुप्रीम कोर्ट सोमवार को वक्फ (संशोधन) अधिनियम की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करेगा. सुप्रीम कोर्ट की तीन न्यायाधीशों की पीठ कल पांच याचिकाओं पर सुनवाई करेगी. याचिकाओं के इस समूह में हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी द्वारा दायर एक याचिका भी शामिल है।

स्वतंत्र प्रभात

सुप्रीम कोर्ट कल यानी सोमवार को वक्फ (संशोधन) अधिनियम की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई करेगा. कुछ सप्ताह पहले सरकार ने शीर्ष अदालत के प्रश्नों के मद्देनजर इस विवादास्पद कानून के दो मुख्य बिंदुओं के लागूकरने पर रोक लगा दी थी. केंद्र ने कहा था कि वह मामले की सुनवाई की अगली तारीख तक 'वक्फ बाय यूजर' सहित अन्य वक्फ संपत्तियों को गैर-अधिसूचित नहीं करेगा, न ही केंद्रीय वक्फ परिषद और बोर्ड में कोई नियुक्ति करेगा

बता दें कि पांच अप्रैल को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की मंजूरी मिलने के बाद केंद्र ने वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 को पिछले महीने अधिसूचित किया था। वक्फ (संशोधन) विधेयक को लोकसभा ने 288 सदस्यों के समर्थन से पारित किया, जबकि 232 सांसद इसके खिलाफ थे. राज्यसभा में इसके पक्ष में 128 और इसके खिलाफ 95 सदस्यों ने मतदान किया. वहीं, इसके पास होने के बाद कई राजनीतिक दलों और मुस्लिम संगठनों ने अधिनियम की वैधता को शीर्ष अदालत में चुनौती दिया था।

पांच याचिकाओं पर सुनवाई करेगी SC

सुप्रीम कोर्ट की तीन न्यायाधीशों की पीठ सोमवार को पांच याचिकाओं पर सुनवाई करेगी. याचिकाओं के इस समूह में एआईएमआईएम प्रमुख और हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी द्वारा दायर एक याचिका भी शामिल है. वहीं, अदालत ने 17 अप्रैल को वक्फ (संशोधन) अधिनियम की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं को स्वीकार किया था. कोर्ट ने केंद्रीय वक्फ परिषद और बोर्ड में गैर मुस्लिमों की नियुक्ति पर सवाल किए थे।

पिछली सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस संजय कुमार और जज के वी विश्वनाथन की पीठ ने इसको सूचीबद्ध किया था. केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने पीठ से कहा था कि संसद द्वारा उचित विचार-विमर्श के बाद पारित कानून पर सरकार का पक्ष सुने बिना रोक नहीं लगाई जानी चाहिए।

पिछली सुनवाई में कोर्ट ने क्या कहा था?

सुनवाई के दौरान शीर्ष अदालत ने कहा कि पहले से पंजीकृत या अधिसूचना के माध्यम से घोषित वक्फ संपत्तियों, जिनमें 'वक्फ बाय यूजर' भी शामिल है, को

अगली सुनवाई की तारीख तक न तो छेड़ा जाएगा और न ही गैर अधिसूचित किया जाएगा. इसके बाद पीठ ने केंद्र को कानून की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर प्रारंभिक जवाब दाखिल करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया और मामले की अगली सुनवाई पांच मई के लिए तय की थी।

सरकार ने बिना पक्ष सुने रोक न लगाने की अपील की थी

केंद्र की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने चीफ जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस संजय कुमार और जस्टिस के वी विश्वनाथन की बेंच से कहा था कि संसद द्वारा उचित विचार-विमर्श के बाद पारित कानून पर सरकार का पक्ष सुने बिना रोक नहीं लगाई जानी चाहिए। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि पहले से पंजीकृत या अधिसूचना के माध्यम से घोषित वक्फ संपत्तियों, जिनमें 'वक्फ बाय यूजर' भी शामिल है, को अगली सुनवाई की तारीख तक न तो छेड़ा जाएगा और न ही गैर अधिसूचित किया जाएगा।

अदालत ने जवाब दाखिल करने के लिए दिया था हफ्तेभर का समय

इसके बाद बेंच ने केंद्र को कानून की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर प्रारंभिक जवाब दाखिल करने के लिए एक सप्ताह का समय दिया और मामले की अगली सुनवाई पांच मई के लिए तय की। सुप्रीम कोर्ट की तीन जजों की बेंच सोमवार को पांच याचिकाओं पर सुनवाई करेगी। याचिकाओं के इस समूह में एआईएमआईएम प्रमुख और हैदराबाद के सांसद असदुद्दीन ओवैसी द्वारा दायर एक याचिका भी शामिल है।

पांच अप्रैल को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की मंजूरी मिलने के बाद केंद्र ने वक्फ संशोधन अधिनियम 2025 को पिछले महीने अधिसूचित किया था। वक्फ संशोधन विधेयक को लोकसभा ने 288 सदस्यों के समर्थन से पारित किया, जबकि 232 सांसद इसके खिलाफ थे। राज्यसभा में इसके पक्ष में 128 और इसके खिलाफ 95 सदस्यों ने मतदान किया। कई राजनीतिक दलों, मुस्लिम संगठनों और एनजीओ ने अधिनियम की वैधता को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट का रुख किया है।

हाईकोर्ट के रिटायर डिप्टी रजिस्ट्रार की नौ बीघे जमीन का फर्जी बैनामा

● 15 अगस्त यानी अवकाश के दिन हो गई रजिस्ट्री।

बिना पत्रावली व वाद दायर हुए जमीन का हो गया नामांतरण ।

तहसीलदार ने दोषी पेशकार व अन्य के विरुद्ध तत्काल एफआईआर दर्ज कराने का दिया आदेश।

डिप्टी रजिस्ट्रार तहसील और थाने का लगा रहे है चक्कर, नही दर्ज हुई रिपोर्ट

भूमाफियों से मिल रही धमकी।

स्वतंत्र प्रभात

झूंसी। प्रयागराज। फूलपुर तहसील के झूंसी इलाके में भूमाफियाओं का एक दुस्साहसिक कारनामा उजागर हुआ है। हाईकोर्ट के एक रिटायर डिप्टी रजिस्ट्रार अटल सिंह यादव की नौ बीघे वेशकीमती जमीन को कूटरचित दस्तावेजों से न सिर्फ रजिस्ट्री करा लिया गया बल्कि खतौनी में नाम दर्ज करा उसे बिक्री भी कर दिया गया। भू-माफिया जमीन पर कब्जा करने पहुंचे तो फर्जीवाड़े का खुलासा हुआ। डिप्टी रजिस्ट्रार की शिकायत पर भूमाफियाओं का खतौनी से नाम तो निरस्त हो गया किंतु स्पष्ट आदेश के बावजूद दोषियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज नहीं किए जाने पर क्षुब्ध डिप्टी रजिस्ट्रार ने कोर्ट की शरण ली है।

झूंसी थाना क्षेत्र के दुर्जनपुर गांव स्थित आराजी संख्या 233, 255, 38 व 87 रकबा नौ बीघा राजस्व अभिलेखों में कटका निवासी अटल सिंह, निगम सिंह, बासदेव सिंह का नाम बतौर संक्रमणीय भूमिधर दर्ज है। 15.8.2015 यानी अवकाश के दिन कूटरचना करके गंगाजली पत्नी अशोक कुमार, विष्णु कुमार वर्मा, सत्य प्रकाश वर्मा, विजयलक्ष्मी पत्नी ओम शंकर, बलराम वर्मा, विजय कुमार वर्मा, सीमा वर्मा पत्नी जय प्रकाश वर्मा, गौरव वर्मा व मुन्ना लाल पुत्र छेदीलाल निवासीगण झूंसी ने फर्जी बैनामा करा लिया। यही नहीं 28.8.2024 को खतौनी में नाम भी दर्ज करा लिया। खतौनी में नाम दर्ज होने के बाद उक्त जमीन का उपर्युक्त फर्जी बैनामा धारकों ने रूबी त्रिपाठी पत्नी अविनाश त्रिपाठी के नाम 12 जून 2024 को रजिस्टर्ड इकरारनामा भी कर दिया।

बिना वाद और पत्रावली के नामांतरण आदेश जारी।

जमीन खाली करने की धमकी मिली तो अटल तहसील पहुंचे और खतौनी निकाली तो भौंचक रह गए। वे और उनके भाइयों ने किसी को रजिस्ट्री किया ही नहीं था तो खतौनी से उनके नाम कैसे कट गए। 18 जनवरी 2025 को फूलपुर उपजिलाधिकारी को शिकायती पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई। तहसीलदार ने मामले का जांच कराया तो तथ्य चौंकाने वाले

निकले। प्रेषित जांच रिपोर्ट में दर्शाया गया कि 28 अगस्त 2024 को जिस न्यायालय के आदेश पर कम्प्यूटर की खतौनी में नामांतरण आदेश फीड किया गया था उस न्यायालय में न तो कोई वाद दायर है और न ही कोई पत्रावली उपलब्ध है। यही नहीं रजिस्ट्री दफ्तर में भी बैनामे से संबंधित कोई दस्तावेज नही मिला।

तहसीलदार ने दोषियों के विरुद्ध एफआईआर का दिया आदेश।

23 जनवरी 2025 को रिपोर्ट मिलने पर तहसीलदार ने 1 फरवरी को नायब तहसीलदार को तत्काल फर्जी आदेश निरस्त करते हुए दोषी पेशकार व अन्य के खिलाफ तत्काल एफआईआर दर्ज कराने का आदेश जारी कर दिया। फर्जी बैनामा धारकों का नाम तो निरस्त हो गया किंतु दोषियों के विरुद्ध एफआईआर नही दर्ज कराई गई। दोषियों के खिलाफ कार्रवाई के लिए अटल ने अंततः कोर्ट की शरण ली है।

किसान को बेवजह मिल रही सजा- अधिकारियों की शिथिलता कह लीजिए या फिर मिलीभगत ऐसे फर्जी कारनामों की वजह से अटल को महीनों से शारीरिक, मानसिक और आर्थिक जो पीड़ा झेलनी पड़ रही वह अवर्णनीय है। अधिवक्ताओं की मानें तो खतौनी में नाम गड़बड़ी की ढ़ेरों शिकायतें हैं और सैकड़ों अनावश्यक वाद लंबित चल रहे हैं।

संक्षिप्त ख़बरें

सिद्धार्थनगर के पिपरहवा स्तूप से प्राप्त पुरावशेषों के अंतर्राष्ट्रीय बाजार में नीलामी रोकने हेतु, विश्वविद्यालय के छात्रों ने स्तूप के पास विरोध प्रदर्शन किया

सिद्धार्थनगर। सिद्धार्थनगर जिले के पिपरहवा स्थित सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के छात्रों में, सात मई को पिपरहवा अवशेषों की हांगकांग में होने जा रही नीलामी के प्रति आक्रोश देखने को मिला। विश्वविद्यालय के छात्रों ने रविवार को पिपरहवा स्तूप के पास स्वतः स्फूर्त फ्लैग मार्च निकाला तथा इस नीलामी के प्रति अपना शांतिपूर्ण विरोध दर्ज कराया। साथ ही साथ जनमानस को इस घटना से अवगत भी कराया।

एमजीएम अस्पताल हादसा- आदिवासी मंच ने सरकार को घेरा, स्वास्थ्य मंत्री से इस्तीफे की मांग

रांची, झारखंड- एमजीएम अस्पताल में हुई छत गिरने की घटना में तीन आदिवासी मरीजों की मौत और दो घायल होने पर आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष विजय शंकर नायक ने इसे सरकार के लिए कलंक बताया है और स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी से इस्तीफे की मांग की है। श्री नायक ने मृतकों के परिजनों को 50-50 लाख और घायलों को 5-5 लाख रुपये मुआवजा देने की मांग की है। उन्होंने घटना की जांच सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में विशेष कमेटी से कराने की मांग करते हुए कहा कि दोषियों को सख्त सजा मिले। नायक ने अस्पताल में माफिया तत्वों की मौजूदगी और स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही को भी जिम्मेदार ठहराया। उन्होंने मुख्यमंत्री से ठोस कार्रवाई की अपील की और कहा कि स्वास्थ्य मंत्री जिम्मेदारी से नहीं बच सकते।

अनदेखी- मनरेगा में मजदूरों की जगह जेसीबी और ट्रैक्टर से करा रहे काम

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। एक तरफ केंद्र और प्रदेश सरकार गरीबों और मजदूरों के हित के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित की हैं, एक महत्वाकांक्षी योजना मनरेगा है. इसमें अधिकारियों की साठगांठ से मजदूर की जगह मशीन से काम किया जा रहा है. मामला बर्डपुर ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत बर्डपुर नम्बर 10 का है, जहां मनरेगा योजनाओं में भारी अनियमितता बरती जा रही है और धड़ल्ले से ट्रैक्टर ,जेसीबी का इस्तेमाल किया जा रहा है. शिकायत के बावजूद अधिकारी कोई सुनवाई करते नजर नहीं आते हैं. लिहाजा कार्य जिम्मेदारों द्वारा मनमाने ढंग से मजदूरों के बजाय जेसीबी मशीन और ट्रैक्टर से कार्य करवाते हैं. यहां तक कि बर्डपुर ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत बर्डपुर नम्बर 10 में मनरेगा योजना द्वारा संचालित परियोजनों पर बिना कार्य कराए ही अधिकारियों के साठगांठ से भुगतान किया जा रहा है। इस समय ग्राम पंचायत बर्डपुर नम्बर 10 के पांच परियोजनों पर कार्य कागजों में चल रहा है लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और है। बर्डपुर 10 में श्मशानघाट के सामने से बशीर के खेत तक नाला खुदाई कार्य, बर्डपुर नंबर 10 में प्रदीप के खेत से राधेश्याम के खेत तक नाला खुदाई कार्य, लालपुर गांव के पश्चिम पोखरे की खुदाई कार्य , बर्डपुर नंबर 10 में बशीर के खेत से पुलिया तक नाला खुदाई कार्य चल रहा है।

जिसमें लगभग चार सौ श्रमिक को मस्टर रोल चल रहा है यदि जांच हो जाए तो मौके पर एक भी मजदूर कार्य करते नहीं मिलेगे जेसीबी मशीन और ट्रैक्टर से कार्य कराया जा रहा यहां तक कि शनिवार की रात जेसीबी मशीन और ट्रैक्टर से कार्य जाना ,इसकी जानकारी ग्रामीणों ने सम्बंधित कार्यो फोटो व वीडियो भेज कर जानकारी दी है। इसमें ग्राम प्रधान द्वारा मजदूरों की जगह धड़ल्ले से जेसीबी व ट्रैक्टर से कार्य कराया जा रहा है. गांव में मनरेगा योजना में बरती जा रही है अनियमितता का ग्रामीणों ने सम्बंधित अधिकारी को वीडियो भेज कर जानकारी दी, बावजूद इसके जेसीबी से नाला

की खुदाई कर ट्रैक्टर से मिट्टी लाकर सड़क निर्माण कार्य कराया जा रहा है. ग्रामीणों ने बताया की विरोध के बावजूद जिम्मेदार अधिकारी लगातार अपनी मनमानी कर रहे है। अधिकारी भी इस मामले में चुप हैं, जिसके कारण इस कार्य को अंजाम देने वालों का मनोबल ऊंचा है। यह योजना सरकार द्वारा मूल रूप से गरीब मजदूरों को रोजगार मुहैया कराने के साथ गांव के विकास के लिए शुरू किया गया है. योजना का मुख्य उद्देश्य गरीब मजदूरों का दूसरे राज्यों में हो रहे पलायन को रोकना भी है. लेकिन जिम्मेदार अधिकारी की मनमानी एवं उच्चाधिकारियों की लापरवाही के कारण मनरेगा योजना बर्डपुर ब्लाक में भ्रष्टाचार का भेंट चढ़ गया है।

क्या कहते हैं अधिकारी

जिला खनन अधिकारी मुकेश कुमार मिश्रा का कहना है कि ग्रामीणों की ओर से शिकायत मिली है कि जेसीबी मशीन से सरकारी नाले की खुदाई कर मिट्टी को डंफर ओर ट्रैक्टर का इस्तेमाल बेची जा रही है जो नियम विरुद्ध है. इसकी जांच कर कड़ी करवाई की जाएगी।

तेलंगाना के मजिस्ट्रेट ने बुजुर्ग दंपति को सड़क पर न्याय दिलाया, जो अदालत में प्रवेश नहीं कर सके

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

तेलंगाना में निजामाबाद जिले के बोधन कस्बे में एक मजिस्ट्रेट सोमवार को दयालुता का परिचय देते हुए एक बुजुर्ग दंपति से जुड़े मामले में अपना फैसला सुनाने के लिए सड़क पर आए, जो अपने खराब स्वास्थ्य के कारण अदालत परिसर में प्रवेश करने में असमर्थ थे। हालांकि यह भारत में न्यायिक ढांचे की खराब स्थिति की याद दिलाता है, लेकिन अतिरिक्त जूनियर सिविल जज एस्सम्पेल्ली साई शिवा को उनके असाधारण कार्य के लिए सोशल मीडिया पर प्रशंसा मिली है। दंपति रिक्शे में बैठकर कोर्ट पहुंचे थे। बार एंड बेंच द्वारा समीक्षा किए गए अदालती रिकॉर्ड से पता चला है कि दंपति कांतापु सयाम्मा और कांतापु नादपी गंगाराम पर 2021 में तेलंगाना पुलिस द्वारा भारतीय दंड संहिता की धारा 498-ए के तहत वैवाहिक क्रूरता का मामला दर्ज किया गया था।दिसंबर 2021 में उनके खिलाफ आरोप-पत्र दाखिल किया गया, जिसके बाद बोधन कोर्ट परिसर में मुकदमा चला। करीब

30 सुनवाई के बाद आखिरकार 22 अप्रैल को मामले पर फैसला सुरक्षित रख लिया गया।

एक महीने पहले कोर्ट को बताया गया कि दंपत्ति दुर्घटना का शिकार हो गए हैं और चलने में असमर्थ हैं। दंपत्ति की स्थिति को देखते हुए जज 30 अप्रैल को न्याय देने के लिए व्यक्तिगत रूप से उनके सामने पेश हुए। बुजुर्ग दंपत्ति के खिलाफ उनकी बहू द्वारा दर्ज कराया गया मामला झूठा पाया गया। अदालत ने आदेश दिया, "आरोपी नंबर 1 और 2 को आईपीसी की धारा 498 ए के तहत दंडनीय अपराध के लिए दोषी नहीं पाया गया," जबकि उन्हें क्रूरता के आरोप से बरी कर दिया।

मोहनलालगंज में बैखौफ जालसाजों का खेल रिटायर्ड आईटीआई अधिकारी की करोड़ों की जमीन हड़पी

जावित्री हॉस्पिटल के मालिक पर फर्जीवाड़े का गंभीर आरोप, पीड़ित ने लगाई न्याय की गुहार.....

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

मोहनलालगंज। लखनऊ, मोहनलालगंज तहसील क्षेत्र में सक्रिय जालसाजों का दुस्साहस इस कदर बढ़ गया है। कि अब वे रिटायर्ड सरकारी अधिकारियों की जमीन भी निशाना बना रहे हैं। ताजा मामला आईटीआई के एक सेवानिवृत्त अधिकारी से जुड़ा है, जिनकी करोड़ों रुपये मूल्य की करीब डेढ़ बीघा जमीन को फर्जीवाड़े के जरिए हड़प लिया गया।प्राप्त जानकारी के अनुसार, जालसाजों ने फर्जी किसान खड़ा कर उक्त जमीन की रजिस्ट्री करवा दी। इतना ही नहीं, इसी गिरोह ने पहले भी चार बीघे जमीन को इसी तरीके से हड़पने का कारनामा अंजाम दिया था। दोनों ही मामलों में मास्टरमाइंड एक ही बताया जा रहा है।

चौंकाने वाली बात यह है कि दोनों ही रजिस्ट्री जावित्री हॉस्पिटल के मालिक डॉ. ईषा

त्यागी के नाम पर की गई हैं। पीड़ित रिटायर्ड अधिकारी का आरोप है कि यह पूरी साजिश डॉ. ईषा त्यागी ने जालसाजों के साथ मिलकर रची। पीड़ित का कहना है कि उनकी दूसरी डेढ़ बीघा जमीन भी महज दस लाख रुपये में रजिस्टर्ड करवा ली गई, जबकि उसकी बाजार कीमत करोड़ों में है। रजिस्ट्री प्रक्रिया में जालसाजों ने पीड़ित के फर्जी बैंक खाते, आधार कार्ड और पैन कार्ड का इस्तेमाल कर लिया। अब सबसे बड़ा सवाल यह उठता है कि रजिस्ट्री में जो पैसा दर्शाया गया, वह वास्तव में किस खाते में गया।पीड़ित का यह भी दावा है कि डॉ. ईषा त्यागी ने मोहनलालगंज क्षेत्र में बड़ी मात्रा में जमीनें खरीदी हैं, जिनमें कई पर संदेहास्पद तरीके से कब्जा किया गया है। अब पीड़ित अधिकारी ने प्रशासन और पुलिस से मांग की है कि मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों पर कठोर कार्रवाई की जाए।फिलहाल इस मामले ने स्थानीय प्रशासन और आम नागरिकों के बीच चिंता की लहर पैदा कर दी है।

'सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति-राज्यपाल के लिए फैसले लेने की टाइमलाइन तय करके गलत नहीं किया

● पूर्व जस्टिस केएम जोसेफ

स्वतंत्र प्रभात ब्यूरो।

राष्ट्रपति और राज्यपालों के लिए विधेयकों पर निर्णय लेने की समयसीमा तय करके सुप्रीम कोर्ट ने कुछ भी गलत नहीं किया है। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला लोकतंत्र और संघवाद को बढ़ावा देगा। सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस केएम जोसेफ ने यह बयान दिया है। पूर्व जस्टिस जोसेफ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में केंद्रीय और राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी देने के लिए राष्ट्रपति और राज्यपालों के लिए 3 महीने की समयसीमा निर्धारित की थी। यह आदेश देकर सुप्रीम कोर्ट ने कुछ गलत नहीं किया है। यह फैसला बिल्कुल उचित है, क्योंकि यह लोकतंत्र और संघवाद को बढ़ावा देगा।

लाइव लॉ की रिपोर्ट के अनुसार, पूर्व जस्टिस जोसेफ शनिवार को कोच्चि में अखिल भारतीय अधिवक्ता संघ की राज्य समिति द्वारा आयोजित सेमिनार में बोल रहे थे। इस सेमिनार की थीम 'राज्यपालों की

शक्तियों के मामले में न्यायपालिका की भूमिका' थी। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जब कोई विधेयक राज्यपाल के पास मंजूरी के लिए भेजा जाता है तो राज्यपाल की भूमिका बहुत सीमित होती है। राज्यपाल राज्य और केंद्र के बीच अहम कड़ी हो सकते हैं। लेकिन राज्यपाल केंद्र के कर्मचारी, एजेंट या प्रतिनिधि के रूप में कार्य नहीं कर सकते।

रिपोर्ट के अनुसार, पूर्व जस्टिस जोसेफ ने कहा कि तमिलनाडु के राज्यपाल ने विधेयकों को मंजूरी देने में देरी की। इस देरी के खिलाफ दायर याचिका की सुनवाई करते हुए 8 अप्रैल को जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन की बेंच द्वारा फैसला सुनाया गया कि राज्यपाल और राष्ट्रपति 3 महीने के अंदर बिलों पर फैसला लें, लेकिन इस फैसले की कार्यकारी पदाधिकारियों ने तीखी आलोचना की, जबकि यह फैसला बिल्कुल सही है। बता दें कि उप-राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने भी सुप्रीम कोर्ट के फैसले की आलोचना की थी और कहा था कि न्यायपालिका 'सुपर-संसद' बनने की कोशिश कर रही है और अनुच्छेद 142 को संवैधानिक पदों पर बैठे लोगों के खिलाफ इस्तेमाल किया जाने वाला परमाणु मिसाइल समझ रही है।

संक्षिप्त खबरें

घिवही गांव में कार की चपेट में आने से 8 वर्षीय बालक हुआ गंभीर रूप से घायल, अस्पताल में इलाज जारी

दुद्धी सोनभद्र – विंढमगंज थाना क्षेत्र के घिवही गांव में एक 8 वर्षीय बालक दीपू पुत्र शिवरंजन निवासी घिवही कार की चपेट में आकर गंभीर रूप से घायल हो गया।मिली जानकारी के अनुसार, दीपू अपने दादा बिगन गुप्ता के साथ कचनरवा-कोन जाने के लिए घर से निकला था। जब वह पेट्रोल पंप के समीप एनएच 39 रीवां-रांची राष्ट्रीय मार्ग सड़क को पार कर रहा था, तभी दुद्धी से विंढमगंज की ओर जा रही तेज रफ्तार कार ने उसे अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में बालक गंभीर रूप से घायल हो गया। मौके पर राहगीरों ग्रामीणों की भीड़ जमा हो गई । घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और घायल बालक को डायल 112 के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र विंढमगंज ले जाया गया। पुलिस ने कार और चालक को अपने कब्जे में ले लिया है और अग्रिम कार्रवाई में जुट गई है।

बरहपान गांव में मैजिक जीतो वाहन पलटने से एक युवक की हुई मौत, तीन घायल

सोनभद– सोनभद्र के दुद्धी कोतवाली क्षेत्र के बरहपान गांव में शनिवार रविवार की मध्यरात्रि लगभग ढाई बजे शादी समारोह से लौटते समय एक मैजिक जीतो वाहन पलटने से एक युवक की मौत हो गई। जबकि वाहन पर सवार तीन लोग घायल हो गए।मिली जानकारी के अनुसार मैजिक में छह लोग सवार थे।वही मैजिक में सवार अन्य को मामूली चोटें आई हैं।बताया जा रहा है कि बरहपान गांव से जयमाल का स्टेज सजाने के बाद लौट रही मैजिक जीतो वाहन बरहपान गांव में ही अनियंत्रित होकर पलट गई। हादसे में नौडीहा गांव निवासी 16 वर्षीय बलराम पुत्र नंदलाल की मौत हो गई।जबकि वाहन चालक 14 वर्षीय सूरज, 12 वर्षीय रविकांत पुत्र वंशगोपाल व दीपक घायल हो गए। दुर्घटना की आवाज सुनकर ग्रामीण मौके पर पहुंचे और राहत कार्य में जुट गए।सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया। वाहन में झालर-बत्ती और जनरेटर भी लदा था।मृतक बलराम अपने माता-पिता का इकलौता पुत्र था। उसकी दो बहनें हैं। दुद्धी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में शव देखते ही परिजनों में कोहराम मच गया और रोरोकर बुरा हाल था।

लाठी डंडे से मारपीट से सिर फुटौवल,आधा दर्जन घायल

प्रतापगढ़। पुरानी रंजिश को लेकर पडोसियों ने हमला बोल दिया जिससे एक महिला सहित आधा दर्जन लोग घायल हो गए। भुक्तभोगी युवक ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। सदहा गांव निवासी इन्द्रजीत यादव पुत्र दूधनाथ यादव ने पट्टी कोतवाली में शिकायती पत्र देकर लगाया है कि बीते शुक्रवार की देर शाम लगभग साढ़े आठ बजे घर पर बैठा था। साथ ही उसके गांव के धर्मेन्द्र यादव व उसकी मां दरवाजे पर बैठी हुई थी। घर के सामने से ही लगभग आधा दर्जन लोग जा रहे थे अचानक वे उसकी मां से गाली गलौज करने लगे। जब उसने इसका विरोध किया आरोपी युवक हमलावर हो गए और राड व लाठी-डंडे पीटकर घायल कर दिया। पिटाई से धर्मेन्द्र का सिर फट गया और वह लहुलूहान होकर जमीन पर गिर पड़ा। जब हल्ला गुहार बीच बचाव करने अन्य लोग पहुंचे तो आरोपियों ने उन पर भी हमला बोल दिया और उनको भी घायल कर दिया। युवक ने इसकी सूचना 112 पुलिस को दी और सभी घायलों को एंबुलेस से अस्पताल भेजवाया। आरोप है कि जब घायलों को अस्पताल पहुंचने के बाद आधा दर्जन युवक फिर से घर आ धमके और शिकायत करने पर जान से मारने की धमकी दी। जबकि दूसरी पक्ष की महिला ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर छेडखानी का आरोप लगाया है। पुलिस दोनों पक्ष के मामले की जांच कर रही है। कोतवाल अवन कुमार दीक्षित का कहना है कि दोनों पक्षों के घायलों का मेडिकल परीक्षण कराया गया है। मामले की जांच कराकर उचित कार्रवाई की जायेगी।

आपसी रंजिश में चटकी लाठियां, 26 पर मुकदमा

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले के छह थाना क्षेत्रों में मारपीट की 6 घटनाओं में 26 लोगो के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है। सम्बन्धित थाना पुलिस तहरीर के आधार पर आरोपियों के खिलाफ बीएनएस की सुसंगत ध्धाराओं में मुकदमा दर्ज कर मामले की विवेचना कर रही है।

हरैया थाना क्षेत्र के तरना निवासी राम लायक वर्मा ने गांव निवासी सुनील कुमार, ऋषि कुमार, उनकी मां गीता देवी, आरती देवी पत्नी अनिल कुमार पर जमीनी विवाद को लेकर गाली देते हुए उसे, उसके पुत्र राहुल, पत्नी गीता देवी को लाठी डंडे से मारने पीटने, जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। छावनी थाना क्षेत्र के चरथीकथिक गांव निवासी मिथुन कुमार ने गांव निवासी विवेक और उसके पिता इन्द्रमणि पर उसे और उसकी मां को मारने पीटने का आरोप लगाया है। बताया है कि उसकी चचेरी बहन की शादी में आर्शीवाद देने के लिए बने स्टेज पर दोनो आरोपी जबरदस्ती चढ़ रहे थे। उन्हे स्टेज पर चढ़ने से उसने मना किया जिस पर दोनो ने मिलकर उसे लात मुका, थप्पड़ से मारने लगे। जान बचाकर वह घर पहुंचा तो आरोपी उसके घर पहुंच गए, उसकी मां को भी खींचकर मारा पीटा, शोर मचाने पर लोग पहुंचे, बीच बचाव किया। इसके बाद आरोपी गाली देते हुए भाग निकले। पैकोलिया थाना क्षेत्र के पिकौरा निवासी विवेक सिंह ने अपने पट्टीदार हरेन्द्र सिंह, उसके पुत्र बलवन्त सिंह उर्फ प्रवीन सिंह पर बांस बल्ली हटाने की बात को लेकर हाथापाई करने, जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। वहीं लालपुर पंडित निवासी महेन्द्र सिंह ने गांव निवासी शोभनाथ सोनी,राजनाथ सोनी, रामबहादुर सोनी, संदीप सोनी परर घर में घुसकर लाठी डंडे से मारने पीटने, गाली और जान से मारने की धमकी देने, बीच बचाव करने आई उसकी भाभी को भी मारने पीटने का आरोप लगाया है। कहा है कि आरोपी उसकी जमीन को अपना बताते हुए रंजिशन उसके घर में घुस आए और मारा पीटा, धमकी दी। गौर थाना क्षेत्र के सुमही निवासी मिठाई लाल यादव ने गांव निवासी रामदीन, गंगाराम, सन्तोष उर्फ प्रेम, अजीत, आशीष व उनके परिवार की तीन महिलाओं पर जमीनी विवाद की रंजिश को लेकर गाली देते हुए घर में घुसकर लाठी डंडा से मारा पीटा, बाइक तोड़ देने, जान से मारने की धमकी देने का आरोप लगाया है। कप्तानगंज थाना क्षेत्र के करमिया शुक्ल निवासी पंकज शुक्ला ने गांव निवासी चन्द्रमौल उर्फ शिवम, शैलेन्द्र, धर्मेन्द्र, राम सुभग, कौशल किशोर, इन्द्रमती पर अपनी जमीन पर निर्माणाधीन रास्ते को बनाने से बाधित करने, मना करने पर आमदा फौजदारी हो जाने, मारने पीटने, घर में घुसकर उसके पिता और बड़े पिता को भी मारने पीटने, जानमाल की धमकी देने का आरोप लगाया है। सभी मामलों में आरोपियों के खिलाफ बीएनएस की सुसंगत धाराओं के तहत मुकदमा दर्ज कर सम्बन्धित थाना पुलिस विवेचना कर रही है।

अपहरण के अभियोग में एक अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। पुलिस द्वारा अपराध व अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही के चलते थाना हथिगवां पुलिस द्वारा अपहरण के अभियोग से संबंधित एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया।थाना हथिगवां के उप निरीक्षक विवेक पाण्डेय मय हमराह का0 संदीप कुमार द्वारा रविवार को रोकथाम जुर्म जरायम में वांछित अभियुक्त को मुखबिर की सूचना पर थाना हथिगवां में पंजीकृत अभियोग अन्तर्गत धारा 137 (2)/87 बी. एन. एस. 2023 से संबंधित वांछित अभियुक्त अमित कुमार पुत्र राम छबीले निवासी ग्राम कन्धई का पुरवा थाना हथिगवां जनपद प्रतापगढ़ को थाना हथिगवां क्षेत्रान्तर्गत मोहद्दीनगर चौराहे के पास से गिरफ्तार कर हवाले जेल कर दिया गया।

ननिहाल आई 16 वर्षीय किशोरी का फंदे से लटकता मिला शव- परिजनों के उड़े होश

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले के दुबौलिया थाना क्षेत्र के बैरागल गांव अपने नाना के घर आई 16 वर्षीय किशोरी का शव छत के प्रथम तल पर बने कमरे में पंखे के सहारे रस्सी के फंदे में लटकता मिला। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा। फोरेंसिक टीम ने मौके की जांच पड़ताल कर साक्ष्य एकत्र किए।

संतकबीरनगर जनपद के धर्मसिंहवा थाना क्षेत्र के हरैया गांव निवासी 16 वर्षीय जागृति उर्फ डाली तिवारी अपनी मां पुष्पा देवी और अपनी छोटी बहन के साथ नाना जगन्नाथ तिवारी के घर बैरागल आई थी। शनिवार की सुबह जब वह सो कर नीचे नहीं आई तो मां पुष्पा देवी ने कमरे के बाहर से उसे आवाज लगाई लेकिन कमरा नहीं खुला। कमरे का दरवाजा अंदर से बंद था। परिवार के अन्य सदस्यों के आवाज देने पर भी उसने कोई जबाब नहीं दिया। इसके बाद बाहर से खिड़की से झांक कर देखा तो वह पंखे से फंदे से लटकती मिली। आनन फानन में परिजनों ने दरवाजा तोड़कर खोला। घटना कि सूचना पुलिस को दी। मौके पर पुलिस व फोरेंसिक टीम पहुंची। घटना स्थल जांच-पड़ताल कर परिजनों से जानकारी लिया। परिजनों के अनुसार वह परिवार के अन्य लोगो के साथ खाना खा कर शाम आठ बजे छत के प्रथम तल पर बने कमरे में सोने चली गई थी। किन परिस्थितियों में उसने ऐसा कदम उठाया इसकी जानकारी नहीं है। वह चार बहनों में तीसरे नम्बर की थी। एसओ प्रदीप सिंह ने बताया कि मामला प्रथम दृष्ट्या आत्महत्या का लग रहा है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट होगा।

जमीन पर जबरिया कब्जे का आरोप: उच्चाधिकारियों से लगाया न्याय की गुहार

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिलेमे दबंगों द्वारा जमीनी कब्जा मामले ज्यादातर आ रहे हैं इसमें पुलिस की और राजस्व टीम की मिली भगत से अवैध रूप से कब्जा किया जा रहा है बस्ती की जिम्मेदार राजस्व अधिकारी मामले को संज्ञान ना लेकर बहुत बड़ी घटना हो सकता है ऐसे में अवैध कबजेदारों को तत्काल कार्रवाई करके अवैध कब्जा हटवाया जाए ताजा मामलाकोतवाली थाना क्षेत्र के मूडघाट निवासी रामजनम पुत्र रामकेवल ने मुख्यमंत्री, मण्डलायुक्त, जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक के साथ ही सम्बंधित अधिकारियों को पत्र देकर अपने पैतृक जमीन पर पुलिस के सहयोग से

हरिश्चन्द्र चौहान द्वारा कराये जा रहे अवैध कब्जे पर रोक लगाने की मांग किया है।

उच्चाधिकारियों को दिये पत्र में रामजनम और उनके पुत्र राजेश कुमार चौहान ने कहा है कि मूडघाट स्थित उसकी पुश्तैनी जमीन पर गांव के ही हरिश्चन्द्र चौहान पुलिस से मिलीभगत कर जमीन पर जबरिया कब्जा करा लेने का षड़यंत्र कर रहे हैं। पुलिस ने जमीनी मामले में बिना तथ्यों की जांच कराये रामजनम, बृजेश चौहान, सुरेश चौहान, दुलारी चौहान को कोतवाली बुलाया और दूसरे पक्ष हरिश्चन्द्र चौहान को छोड़ दिया गया। रामजनम ने मांग किया है कि जमीन की पैमाइश कराने के बाद ही कोई निर्णय लिया जाय। रामजनम सहित 4 लोगों का पुलिस ने चालान कर दिया। लेकिन अभी तक जमीन की पैमाइश नहीं कराई गई और दबंगों द्वारा अवैध कब्जा कर रहे हैं ऐसी स्थिति में बड़ी घटना हो सकती है जब तक पैमाइश ना हो वहां किसी प्रकार का हस्तक्षेप न किया जाए जिससे हमें नया मिल सके लेकिन राजस्व टीम द्वारा तमाम हवाला देखकर बिना पैमाइश की ही निर्माण करवाना चाह रहा है ऐसे में कैसे जनता को न्याय मिलेगा।

एक ही निर्माण पर दो बार हुआ भुगतान, भ्रष्टाचार मामले पर अफसर मौन

●बिना कार्य कराए भुगतान करने के मामले में खंड विकास अधिकारी द्वारा केवल जांच का आदेश दिया इन भ्रष्टाचारियों पर कार्रवाई की जाए

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले केबनकटी लगभग तीन वर्ष पूर्व करायें गये नाली निर्माण का दुबारा भुगतान करायें जाने का मामला प्रकाश में आया है। जिम्मेदार अफसर कार्यवाही की बजाय भ्रष्टाचार पर परदा

डालने में जुटे हैं। मामला बनकटी ब्लाक का है। सूत्रों के अनुसार ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत बघाड़ी में लगभग तीन वर्ष पूर्व रामभवन के घर से राजू के घर तक नाली का निर्माण कराने का भुगतान हो गया था।अब पता चला है कि अब फिर उसी नाली का बगैर कार्य करायें दोबारा फर्जी भुगतान कराया गया है। सूत्र तो यह भी बता रहे हैं कि मनरेगा योजना से दर्शाये गये फर्जी नाली निर्माण में रोजगार सेवक और तकनीकी सहायक की विशेष कृपा से प्रधान के उन गुर्गो के बैंक खाते में मजदूरी भेजा गया है जो मनरेगा में कभी कार्य नहीं करते हैं। सम्पूर्ण आरोपों के मामले में बीडीओ बनकटी भवानी प्रसाद शुक्ल ने कहा है कि प्रकरण की जांच कराकर कार्य वाही की जायेगी। ग्रामीणों द्वारा उच्च अधिकारी को शिकायत पत्र देने की बात कही तो खंड विकास अधिकारी द्वारा कहा गया मामले की जांच करवा रहा हूं अगर दोषी पाए गए प्रधान सचिव पर कार्रवाई की जाएगी और निकल गए पैसे की वापसी कराई जाएगी।

कोन थाना में तैनात हेड कांस्टेबल की हार्ट अटैक से मौत, पुलिस विभाग में शोक की लहर

स्वतंत्र प्रभात

कोन / सोनभद्र – स्थानीय थाना में पी आर बी 112 नम्बर में तैनात हेड कांस्टेबल मांधाता सिंह की देर रात हार्ट अटैक से मौत होने का अनुमान लगाया जा रहा है। मिली जानकारी के अनुसार मांधाता सिंह उम्र लगभग 40 वर्ष मूलरूप से गाजीपुर के रहने वाले थे जो कि कोन थाने में पी आर बी 112 नंबर में तैनात थे। इसी क्रम में बतातें चलें कि जब सुबह लगभग 7 बजे दूधिया दूध लेकर आया

तो दरवाजा नहीं खुला तो उन्होंने तत्काल अन्य पुलिस कर्मियों को सूचना दिया जिसके क्रम में उन्हें तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कोन ले जाया गया जहाँ डॉक्टरों ने देखते ही मृत घोषित कर दिया। इस बावत सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र प्रभारी डॉक्टर जे. पी. सिंह ने बताया कि आज सुबह हेड कांस्टेबल को लाया गया था जिसे मृत घोषित कर दिया गया अनुमान लगाया जा रहा है कि उनकी मौत हार्ड अटैक से हुई होगी आगे पी एम रिपोर्ट आने के बाद ही वास्तविकता का पता चल पायेगा। वहीं पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार उनकी मौत हार्ट अटैक से होनी की संभावना ब्यक्त की जा रही है। खबर लिखे जाने तक फिलहाल उनके परिजनों को सूचित कर पी एम के लिए दुद्धी भेजने की अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

सफाईकर्मी, समस्याओं के निस्तारण की मांग समस्याओं का निस्तारण ना हुआ तो होगा आंदोलन

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले मेंउत्तर प्रदेश पंचायती राज ग्रामीण सफाई कर्मचारी संघ पदाधिकारियों और सफाईकर्मियों ने जिलाध्यक्ष अजय कुमार आर्य के नेतृत्व में कार्यवाहक जिला पंचायत राज अधिकारी राजेश कुमार से शिष्टाचार भेंट कर उनसे समस्याओं का समाधान कराने का आग्रह किया। ज्ञात रहे कि जिला पंचायत राज अधिकारी रतनकुमार के सेवा निवृत्त हो जाने के बाद परियोजना निदेशक राजेश कुमार को जिला पंचायत राज अधिकारी का

भी दायित्व सौंपा गया है। सफाई कर्मचारी संघ जिलाध्यक्ष अजय कुमार आर्य ने राजेश कुमार से सफाई उपकरण उपलब्ध कराने, वरिष्ठता सूची तैयार कराये जाने, विकलांग सफाई कर्मियों को भत्ता दिलाये जाने, सर्विस बुक पूर्ण कराये जाने, वंचित सफाई कर्मियों के स्थायीकरण कराने, एसीपी लगाये जाने, चिकित्सा प्रतिपूर्ति समस्या का समाधान कराने , एन.पी.एस. पासबुक बनाये जाने, बकाया ऐरियर भुगतान कराये जाने, मृतक आश्रित प्रकरणो का निस्तारण कराने आदि की मांग किया।कार्यवाहक जिला पंचायत राज अधिकारी राजेश कुमार ने कहा कि 1 जून तक बिन्दुवार समस्याओं का निस्तारण करा दिया जायेगा। शासन स्तर से होने वाले समाधान के लिये पत्र लिखा जायेगा।

बिना कार्य किए ही करोड़ों डकार गए सचिव संग प्रधान

●विलोहा बन कसिया के ग्रामीणों नें खोला मोर्चा

डी. एम से जाँच की लगाई गोहार

स्वतंत्र प्रभात

बलरामपुर। पीएम सीएम का विकसित भारत का सपना। प्रदेश सरकार का गांवों का संतृप्त विकास का अभियान।यह कितना चढ़ा भ्रष्टाचारका परवान। प्रमाण इसका जीवंत गवाह है बनकसिहा बिलोहा ग्राम। सरकार की यह स्वप्निल विकास योजनाएं विकासखंड केसरी की ग्राम सभा बन कसिहा बिलोहा में भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गई। कागजों पर तो इस विकास के लिए हुए करोड़ों खर्च। लेकिन भौतिक स्थल पर गांव सभा का विकास जस का तस है। गांव में अलादीन चिराग तले भी खोजने में विकास कार्य नहीं दिखाई पड़ेंगे जैसा कि ग्रामीणों का खुला आरोप है। ज्ञातव्य हो कि जहां केंद्र तथा प्रदेश सरकार ने विकसित भारत को पूर्ण परवान चढ़ाने तथा असेवित जिले के कलंक को धोने के लिए सरकारी खजाने का मुंह खोल रखा है। वहीं वन कसिहा बिलोहा में ग्राम प्रधान और सेक्रेटरी ने गांव सभा विकास के लिए कागजी बाजीगरी कर करोड़ों की सरकारी धन का बंदर बाँट करके शासन के मंशा को भ्रष्टाचार पर बलि चढ़ा दिया है। कागजो पर तो इस ग्राम सभा में नाना प्रकार की विकास का संतृप्त श्रृंगार कर रहे हैं। परंतु 4 वर्षो के मध्य बनकसिहा विलोहा गांव सभा में एक पक्की नाली तथा बिलोहा से मस्जिद से उत्तम प्रजापति के घर तक आर सी सी का ही निर्माण कार्य हुआ है। गांव में जहां नालियों की महती जरूरत है उसे नहीं बनवाया गया। वर्षा काल में नालियों के अभाव में जल

भराव रहता है। ग्राम सभा में महज दो गांव में 2000 आबादी से ज्यादा आवाद है। इन दोनों गांव में आवश्यकता के अनुसार आरसीसी रोडों का अकाल है। प्रधान और सचिव विकास के यमराज बन गए हैं। गाँव विकास के लिए आने वाले सरकारी धन को विकास में खर्च करने के अपेछा बंदर बाँट कर कर लेते हैं। जिससे चार सालों से गाँव वासी विकास के लिए तरस रहें हैं। ग्राम वाशियों में इस बात को लेकर आक्रोश सातवें आसमान पर है। ग्रामीणों की सीधे सीधे

मांग है कि गांव सभा में जो विकास के लिए सरकारी पैसे खर्च किए जा रहे हैं या किए गए हैं उसकी उच्च स्तरीय जांच हों और विकास के नाम पर डकारे गए सरकारी धन की वसूली के साथ दोषियों के विरुद्ध एफ. आई. आर. दर्ज हो।

नाली निर्माण में अजब गजब खेल

मेरी पंचायत निधि से बना बन कसीहा गांव में आम जनो के पानी निकास के लिए एक महज नाली का निर्माण कराया गया। जिस पर वास्तविक लागत से कई गुना अधिक सरकारी धन को भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ाई गई। प्रधान पति द्वारा अपने चहेतों और खासम खास लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए नाली निर्माण कार्य में मजदूरी दर्शाकर उन्हें अनुचित लाभ पहुंचा कर सरकारी खजाने का दुरुपयोग किया। नाली निर्माण में ऐसे उन मजदूरों को मजदूरी राशि दिया गया जिन्होंने एक दिन भी नाली निर्माण में कार्य नहीं किया। सजग ग्रामीणों द्वारा जो निकासी धनराशि आंकड़े प्रस्तुत किए गए वह चौंकाने वाले हैं। चार माह में कई लाखों का खेल ग्राम प्रधान और सेक्रेटरी तथा संबंधित जूनियर इंजीनियर के द्वारा खेला गया। जो सरकार के विकसित भारत और संतृप्त विकास के मंशा को पलीता लगा रहे हैं। नाली निर्माण में मजदूरी के रूप में भुवनेश्वर को 7 000 संजय उर्फ भारत को 7000 अनिल कुमार को 7000 रेखा को 3318 राजेश को 3318 सत्यनारायण जो गौशाला में केयरटेकर है को 3318 रामनरेश भो गौशाला टेकर है उसको भी 3318 रुपया चांदनी वर्मा को 3318 रुपए का मजदूरी करने के लिए उनके खाते में भुगतान किया गया। ग्रामीणों के अनुसार यह ऐसे मजदूर कागजो में दिखाए गए हैं जिन्होंने नाली निर्माण कार्य में एक दिन भी काम नहीं किया है। लेकिन यह प्रधान और सेक्रेटरी के चहेते हैं के खाते में पैसा डालकर बाद में कर गई है। मनमानी की हद तो तब हो गई जब सेक्रेटरी शक्ति बेस मौर्य ने अपने अटॉर्नी पंकज पाल को जो दूसरे ग्राम नचौरा का निवासी है को अनधिकृत रूप से तीन महीने माह 18 दिन पूर्व 4977 तथा एक वर्ष एक माह पूर्व एक ?7000 का विलोहा में मजदूरी करने के मद में भुगतान उसके पंजाब नेशनल बैंकबिलोहा के खाते में भेजा गया।जबकि नियमतः दूसरे ग्राम सभा के किसी भी निवासी को दूसरे ग्राम सभा में मजदूरी करने के मद से सरकारी भुगतान नहीं किया जा सकता है। विभागीय नियम को प्रधान और सेक्रेटरी ने बालाये ताख पर रखकर अपना मनमानी कर दिखा दिया कि ना खाता ना बही प्रधान और सेक्रेटरी चाहें वही सही। उसे नाली में लगने वाले मैटिरियल चौंकाने वाले ही नहीं अपने असली दास्तान का बयाँ कर रहे हैं कि सरकारी धन का किस तरीके से कितने सीमा पार तक दुरुपयोग किया गया है।जिसका एक मिसाल मैटेरियल सप्लाई करने वाले संतोष कुमार के खाते में भेजे गए पैसे हैं। संतोष कुमार के खाते में भेजे गए सरकारी पैसे क्रमशः 65000, 103000, 23250, 83659, 130000.129, रूपों का कई किस्तों में सरकारी भुगतान मात्र तीन-चार महीना के भीतर किया गया यह जो नाली निर्माण निधि में है। अखिल ब्रिक फील्ड को अलग से तथा संबंधित जूनियर इंजीनियर सुरेंद्र कुमार वर्मा के खाते में 7229 3 महीना 17 दिन पहले उनके खाते में भेजा गया।

आज नहीं करेंगे बात बोले सेक्रेटरी और पति प्रधान

संवाददाता द्वारा सचिव शक्ति वेस मौर्य के मोबाइल नंबर 860 1531 064 पर फोन का ग्रामीणों द्वारा लगाए जा रहे आरोपों के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा आज कुछ नहीं बताऊंगा फिर कभी।जब उनसे पुनः सवाल किया गया कि दूसरे गांव सभा का निवासी मनोज पाल को दो किस्तों में उसके खाते में आपके द्वारा 11977 का भुगतान क्यों किया गया है। जबकि वह दूसरे ग्राम सभा नचौरा का निवासी है। तो सेक्रेटरी सीधे जवाब देने से कतराते हुए कहा आज कुछ नहीं बताऊंगा कहकर फोन काट दिया। वहीं वन कसिहा बिलोहा की निर्वाचित प्रधान तो गंगोत्री देवी हैं,लेकिन उनके पद का सम्पूर्ण कार्य उनके पति संतोष गुप्ता ही देखते हैं।उनके मोबाइल नंबर 9455 411 1981 पर कॉल करके ग्रामीणों के आरोपी के बारे में उनका पक्ष जानना चाहा तो यह बार-बार कहते रहे कि गरीब घर से प्रधान बने हैं। आपसे बाद में मुलाकात कर लूंगा दोनों ने मुद्दे पर बात करने से टाल गए।

20 वर्षो से अधिक एक ही ग्राम सभा में टिके हैं सचिव शक्ति वेस मौर्य

ग्रामीणों का कहना है कि सचिन शक्ति विश मोर इस ग्राम सभा में 20 वर्ष से पहले से अधिक समय से तैनात हैं जो कहीं ना कहीं उनके प्रति अधिकारियों की मेहरबानी तथा ऊपर तक पहुंच का कमाल है। सचिन गांव सभा में चर्चाओं के विषय में बने रहना उनका शगल बन चुका है। ग्राम वासियों ने सचिन पर अभद्रता और नाना प्रकार के आरोप लगाते हुए यह कहा कि यदि किसी को परिवार रजिस्टर नकल की जरूरत हो तो उसके लिए उनके मुंशी को नकल देने के नाम पर ?500 देना पड़ता है जो घूस समझे या सुविधा शुल्क। सचिव से शिकायत पर वह कहते हैं कि इतना तो देना ही पड़ेगा।

ए. डी. ओ. पंचायत से कराऊंगा जांच दोषियों को मिलेगा दंड -खंड विकास अधिकारी

मामला मेरी संज्ञान में आया है गंभीरतम प्रकरण से जुड़ा हुआ है जो सरकारी धन के अपने से सीधा जुड़ा है में ऑडियो पंचायत से इस प्रकरण में गहन जांच कराऊंगा मैं खुद मौके पर जाकर विकास कार्यो की समीक्षा करूंगा मौके पर हुए विकास कार्य और खर्च किए गए धन का मिलान किया जाएगा जांच में दोषी पाए जाने की स्थिति में दोस्तों को व्रत निश्चित रूप से दंडात्मक कार्रवाई तो होगी ही साथ ही सरकारी धन के अपने की संचित वसूली के लिए संबंधित अधिकारी और शासन को लिखा जाएगा यह बात खंड विकास अधिकारी गैसड़ी और अवनीन्द्र कुमार पांडेय द्वारा फोनिक वार्ता में संबाद दाता के सवाल पर कही गई।

जन-जन की पुकार डीएम साहब! एक बार हीआइए मेरे गांव!

बनकसिहा ग्रामीणों की जिलाधिकारी ही उनके आशा की एक किरण है। जिलाधिकारी के अपने गांव में आगमन के लिए बेताब है। ग्राम वासी प्रमोद कुमार वर्मा, बुधराम यादव,केशव राम, राम उजागर वर्मा, मालिक राम वर्मा, ननके वर्मा, मोहम्मद इश हाक, मुस्तकीम, मोहम्मद फारूक, सलाहुद्दीन, असगर अली, राम मनोरथ मौर्य, प्रेम प्रकाश वर्मा, राम मिलन यादव,प्रभु राम, राधे श्याम, राम छबीले जायसवाल, राम अवतार, विजय कुमार वर्मा, प्रमोद वर्मा, अब्दुल कुद्दूश सहित तमाम ग्राम वासियों का पुकार और पूरा भरोसा है कि एक बार डीएम साहब मेरे गांव आ जाए तो निसंदेह मेरे गांव का कायाकल्प हो जाएगा।हम ग्रामवासी डीएम साहब को न्योता देकर गुहार लगा रहे हैं कि एक बार साहब मेरे गांव आ जाएं।ग्राम वासियों ने भावनात्मक अपील करते हुए कहा कि हम ग्राम वासी डीएम साहब का शबरी की तरह आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

संक्षिप्त खबरें

लखनऊ में अपराधियों की खैर नहीं- लूट के मामलों में लिप्त पाँच शातिर बदमाश दबोचे गए

मोहनलालगंज। लखनऊ, राजधानी में अपराध की काली दुनिया में दहशत फैलाने वाले पाँच दुर्दांत अपराधी आखिरकार पुलिस के शिकंजे में आ ही गए। नगराम थाना क्षेत्र में सक्रिय ये अपराधी एक बड़ी वारदात की साजिश रचने की फिराक में थे, लेकिन सतर्क पुलिस ने समय रहते इन्हें धर दबोचा। ये सभी पहले भी लूट, मारपीट और अवैध हथियारों के मामलों में जेल की हवा खा चुके हैं।

नगराम पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली कि कुछ पुराने अपराधी इलाके में इकट्ठा होकर किसी संगीन वारदात की योजना बना रहे हैं। थाना प्रभारी की अगुवाई में एक टीम तत्काल मौके पर पहुंची और चारों ओर से घेराबंदी कर इन बदमाशों को रंगे हाथों पकड़ लिया।1. अंकुश वर्मा पुत्र राजकुमार - इस पर लूट, चोरी और आर्म्स एक्ट के तहत चार से अधिक मामले थाना नगराम, लोकबंधु और मोहनलालगंज में दर्ज हैं।2. अवधेश पुत्र श्रीराम - धारा 394/411 के तहत नगराम थाने में लूट का मामला दर्ज है।3. अमर पुत्र रामसूख - गंभीर धाराओं में कई मुकदमे दर्ज।4. अर्जुन पुत्र फकीरी - लूट और अवैध हथियार रखने का आरोपी।5. अशोक कुमार पुत्र राजाराम - कई मामलों में संलिप्तता।

कर्मठ पुलिस टीम ने निभाई बड़ी भूमिका-

इस अभियान में उपनिरीक्षक संजय सिंह, रजनेश सिंह, रंजीत कुमार, महिला कांस्टेबल अंशुमान देवी, हेड कांस्टेबल नाज मोहम्मद और कांस्टेबल संजय चौहान की सक्रियता और साहसिक भूमिका सराहनीय रही।

शतचंडी महायज्ञ,श्रीमद् भागवत कथा का समापन पूर्णाहूति कन्या भोज व विशाल भंडारे के साथ हुआ।

मुख्य यजमान अमित शुक्ला ने इस धार्मिक आयोजन में आने वाले सभी भक्तों का हृदय से आभार जताते हुए प्रभु से आशीर्वाद की कामना की।

बेनीगंज/हरदोई- श्री शतचंडी महायज्ञ एवं विराट संत सम्मेलन श्रीमद् भागवत कथा का समापन रविवार को पूर्णाहूति कन्या भोज व विशाल भंडारे के पश्चात हुआ। बता दें विगत वर्ष की बात इस वर्ष भी ग्राम झरोईया के श्री राधा कृष्ण मंदिर परिसर पर श्री शतचंडी महायज्ञ एवं विराट संत सम्मेलन श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन मुख्य यजमान अमित शुक्ला उर्फ गुड्डु की देखरेख में किया गया। धार्मिक आयोजन की शुरुआत 28 अप्रैल सोमवार को कलश यात्रा,वेदी रचना के साथ शुरू हुई थी। जिसका समापन आज 4 मई रविवार पूर्णाहूति कन्या भोज व विशाल भंडारे के पश्चात हुआ। 7 दिनों तक चलने वाले इस धार्मिक आयोजन श्रीमद् भागवत कथा का रसपान कथा व्यास पंडित रामकिंकर शुक्ला के मुखारविंद से सुंदर कथा का रसपान कर भक्त खूब शराबोर हुए। शतचंडी महायज्ञ में आचार्य द्वारा वेद मंत्र उच्चरणों के साथ बनाए गए हवन कुंड में भक्तों ने आहुति डाली। मुख्य यजमान अमित शुक्ला ने इस धार्मिक आयोजन में आने वाले सभी भक्तों का हृदय से आभार जताया। प्रभु से सभी भक्तों के लिए आशीर्वाद की कामना की।

भारत में निर्मित वस्तुओं से ही देश आत्मनिर्भर बनेगा- किशोरी लाल

हरदोई स्वदेशी जागरण मंच की ओर से स्वावलंबी भारत अभियान को लेकर संवाद का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली से आए स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संगठक कश्मीरी लाल ने संगठन के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारत में निर्मित वस्तुओं से ही देश आत्मनिर्भर बनेगा। उन्होंने कहा कि युवाओं को स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने की जरूरत है। भारत के आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक क्षेत्र के 15 संगठन मिलकर रोजगार, स्वरोजगार और आर्थिक स्वालंबन की दिशा में काम कर रहे हैं। हरदोई जनपद के आवास विकास कालोनी स्थित जे के पब्लिक स्कूल में आयोजित इस कार्यक्रम में स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संगठक कश्मीरी लाल ने कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। स्वदेशी जागरण मंच के अखिल भारतीय संगठक कश्मीरी लाल ने कहा कि सिर्फ फैक्ट्री या दुकान शुरू करना निर्माण कार्य नहीं है।

अपने हुनर का इस्तेमाल करके भी स्वरोजगार किया जा सकता है। स्वदेशी जागरण मंच के अवध प्रांत के प्रांत समन्वयक हर्षवर्धन ने लोगों को स्वदेशी का महत्व बताते हुए निरंतर कार्य करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम का संचालन अवनीश द्विवेदी, आभार प्रदर्शन स्वदेशी जागरण मंच के हर्षवर्धन ने किया। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से उधोग व्यापार मंडल के जिला अध्यक्ष विमलेश दीक्षित, पवन जैन, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जिला कार्यवाह संजीव खरे ,पूर्व विधायक गंगा सिंह चौहान, अमित, अनिल लाहौरी, प्रेम शंकर गुप्ता, सोनपाल वर्मा , पवन रस्तोगी, राहुल, सोमपाल वर्मा, अशोक गुप्ता, भरत पांडे आदि लोग उपस्थित रहे।

खुजौली की कीमती सरकारी जमीन पर हुआ अवैध कब्जा

● ...ईद की छुट्टी में रातों-रात खड़ा कर दिया था पक्का मकान....

तहसील प्रशासन की चुप्पी पर ग्रामीणों में आक्रोश, पंचायत सदस्य लीलावती ने लगाई गुहार......

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज। लखनऊ, मोहनलालगंज तहसील क्षेत्र खुजौली कस्बे में स्थित गाटा संख्या 1350, जो राजस्व अभिलेखों में बंजर के रूप में दर्ज सरकारी भूमि है, पर अवैध कब्जे और निर्माण का सनसनीखेज मामला सामने आया है। ग्रामीणों के अनुसार, उक्त भूमि पर रेनू पत्नी पुत्तीलाल निवासी रामपुर हलोर वर्तमान पता खुजौली द्वारा बिना किसी वैध परमिशन या सरकारी पट्टे के रातों-रात पक्का मकान खड़ा कर दिया गया।

बताया जा रहा है कि यह कार्रवाई ईद की छुट्टी के दौरान की गई, जब सरकारी दफ्तर बंद थे। इस जमीन की अनुमानित बाजार कीमत बीस से पच्चीस लाख रुपये के बीच बताई जा रही है।पंचायत सदस्य ने जताई आपत्ति, अधिकारियों को दी जानकारी ग्राम पंचायत खुजौली की निर्वाचित सदस्य लीलावती पत्नी हंसराज ने इस अवैध कब्जे के खिलाफ उपजिलाधिकारी मोहनलालगंज को एक लिखित प्रार्थना पत्र सौंपा है। पत्र में उन्होंने उल्लेख किया है कि यह भूमि न्यायालयीय विवाद में है। और हाईकोर्ट लखनऊ में वाद लंबित है। इसके बावजूद शासन व न्यायालय के निर्देशों की अवहेलना करते हुए निर्माण कार्य कराया जा रहा है।लीलावती के अनुसार, उक्त भूमि पर यूपी शासन के आदेश संख्या 67/0300/0180/2006 के तहत निर्माण पूर्णतः वर्जित है। इसके बावजूद संबंधित

लेखपाल, पुलिस चौकी व तहसील प्रशासन ने शिकायतों के बावजूद कोई कार्रवाई नहीं की। जबकि जनसुनवाई पोर्टल पर भी की कई शिकायतें लीलावती ने जनसुनवाई पोर्टल पर इस संबंध में चार शिकायतें दर्ज की हैं, जिनकी आईजीआर संख्याएं हैं।40015724076904/40015725025650/40015725025654/40015724091579/इन शिकायतों के बावजूद अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। ग्रामीणों का आरोप है कि तहसील प्रशासन ने जिलाधिकारी कार्यालय को भी गुमराह करते हुए गलत रिपोर्ट भेजी है कि कोई कब्जा नहीं हो रहा है।

जिलाधिकारी से निष्पक्ष जांच की मांग......

खुजौली ग्राम पंचायत की सदस्य लीलावती और स्थानीय ग्रामीणों ने जिलाधिकारी लखनऊ से मांग की है कि मामले की उच्चस्तरीय जांच कराकर कब्जाधारियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए तथा सरकारी भूमि को कब्जामुक्त कराया जाए।

"मानसिक तनाव प्रबंधन एवं चिकित्सकीय सहयोग" विषय पर सेमिनार का सफल आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

लखनऊ। विश्व आयुर्वेद परिषद एवं भारत आयोग फाउंडेशन के तकनीकी सहयोग से लखनऊ स्थित भूमि सिटी अस्पताल में रविवार, 4 मई 2025 को "मानसिक तनाव प्रबंधन एवं चिकित्सकीय सहयोग" विषय पर एक विशेष सेमिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सेमिनार का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्री अरुण कुमार गुप्ता 'शक्तिपुत्र', आर.आर. इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल कॉलेज के निदेशक, एवं विशेष अतिथि पूनम आरती सिंह, एच.ओ.डी. डिपार्टमेंट ऑफ फार्मेसी रीजेंसी कॉलेज, डॉ. उमा रस्तोगी, प्रख्यात हॉस्पिटल की मेडिकल डायरेक्टर एवं सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में उपस्थित रहीं।कार्यक्रम के मुख्य संयोजक डॉ. सत्यप्रकाश मिश्रा, डॉ. गिरीश शर्मा, डॉ. पंकज गुप्ता, डॉ. संदीप मिश्रा, डॉ. रमेश सुलभ, डॉ. धर्मेंद्र सिंह एवं डॉ. स्वप्निल को उनके चिकित्सकीय-शिक्षण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया।इस अवसर पर राष्ट्रीय स्तर पर चिकित्सकों का प्रेरणास्रोत अनुभव डॉ. सत्यप्रकाश मिश्रा को भी विशेष रूप से सम्मानित किया गया।कार्यक्रम में वक्ताओं ने मानसिक तनाव की जटिलताओं, उसके दुष्प्रभाव एवं चिकित्सा पद्धतियों द्वारा समाधान पर विस्तार से प्रकाश डाला। आयोजन में प्रमुख योगदान डॉ. अरुण कुमार सिंह (सीनियर वैज्ञानिक) एवं डॉ. अरुण कुमार (पूर्व हेड हार्ट डिपार्टमेंट) की उल्लेखनीय भूमिका रही।कार्यक्रम का समापन सामूहिक फोटो सत्र एवं धन्यवाद ज्ञापन के साथ किया गया।

संगठन ही कांग्रेस पार्टी की ताकत है- शिशिर

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर शहर कांग्रेस कमेटी की संगठनात्मक बैठक स्थानीय घंटाघर शहर कांग्रेस कार्यालय पर की गई जिसमें जननायक राहुल गांधी जी के सामाजिक न्याय, पदाधिकारी के चयन, आदि पर चर्चा की गई बैठक को संबोधित करते हुए शहर अध्यक्ष शिशिर वाजपेई ने कहा कि कांग्रेस का एजेंडा समाज में फिरकापरस्त ताकतों के खिलाफ विपक्ष की आवाज बनने का है श्री वाजपेई ने कहा की आगे सभी कांग्रेसियों को टीम वर्क में एक साथ एकजुट होकर काम करना है एवं अगले चरण में वार्ड कमेटियों एवं वार्ड अध्यक्षों के साथ शहर पदाधिकारी की भी नियुक्ति सभी कार्यकर्ताओं, नेताओं के सहयोग एवं समर्थन से की जाएगी श्री वाजपेई ने आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि मोदी सरकार इस देश में धर्म के नाम पर लोगों को बांटने का प्रयास कर रही है आज महंगाई बेरोजगारी सबसे बड़ा मुद्दा है और देश में विपक्ष के एकमात्र नेता राहुल गांधी जी है कार्यक्रम में प्रमुख रूप से जिला अध्यक्ष डा0ममता वर्मा, पूर्व विधायक हरीश बाजपेई, पूर्व जिला अध्यक्ष उत्कर्ष अवस्थी, रमेश निषाद, विनीत दीक्षित, संजीत नाथ गुप्ता, आमोद मिश्रा, धीरेश कश्यप, राजकिशोर सिंह, मसरूर खान, रमेश चंद्र गौड, कयूम अंसारी, गुफरान खान डॉ मसरूर अली, प्रेमलता शुक्ला, शोभित अवस्थी, अमरकांत, मुनेंद्र गौतम, नरेंद्र वर्मा,श्याम सुंदर शुक्ला, गुरु शरण द्विवेदी, दीपा वैश्य, अभय कुमार मिश्रा, मोहम्मद अहमद अंसारी, रिजवान खान, संजीव दीक्षित, ओम प्रकाश मिश्रा, मोहम्मद इजाजुल हसन, शिवम गुप्ता, श्रेष्ठ तिवारी मुनेंद्र अवस्थी, खुशनुमा, शत्रुघ्न लाल, दयाराम, इंद्रपाल, राम लखन, गंगाराम, रविंद्र राठौर, नागराज कश्यप, तुफैल अंसारी, आशा कनौजिया, संजय कुमार सनी, इमरान अली, रिजवान खान,मथुरा प्रसाद यादव, आदि उपस्थित रहे।

रिटायर्ड चीफ जस्टिस के फार्महाउस में तैनात चौकीदार ने शराब के लिए पैसे न मिलने पर की आत्महत्या....

स्वतंत्र प्रभात

मोहनलालगंज। लखनऊ, निगोहां थाना क्षेत्र के शेरपुर लवल गांव में शनिवार को एक हृदयविदारक घटना सामने आई, जिसने पूरे गांव को शोक में डुबो दिया। गांव के बाहरी हिस्से में स्थित हाईकोर्ट के रिटायर्ड चीफ जस्टिस के फार्महाउस में तैनात चौकीदार सुशील कुमार सिंह (45) ने शराब के लिए पैसे न मिलने पर अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतक की पहचान सुशील कुमार सिंह, पुत्र स्वर्गीय जगत प्रताप सिंह के रूप में हुई है। वे फार्महाउस परिसर में ही अपनी पत्नी शालू सिंह (40), बेटे शिवा सिंह (17) और बेटी वैष्णवी सिंह (15) के साथ निवास कर रहे थे।परिवारजनों के अनुसार, सुशील कुमार बीते कई वर्षों से शराब के आदी थे और अक्सर नशे की हालत में रहते थे। पिछले दो दिनों से वे शराब के लिए पैसे मांगते हुए परिवार से झगड़ा कर रहे थे। शनिवार को भी इसी बात को लेकर घर में विवाद हुआ। जब पत्नी ने पैसे देने से इनकार कर दिया, तो गुस्से में आकर उन्होंने अपने कमरे में खुद को बंद कर लिया।कुछ देर बाद जब वे बाहर नहीं निकले तो बेटे शिवा को संदेह हुआ। पिता को कई बार आवाज देने के बावजूद जब कोई उत्तर नहीं मिला, तो शिवा ने दरवाजा तोड़ा। अंदर का दृश्य देख शिवा के होश उड़ गए– सुशील फांसी के फंदे से लटके हुए थे। आनन-फानन में परिवार उन्हें सीएचसी मोहनलालगंज लेकर गया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया।इस घटना से गांव में शोक की लहर दौड़ गई। ग्रामीणों ने बताया कि सुशील एक शांत स्वभाव के मेहनती व्यक्ति थे और कभी किसी से किसी प्रकार का विवाद नहीं रहा। उनका इस तरह से जाना सभी के लिए अत्यंत दुखद है।सूचना मिलते ही निगोहां थाना प्रभारी अनुज तिवारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। घटनास्थल से कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ है।

थाना प्रभारी अनुज तिवारी ने बताया कि प्रथम दृष्टया मामला आत्महत्या का प्रतीत हो रहा है। वहीं, एसीपी मोहनलालगंज रजनीश वर्मा ने बताया कि पूरे मामले की जांच की जा रही है और पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

परिवार पर टूटा दुखों का पहाड़........

मृतक के असामयिक निधन से परिवार पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। पत्नी और दोनों बच्चे गहरे सदमे में हैं। घर का एकमात्र कमाऊ सदस्य होने के कारण अब परिवार की आर्थिक स्थिति भी चिंता का विषय बन गई है।

राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन अंतर्गत कृषि सखियों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

● कृषि सखियां किसानों को अब सिखाएगीं प्राकृतिक खेती की विधियां

राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंध संस्थान, हैदराबाद एवं कृषि विभाग सीतापुर के सहयोग से कटिया में कृषि सखियों का प्रशिक्षण आयोजित

वैज्ञानिको से कृषि सखियों नें सीखी खेती की बारीकियां

किसानों को अब मिलेगा कृषि सखियों का साथ, प्रकृति की भी होगी सुरक्षा

स्वतंत्र प्रभात

सीतापुर। कृषि विज्ञान केंद्र-II, कटिया, सीतापुर में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन अंतर्गत विकास खंड महमूदाबाद एवं बिसवां की चयनित कृषि सखियों हेतु आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन सम्पन्न हुआ। प्रशिक्षण के समापन सत्र में केन्द्र के अध्यक्ष व वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ दया शंकर श्रीवास्तव ने प्रतिभागियों को कृषि सखियों की प्राकृतिक खेती के प्रशिक्षण पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महिलाओं को गौ-आधारित प्राकृतिक खेती के वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक पहलुओं से सशक्त करना है। प्रशिक्षण का उद्देश्य लघु और सीमांत कृषको तक प्राकृतिक खेती की विधा को अधिक से अधिक पहुचाने और अनुपालन में योगदान करना है।

प्रशिक्षण प्रभारी एवं मृदा वैज्ञानिक श्री सचिन प्रताप तोमर ने बताया कि पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभागियों को प्राकृतिक खेती मिशन योजना, बीजामृत, जीवामृत, धनजीबमृत व प्राकृतिक खेती में कीटों एवं बीमारियों से फसल को बचाने के लिए दसपर्णी अर्क, नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र आदि को बनाने की विधियों के अतिरिक्त फसल अवशेष प्रबंधन, मिट्टी परीक्षण की विधि, पोषण वाटिका, भंडारण तकनीक पर भी विस्तार से जानकारी दी गई। सहायक विकास अधिकारी श्री रविन्द्र कुमार के प्राकृतिक खेती की अवधारणा को विस्तार से समझाते हुए बताया कि यह प्रणाली स्थानीय संसाधनों पर आधारित, कम लागत वाली, रासायनिक मुक्त खेती को बढ़ावा देती है। इसका उद्देश्य मिट्टी का स्वास्थ्य सुधारना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना तथा किसानों की आय में वृद्धि करना है। प्रशिक्षण कार्यक्रम केन्द्र के पशुपालन वैज्ञानिक डॉ. आनंद सिंह ने देसी गाय के गोबर और गोमूत्र आधारित कृषि इनपुट जैसे बीजामृत, जीवनामृत, घनजीवामृत, दशपर्णी अर्क, नीमास्त्र आदि की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक खेती में गाय एक केंद्रीय भूमिका निभाती है, जो न केवल इनपुट का स्रोत है, बल्कि खेती को रासायनमुक्त और टिकाऊ बनाने में सहायक है।

केन्द्र के प्रसार वैज्ञानिक श्री शैलेन्द्र कुमार सिंह ने प्रतिभागियों को राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन की नीति, उद्देश्यों एवं क्रियान्वयन प्रक्रिया की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मिशन का मुख्य फोकस फार्म पर निर्मित जैविक इनपुट के उपयोग को बढ़ावा देना, बाहरी खरीद पर निर्भरता कम करना तथा सतत कृषि प्रणाली को अपनाना है। केन्द्र की गृह विज्ञान विशेषज्ञ डा. रीमा ने प्राकृतिक खेती में मिलेट्स (मोटे अनाज) की वैज्ञानिक खेती, उत्पादन तकनीक, कीट एवं रोग प्रबंधन, जल संरक्षण तथा पोषण सुरक्षा पर विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि मिलेट्स न केवल पोषक तत्वों से भरपूर हैं बल्कि जलवायु परिवर्तन के अनुकूल फसलें भी हैं, जो सतत कृषि विकास का आधार बन सकती हैं।

प्राकृतिक खेती के मास्टर ट्रेनर एवं कमुआ निवासी प्रगतिशील कृषक श्री अशोक कुमार गुप्ता ने प्रशिक्षण के दौरान बताया कि किस तरह प्राकृतिक खेती द्वारा किसान भाई खेती की लागत के साथ गुणवत्तायुक्त अनाज, सब्जियां ले सकते हैं। बिसवां निवासी श्रीमती शीतल त्रिवेदी ने कृषि सखियों को केंचुआ खाद उत्पादन करने की तकनीकी पर विस्तार से जानकारी दी तथा बताया कि किस प्रकार महिलाएं खेती के साथ केचुआ खाद बिक्री करके अतिरिक्त आय सृजन कर सकती हैं। केंद्र ने प्रक्षेत्र प्रबंधक डॉ योगेंद्र प्रताप सिंह ने सभी प्रतिभागियों को धन्यवाद देते हुए बताया कि प्राकृतिक खेती की सभी ने नई तकनीकों को सीखने में गहरी रुचि दिखाई और उम्मीद जताई कि यह प्रशिक्षण उनके समुदाय में प्राकृतिक खेती के प्रसार में उपयोगी सिद्ध होगा। कार्यक्रम में सहभागिता कर रही कृषि सखियों ने भी अपनी प्रतिक्रियाएं साझा की तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम में सफलतापूर्वक प्रतिभाग कर रही सभी 29 कृषि सखियों को प्रणाम पत्र वितरित किए गए।

टाटा कैंटर से 120 पेटी शराब पकडी

मथुरा। आबकारी टीम के साथ मिल कर थाना छाता पुलिस ने दो लोगों को शराब तस्करी के आरोप में गिरफ्तार किया है। 120 पेटी अंग्रेजी शराब हरियाणा मार्का एवं तस्करी में प्रयुक्त वाहन को पुलिस ने कब्जे में लिया है। एनएच 19 पर चौकिंग के दौरान आबकारी विभाग और पुलिस की संयुक्त टीम को यह सफलता मिली। संयुक्त कार्यवाही में मुखबिर की सूचना के आधार पर रविवाा को करीब करीब साढे आठ बजे कस्बा चौकी के आगे मन्दिर के सामने एनएच 19 से अजय कुमार पुत्र सन्तुराम निवासी कुदरिया मांगो थाना पारों जिला मुजफ्फरपुर बिहार व अजय कुमार पुत्र लागनराम निवासी कटारू फतेपुर थाना बेलसाड जिला वैशाली राज्य बिहार को पुलिस ने पकडा। पुलिस ने 110 पेटी रॉयल स्टेज (750एमएल) व 10 पेटी ब्लैंडर प्राइड (750 एमएल) अंग्रेजी शराब हरियाणा मार्का (कुल 120 पेटी) को बरामद किया। शराब की पेटियों को टाटा आईसर कैन्टर बीआर 06 जीवी 5116 में छुपाकर ले जाया जा रहा था। इस संबंध मेंआबकारी अधिनियम में थाना छाता पर अभियोग पंजीकृत कर अग्रिम विधिक कार्यवाही की गयी है। कार्यवाही करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक विनोद बाबू मिश्रा थाना छाता, निरीक्षक अपराध अमित चौहान थाना छाता, आबकारी निरीक्षक अंजली शर्मा मय टीम मथुरा। एसआई चन्द्रवीर सिंह थाना छाता, एसआई हुकम सिंह थाना छात आदि पुलिसकर्मी थी।

एहराज हुसैन हायर सेकेंडरी स्कूल में मेधावी छात्र/छात्राओं को किया गया सम्मानित

स्वतंत्र प्रभात

लहरपुर सीतापुर लहरपुर नगर के एहराज हुसैन हायर सेकेंडरी स्कूल में आयोजित हुआ मेधावी छात्र सम्मान समारोह। नगर के मोहल्ला इंदिरानगर स्थित एहराज हुसैन हायर सेकेंडरी स्कूल में हाई स्कूल की परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने वाले छात्राओं को शील्ड मेटल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। हाई स्कूल की बोर्ड परीक्षा 2024-25 में सम्मिलित हुए छात्र छात्राओं में से 26 बच्चों को शील्ड मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया । बोर्ड परीक्षा में विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा नरगिस बानो, द्वितीय स्थान हुमैरा खातून, तृतीय स्थान किस्मतुन निशा ने प्राप्त किया वही बालक वर्ग में प्रथम मो0 फैज, द्वितीय मो0 फैजान, व तृतीय स्थान मो0 जुबैर ने प्राप्त किया। इस दौरान संस्था प्रबंधक आफाक हुसैन ने बच्चों को बधाई देते हुए कहा कि जीवन में सफल होने के लिए, आपको लक्ष्य निर्धारित करने और उसके प्रति दृढ़ संकल्प के साथ काम करने की आवश्यकता है।

सफलता के लिए अपने समय का प्रबंधन करना जरूरी है इसलिए यदि आप जीवन में सफल होना चाहते हैं तो समय प्रबंधन कौशल सीखें। आप सतत प्रयास करते रहें तो सफलता अवश्य मिलती है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए हाशिम अंसारी ने कहा कि छात्र- छात्राओं को पूरी लगन से अध्ययन कर निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करके देश सेवा के लिए तत्पर रहने की हिदायत दी। उन्होंने सभी छात्र-छात्राओं को आत्मविश्वास और दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ पढ़ाई करने का संदेश दिया। इस मौके पर मेधावी छात्र छात्राओं के अभिभावक समेत अध्यापक उपस्थित रहे।

पति ने तीन तलाक देकर पत्नी को घर से भगाया

● पत्नी ने पति सहित आठ के विरुद्ध लिखाई दहेज उत्पीड़न की रिपोर्ट

स्वतंत्र प्रभात

शाहाबाद हरदोई। कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला गिलजई निवासी विवाहिता ने पति द्वारा परिजनों के कहने पर उसे तीन तलाक देकर घर से भगा देने पर कोतवाली में पति सहित आठ लोगों के विरुद्ध दहेज उत्पीड़न सहित अन्य धाराओं में रिपोर्ट दर्ज करवाई है।पुलिस ने तहरीर के आधार पर रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की है। पीड़िता समीना पत्नी इरफान के अनुसार उसका विवाह 14 मार्च 2020 को कोतवाली क्षेत्र के मोहल्ला गिलजई निवासी अफसर के पुत्र इरफान के साथ मुस्लिम रीति रिवाज के अनुसार हुआ था।उसके मां बाप ने हैसियत के मुताबिक दहेज भी दिया था।लेकिन अतिरिक्त दहेज में चार पहिया गाड़ी की मांग को लेकर उसका पति,जेठ रिजवान उर्फ बब्बू,जेठानी निगहत,देवर इमरान, फुरकान,सलमान,ननद रूबी पत्नी वसीम और सास अकीला उसे आए दिन प्रताड़ित करने लगे।वह सब सहन करती रही।उसने एक पुत्री को जन्म दिया।उसके बाद विपक्षियों ने और ज्यादा परेशान करना शुरू कर दिया।दो वर्ष बाद उसके घर दूसरी पुत्री का जन्म हुआ।दूसरी पुत्री के जन्म के बाद पुत्र न पैदा होने पर आरोपियों ने ताने और मारपीट करते हुए चार पहिया गाड़ी और पांच लाख रुपए की मांग करते हुए एक वर्ष पूर्व उसे पुत्रियों सहित घर से निकाल दिया।वह अपने मायके से दो लाख रुपए लेकर वापस ससुराल आई।लेकिन अतिरिक्त दहेज की मांग को लेकर उसके साथ मारपीट बंद नहीं हुई।2 फरवरी को विपक्षियों ने उसे मारपीट कर पुत्रियों सहित फिर घर से निकाल दिया।3 फरवरी को उसने कोतवाली में प्रार्थना पत्र दिया।4 फरवरी को मध्यस्थता केंद्र हरदोई में उसके प्रार्थना पत्र पर दोनो पक्षों का सुलह समझौता करवाया गया।वह 25 अप्रैल को बच्चों सहित मायके से ससुराल आई तो विपक्षी पति ने अपने घरवालों के कहने पर उसकी दोनों पुत्रियों को उससे छीन कर उसे तीन तलाक देकर घर से भगा दिया।विवाहिता की लिखित तहरीर के आधार पर कोतवाली पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

सखी चयन के लिए 17 मई तक करे आवेदनः-उपायुक्त

हरदोई उपायुक्त स्वतः रोजगार रवी प्रकाश सिंह ने बताया है कि बताया है कि उ0प्र0 राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में संचालित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं मे से गैर कृषि उद्यम की स्थापना एवं विकसित करने के लिए सूक्ष्म उद्यम सखी के चयन एवं नियुक्ति के लिये आवेदन 17 मई 2025 तक कर सकते है। आवेदन सम्बन्धित विकास खण्ड के बी0एम0एम0यू0 कार्यालय को उपलब्ध कराया जायेगा। आवेदक को पंच सूत्र पालन करने वाले समूह सदस्य हो, समुदाय से संवाद करने में सक्षम हो, आवेदक की उम्र 18 से 45 के बीच हो, आवेदक कम से कम 12 उत्तीर्ण हो, सामान्य अंकगणित का ज्ञान हो, आवेदक के पास एंड्राइड फोन हो एवं उसके संचालन का ज्ञान हो, जनपद एवं जनपद के बाहर कार्य करने एवं प्रशिक्षण में जाने का इच्छुक हो तथा जाति, लिंग, क्षेत्र, धर्म पर आधारित भेद-भाव से अनिवार्यतः दूर होना चाहिए। चयनोपरान्त इनको 4 वर्ष तक निर्धारित मानदेय दिया जायेगा। अधिक जानकारी के लिये संबन्धित ब्लाक के बी0एम0एम0यू0 संकुल स्तरीय संघ एवं ग्राम संगठन से सम्पर्क किया जा सकता है।

शराब के ठेके बच्चों सहित आम जनमानस के लिए बने मुसीबत

● शिकायत के बावजूद विभागीय अधिकारी कार्रवाई करने से झाड़ रहे अपना पल्ला।

स्वतंत्र प्रभात

बेनीगंज/हरदोई– बेनीगंज कोतवाली क्षेत्र के अन्तर्गत जमुनिहा सड़क मार्ग पर बरगदिया गांव में आबादी व उच्च प्राथमिक विद्यालय के नजदीक देशी शराब का ठेका संचालित होने से यहां के अध्यापकों व स्थानीय ग्रामीणों में रोष है। यहां के स्थानीय निवासी सतीश चंद्र पुत्र नेक राम ने देसी शराब के ठेके को हटाए जाने के बाबत आईजीआरएस के माध्यम से ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराई है, जिसमें उन्होंने कहा देसी शराब का ठेका हमारे घर के ठीक पास में है, जहां रोजाना होती शाम शराबियों का जमावड़ा लग जाता है, वह शराब पीकर खाली रैपर मेरे घर के सामने डालते हैं और आपस में वाद विवाद करते हुए गाली गलौज करते हैं। जिससे मेरे बच्चों की पढ़ाई लिखाई बाधित होती है। वहीं पास में उच्च प्राथमिक विद्यालय होने से नन्हे मुन्ने बच्चों का आवागमन रहता है जिन पर गलत असर पढ़ रहा है, उक्त शराब के ठेके को कहीं और संचालित कराया जाए। उन्होंने कहा कई बार उच्च अधिकारियों को ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराई तो विभागीय अधिकारी मौके पर आकर मुझे समझाते बुझाते हैं और झूंठ बोलकर शिकायत को बंद कर देते हैं। मामले पर अब तक किसी ने कोई सुनवाई नहीं की है और ना ही शराब के ठेके को हटवाया गया है। स्थानीय लोगों के बताएं अनुसार उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक अरविंद कुमार ने भी शराब के ठेके को हटवाने के भरसक प्रयास किए पर मामला आज भी जस का तस बना हुआ है। भारतीय किसान यूनियन सावित्री गुड के जिला प्रभारी सत्येंद्र सिंह ने कुछ दिन पूर्व भी लिखित ज्ञापन दिया था जिसमें बताया था कि बरगदिया गांव सहित प्रताप नगर चौराहा संडीला रोड मार्ग के किनारे विद्यालय मंदिर के बीच शराब के ठेका

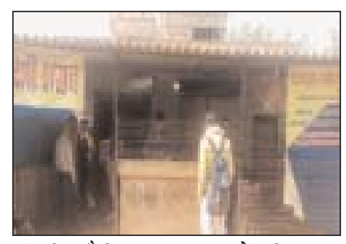

संचालित हैं जिसका असर बच्चों सहित आम जनमानस पर बड़ा पड़ता है प्रभारी ने भी ठेका हटाई जाने की मांग की थी। यहां पर यह भी बताना जरूरी है की आबकारी विभाग के अधिकारी शिकायतों को पूरी तरीके से नजर अंदाज मनमानी करते आ रहे हैं। जिससे प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं का भविष्य भी अंधेरे में गुजरा नजर रहा है। वहीं इस संबंध में आबकारी विभाग के सप्लाई इंस्पेक्टर ग्रीश ने बताया की मामले की सूचना सेल्समैन को दें दीं गई है उनको बताया गया हैद्य अब कोई भी व्यक्ति आवादी व विद्यालय के पास दारू पीकर खाली रैपर कूड़ा नहीं फेंकेगा।

गर्भवती की इलाज के दौरान हुई मौत, पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा

कोथावां - बेनीगंज कोतवाली अंतर्गत कोथावां कस्बा निवासी शिवांगी पत्नी विकाश उम्र करीब 26 वर्ष गर्भवती महिला की आज रविवार को लखनऊ के ट्रामा सेन्टर में इलाज के दौरान मौत हो गई। बेनीगंज निवासी शिवांगी देवी पुत्री नन्हक्के उम्र 24 वर्ष की सादी विकास पुत्र स्व0 यदुनाथ निवासी कोथावां में हुई थी शिवांगी 7 माह से प्रेगनेंट थी। महिला का पति घर पर रहकर मजदूरी करता था बीते एक मई को विवाहिता की तबियत खराब हुई जिस पर मृतिका शिवांगी की मां फूलमती दामाद विकास को जानकारी देकर कोथावां के सीएचसी अस्पताल ले गए हालत नाजुक देख सीएचसी चिकित्सक ने हरदोई मेडिकल कॉलेज से लखनऊ ट्रामा सेन्टर के लिए रेफर कर दिया। जहां आज रविवार को सुबह 10 बजे लखनऊ के ट्रामा सेंटर में ईलाज के दौरान गर्भवती महिला की मौत हो गई। इसकी सूचना मृतका के पिता नन्हक्के ने पुलिस को दी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। महिला के पति ने बताया कि वह इस समय अपनी पत्नी के साथ था। जिसकी मृत्यु की सूचना मैंने अपने ससुरालीजनों को समय रहते दी है। इस मामले में बेनीगंज कोतवाल कृष्ण बली सिंह ने बताया कि विवाहिता के मायके के लोगों ने कोई तहरीर नहीं दी है। तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई जांचकर की जायेगी।

परिसीमन लोकतंत्र की आत्मा और समान प्रतिनिधित्व की प्रक्रिया

भारत एक विशाल और विविधतापूर्ण देश है, जहाँ विभिन्न संस्कृतियाँ, भाषाएँ, धर्म और जातियाँ एक साथ समाहित हैं। इस विविधता के बावजूद, देश का लोकतांत्रिक ढांचा उसे एकजुट रखता है। भारतीय लोकतंत्र का मुख्य सिद्धांत यह है कि हर नागरिक को समान प्रतिनिधित्व मिले और उसकी आवाज़ संसद और विधानसभाओं में गूंजे। लोकतंत्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि हर नागरिक को समान अवसर मिले और उसकी राय और मत का समान महत्व हो। यह सुनिश्चित करने के लिए, चुनावी प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए परिसीमन की प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। परिसीमन का मुख्य उद्देश्य निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण करना है, ताकि जनसंख्या के अनुसार प्रत्येक नागरिक को समान प्रतिनिधित्व मिले। यह प्रक्रिया न केवल चुनावों को न्यायपूर्ण बनाती है, बल्कि यह लोकतंत्र की मजबूत नींव भी रखती है। भारत में परिसीमन की आवश्यकता समय-समय पर महसूस की गई है, विशेष रूप से देश की विशाल जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और प्रवास की वजह से। 1951 में भारत की जनसंख्या 36.1 करोड़ थी, जो 2021 में बढ़कर लगभग 138 करोड़ तक पहुँच चुकी है। इस वृद्धि के साथ-साथ देश में असमान विकास और जनसंख्या वितरण का सवाल भी सामने आया है। कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है, जैसे शहरी और उपनगर क्षेत्र, जबकि अन्य क्षेत्रों में जनसंख्या स्थिर रही है। इस असंतुलन का सबसे बड़ा प्रभाव चुनावी तंत्र पर पड़ता है। अगर निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं को समय-समय पर अद्यतन नहीं किया जाता, तो कुछ क्षेत्रों में अधिक मतदाताओं का प्रतिनिधित्व करना पड़ता, जबकि अन्य क्षेत्रों में कम जनसंख्या वाले प्रतिनिधि होते। इससे चुनावी प्रक्रिया में असमानता उत्पन्न होती और लोकतांत्रिक सिद्धांतों का उल्लंघन होता। परिसीमन का कार्य यह सुनिश्चित करना है कि निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएं जनसंख्या के वास्तविक वितरण के आधार पर तय की जाएं। इससे यह सुनिश्चित किया जाता है कि कोई भी निर्वाचन क्षेत्र अत्यधिक जनसंख्या वाला न हो और न ही कोई क्षेत्र उपेक्षित हो। परिसीमन की प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि हर नागरिक का वोट समान रूप से महत्वपूर्ण हो, चाहे वह किसी भी क्षेत्र, जाति या धर्म से हो। जब निर्वाचन क्षेत्र की सीमाएं जनसंख्या के अनुसार होती हैं, तो यह देश की चुनावी प्रणाली को मजबूत और निष्पक्ष बनाता है भारत में परिसीमन आयोग की स्थापना संविधान के तहत की गई है, और यह एक स्वतंत्र संवैधानिक संस्था के रूप में कार्य करता है। परिसीमन आयोग का काम निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण करना है, ताकि जनसंख्या के बदलाव के अनुसार प्रतिनिधित्व में संतुलन बना रहे। आयोग को यह अधिकार प्राप्त है कि वह जनगणना के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं का निर्धारण करे और यह सुनिश्चित करे कि कोई भी क्षेत्र उपेक्षित या अतिरिक्त प्रतिनिधित्व न प्राप्त करे। आयोग की निष्पक्षता और स्वतंत्रता यह सुनिश्चित करती है कि परिसीमन पारदर्शी तरीके से किया जाए और कोई राजनीतिक प्रभाव या पक्षपाती दृष्टिकोण इसमें न आए। भारत में परिसीमन की प्रक्रिया का इतिहास काफी पुराना है। पहली बार 1951 में भारत में परिसीमन की प्रक्रिया की गई थी, जब देश की पहली लोकसभा का गठन हुआ। इसके बाद, 1963 और 1973 में भी परिसीमन हुआ, और 2002 में एक महत्वपूर्ण परिसीमन हुआ था, जिसमें जनसंख्या के आधार पर लोकसभा और राज्य विधानसभाओं की सीटों का पुनर्निर्धारण किया गया। उस परिसीमन के बाद यह निर्णय लिया गया कि अगला परिसीमन 2021 की जनगणना के आधार पर 2026 के बाद किया जाएगा। परिसीमन की प्रक्रिया केवल गणना और आंकड़ों तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण होती है। इसका उद्देश्य चुनावी प्रक्रिया में समानता और निष्पक्षता सुनिश्चित करना है। यदि परिसीमन में किसी प्रकार का भेदभाव होता है, तो इससे न केवल चुनावी परिणाम प्रभावित हो सकते हैं, बल्कि यह सामाजिक असंतोष और राजनीतिक तनाव को भी जन्म दे सकता है। इसलिए परिसीमन आयोग की निष्पक्षता और स्वतंत्रता को बनाए रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि किसी भी क्षेत्र या समुदाय को अनुचित लाभ न मिले और चुनावी प्रक्रिया पूरी तरह से पारदर्शी और निष्पक्ष बने। परिसीमन का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह लोकतंत्र को मजबूत करता है। जब निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाएं जनसंख्या के अनुसार होती हैं, तो यह सुनिश्चित होता है कि हर नागरिक को समान रूप से प्रतिनिधित्व मिले और चुनावी तंत्र में कोई असंतुलन न हो। यह प्रक्रिया चुनावी न्याय को सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। लोकतंत्र का एक मुख्य सिद्धांत यह है कि हर व्यक्ति को समान अधिकार मिलना चाहिए, और परिसीमन इस सिद्धांत को लागू करने में मदद करता है। यह प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि हर नागरिक की आवाज़ को समान रूप से सम्मानित किया जाए, और यह लोकतांत्रिक तंत्र को मजबूत बनाती है। इस प्रकार, परिसीमन केवल एक चुनावी प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत करने और समाज में समानता, न्याय और समावेशिता सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण कदम है। परिसीमन यह सुनिश्चित करता है कि हर नागरिक का वोट समान महत्व रखता है और यह प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि हर व्यक्ति को चुनावी प्रतिनिधित्व मिल सके। इसके माध्यम से हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि कोई भी नागरिक चुनावी प्रक्रिया से वंचित न हो, और सभी नागरिकों को समान अवसर मिलें।अंत में, परिसीमन का महत्व केवल एक चुनावी प्रक्रिया तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोकतांत्रिक सिद्धांतों का पालन करने और एक सशक्त, समावेशी और न्यायपूर्ण समाज की दिशा में एक आवश्यक कदम है। यह प्रक्रिया लोकतंत्र के सही रूप को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक नागरिक को उनके अधिकारों के अनुसार न्याय मिले। परिसीमन लोकतंत्र की वास्तविकता को धरातल पर उतारने का एक सशक्त माध्यम है।

हंसराज चौरसिया

क्या पाकिस्तान से युद्ध होना चाहिए?...

पहलगाम में जो दुर्घटना घटी, जिस बेदर्दी से लोगों को धर्म पूछ-पूछकर मारा गया, दिल दहला देने वाली घटना है। जिन लोगों ने अपने सामने अपनों को मरते देखा है उनका दर्द तो कभी कम भी नहीं हो सकता परन्तु जिस साजिश के तहत इस घटना को अंजाम दिया गया वो बहुत ही भड़काने वाली है। यानि धर्म पूछना और मारना इससे बड़ी साजिश नहीं हो सकती। हम सदियों से जानते हैं भारत अनेकता में एकता वाला देश है, जिसमें मुस्लिम, हिन्दू, ईसाई, सिख सब मिलकर रहते हैं, कोई फर्क नहीं है। हमारे देश में अब्दुल कलाम, फखरुद्दीन अली अहमद जैसे राष्ट्रपति, हमीद अंसारी जैसे उपराष्ट्रपति और इद?रीस हसन लतफीस जैसे एयर चीफ मार्शल (1978 से 1981) रहे हैं। हर पोस्ट में हिन्दू, मुस्लिम, सिख हैं। कहीं छुटपुट हिंसा या आपसी मतभेद होते हैं तो उन लोगों में होते हैं जो पढ़े-लिखे नहीं या जिनको अपने स्वार्थ के लिए लड़ाया जाता है। पाकिस्तान के लोग हों या हिन्दोस्तान के लोग बहुत ही अच्छे हैं। आपस में प्यार से रहना चाहते हैं परन्तु राजनीति के स्पेशली जो पाकिस्तान की आर्मी है क्योंकि वहां स्थिरता नहीं है। कोई काम नहीं। आम लोगों की बुरी हालात है। 1947 से लेकर आज तक दोनों देशों के बीच रिश्ते कभी भी पूरी तरह सामान्य नहीं हुए, इसलिए पाकिस्तान बार-बार साजिश रचता है कि हिन्दोस्तान में हिन्दू-मुस्लिम के नाम पर दंगे हों इसलिए भारतीय हिन्दू-मुस्लिम को समझदारी रखनी जरूरी है। क्योंकि इस समय हर भारतीय का खून खौल रहा है और हम सब यही सोचते हैं कि पाकिस्तान की इस नापाक हरकत का जवाब युद्ध से देना चाहिए, क्योंकि पाकिस्तान की जमीन से संचालित होने वाले कई आतंकी संगठन भारत पर हमले करते हैं। उरी और पुलवामा 2019 जैसे हमले हमारे सैनिकों और आम नागरिकों के लिए बहुत बड़ा जख्म रहे हैं। जब शांति की हर कोशिश के बावजूद पाकिस्तान अपनी नीतियां नहीं बदलता तो उसे कड़ा जवाब देना अनिवार्य हो जाता है।

यही नहीं सीमा पर बार-बार संघर्ष विराम का उल्लंघन करता है। सीमा पर गोलीबारी से हमारे सैनिक शहीद होते हैं और सीमा से सटे गांव भी प्रभावित होते हैं। बेकसूर लोग मारे जाते हैं, बिना युद्ध के सैनिक शहीद होते हैं। जब देश पर हमला होता या सैनिकों का अपमान होता है तब जनता की अपेक्षा होती है कि सरकार कड़ा कदम उठाए। कभी-कभी युद्ध जैसे विकल्प का सहारा लेना देश की प्रतिष्ठा और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए जरूरी हो जाता है। अगर देखा जाए तो युद्ध में दोनों देशों का बहुत नुक्सान होगा। हजारों सैनिकों की जान जाएगी, आम नागरिक पीड़ित होंगे और सबसे महत्वपूर्ण देश की अर्थव्यवस्था पर बुरा असर पड़ेगा। युद्ध से विनाश होगा समाधान नहीं। यही नहीं आज भारत मोदी जी के नेतृत्व में एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति है। हमें बेरोजगारी, गरीबी, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे मुद्दों से लड़ना है न कि बंदूकों से। युद्ध से ध्यान असली समस्याओं से हट जाएगा। यही नहीं भारत और पाकिस्तान दोनों परमाणु हथियार सम्पन्न देश हैं। युद्ध की स्थिति में अगर यह हथियार प्रयोग हुए तो यह न केवल दोनों देशों में बल्कि पूरी दुनिया के लिए एक त्रासदी होगी।

मेरा भी पहलगाम की घटना के बाद बहुत खून खोलता है। दिल करता है मैं भी अपने हाथ में बंदूक लेकर उन आतंकवादियों का खात्मा करूं जिन कायरों ने निहत्थे लोगों पर वार किया, पत्नी के सामने पति और बहन के सामने भाई, बच्चों के सामने पिता को बेदर्दी के साथ कत्ल किया। पांच-छह लोगों की गंदी मानसिकता और देश में दंगे फैलाने की मानसिकता के कारण?युद्ध हो यह भी गलत हो जाएगा, क्योंकि पाकिस्तान में बैठे लोग जो आतंकवाद को बढ़ावा देते हैं, भारत की उन्नति पर जलते हैं, उनके उकसाने या गलत हरकत से पूरे देश के लोगों का नुक्सान या अर्थव्यवस्था को बिगाड़ा नहीं जा सकता। दुश्मनी से केवल तनाव बढ़ता है लेकिन संवाद और सहयोग से समस्याओं का हल निकल सकता है। व्यापार, संस्कृति और आपसी समझ से रिश्ते सुधर सकते हैं। भारत को चाहिए पाकिस्तान से उन आतंकवादियों को मांगे और उनको सब के सामने सजा मिले। युद्ध कोई खेल नहीं है। यह एक गम्भीर निर्णय है जिससे जान, सम्पत्ति और देश की दिशा दाव पर लगती है। हमें मजबूत रहना है, आतंकवाद और हमलों का जवाब देना भी जरूरी है परन्तु इसके लिए युद्ध को अंतिम विकल्प भी नहीं मानना है। शांति कोई कमजोरी नहीं, बल्कि समझदारी और दूरदर्शिता का प्रतीक है। भारत को शांति की ताकत और सुरक्षा की सख्ती दोनों का संतुलन बनाकर चलना होगा। वैसे तो यह सब सरकार, मोदी जी और तीनों सेनाओं का निर्णय होगा। मैं तो अपने मन की बात लिख रही हूं कि भारत की कोई दुश्मनी किसी धर्म, विशेषकर इस्लाम से नहीं है। हमारे बहुत से मुस्लिम नेता हुए?हैं और हैं। बहुत अच्छे हिन्दोस्तानी नागरिक हैं। हमारा विरोध आतंकवाद और पाकिस्तान की नीतियों से है न कि भारत में रहने वाले मुस्लिम या किसी भी धर्म से। भारत की विविधता ही उसकी शक्ति है। इसलिए पाकिस्तान से युद्ध की बात धर्म से जुड़ी नहीं, सिर्फ और सिर्फ राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ी है। भारत किसी से डरता नहीं, शांति हमारी प्राथमिकता है, पर राष्ट्र की रक्षा हमारा कर्त्तव्य है, युद्ध अंतिम विकल्प है।

भारत, पाक और अमेरिका

प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने फिर कहा है कि आतंकवाद के खिलाफ सरकार कड़ी व पुख्ता कार्रवाई करेगी और आतंकवाद को समर्थन देने वालों के खिलाफ भी सख्त निर्णायक कदम उठाये जायेंगे। विगत 22 अप्रैल को कश्मीर के पहलगाम में जिस तरह 27 भारतीय पर्यटक नागरिकों की पाकिस्तान से आये दहशतगर्दों ने उनका धर्म पूछ-पूछकर हत्या की उससे न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ गुस्सा पैदा हुआ। यही वजह है कि आज विश्व के अधिकतम विकसित व विकासशील देश इस मुद्दे पर भारत का समर्थन कर रहे हैं। पहलगाम की घटना के बाद पहला फोन अमेरिका के राष्ट्रपति श्री डोनाल्ड का ही श्री नरेन्द्र मोदी के पास आया और बाद में रूसी राष्ट्रपति श्री पुतिन ने भी श्री मोदी से बात की। संयोग यह रहा कि जब पहलगाम में यह घटना हुई तो अमेरिका के उपराष्ट्रपति श्री जे.डी. वेंस अपने परिवार सहित भारत की यात्रा पर थे। उनके भारत में रहते ही पहलगाम में आतंकवादी वारदात हुई थी। जाहिर तौर पर यह कहा जा सकता है कि पहलगाम के जवाब में भारत पाकिस्तान को जो सबक सिखाना चाहता है उससे अमेरिका असहमत नहीं है।

पिछले कुछ दिनों में अमेरिका के विदेश मन्त्री व रक्षामन्त्री ने भी भारत के विदेश मन्त्री श्री एस. जयशंकर व रक्षामन्त्री श्री राजनाथ सिंह से टेलीफोन पर वार्ता की। अमेरिकी रक्षामन्त्री ने तो श्री राजनाथ सिंह से साफ कहा कि भारत को अपनी सुरक्षा करने का पूरा अधिकार है। कूटनीतिक मोर्चे पर भारत को जो विश्व शक्तियों का समर्थन मिल रहा है उससे पाकिस्तान पूरे विश्व में अकेला पड़ता जा रहा है और घबरा रहा है। मैं शुरू से ही कहता रहा हूं कि पाकिस्तान एक नाजायज मुल्क है जिसकी बुनियाद हिन्दू-मुस्लिम का द्वि-राष्ट्रवाद का सिद्धान्त है। भारत ने अपने स्वतन्त्र होने और बंटवारा होने के बाद भी इस सिद्धान्त को कभी स्वीकार नहीं किया। यह बेवजह नहीं है कि भारत में आज भी पाकिस्तान के 24 करोड़ मुसलमानों के मुकाबले ज्यादा मुस्लिम रहते हैं और ये पक्के राष्ट्र भक्त हैं। मगर भारत 1947 में हुए बंटवारे की त्रासदी को भी नहीं भूला है। भारत की हिन्दू-मुस्लिम एकता कितनी मजबूत है इसका उदाहरण भी हमें कश्मीर में ही मिलता है। 1947 में जब देश का बंटवारा हो रहा था और मुहम्मद अली जिन्ना मुसलमानों के लिए पाकिस्तान बनवा रहे थे तो मुस्लिम बहुल जम्मू-कश्मीर राज्य में एक भी साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ था जबकि पूरे भारत में ऐसी वारदातें हो रही थीं। जिसे देखकर ही महात्मा गांधी ने कहा था कि जब पूरे देश में अंधियारा छाया हुआ है तो कश्मीर से एक आशा की किरण फूटी है।

राष्ट्रपिता की कश्मीर के बारे में यह टिप्पणी ऐतिहासिक धरोहर की है जिससे कश्मीर हमेशा जगमगाता रहता है परन्तु 1990 में पाकिस्तान परस्त कुछ आतंकवाद समर्थक लोगों ने कश्मीर घाटी से हिन्दू पंडितों का पलायन कराया। ये कश्मीरी हिन्दू आज भी वापस लौटने की तैयारी में ही हैं। मगर 5 अगस्त, 2019 को जब देश के गृहमन्त्री श्री अमित शाह ने जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को हटाया तो उसके बाद कश्मीर फिर जगमगाने की तरफ आगे बढ़ने लगा। मगर पाकिस्तान की ना-मुराद फौज से यह बर्दाश्त नहीं हुआ और वह जम्मू-कश्मीर में लगातार आतंकवादी कार्रवाइयों में मशगूल रही। भारत के सशस्त्र बलों ने इसका जमकर मुकाबला किया परन्तु विगत 22 अप्रैल को पाकिस्तान के आतंकवादियों ने सारी सीमाओं को लांघ डाला और पहलगाम में 27 लोगों की निर्मम हत्या कर डाली। इसका जवाब तो भारत को देना ही होगा। अतः अमेरिका के उपराष्ट्रपति श्री वेंस का यह कहना यथार्थ से परे नहीं है कि भारत आतंकवाद के खिलाफ ऐसा कदम न उठाये जिससे पूरे क्षेत्र में ही युद्ध का संकट खड़ा हो जाये क्योंकि भारत व पाकिस्तान दोनों ही परमाणु शक्ति सम्पन्न देश हैं। मगर पाकिस्तान की परमाणु शक्ति अवैध है जबकि भारत की परमाणु शक्ति को पूरी दुनिया की वैधता प्राप्त है और भारत की यह घोषित नीति है कि वह कभी परमाणु बम का उपयोग पहले नहीं करेगा। ये हथियार उसकी आत्मरक्षार्थ ही हैं और आत्मरक्षा करने का जायज अधिकार भारत को है। अतः विश्व को यदि समझाना है तो पाकिस्तान को ही समझाना है कि वह आतंकवाद की तरफ न बढ़े। हालांकि जिस तरह के प्रमाण भारत ने पाकिस्तान के बारे में दुनिया के मुल्कों को दिये हुए हैं उनसे तो यह पूरा मुल्क ही आतंकवादी देश है। अतः अमेरिका को ही यह सुनिश्चित करना होगा कि पाकिस्तान किसी भी सूरत में उसके द्वारा दिये गये हथियारों का इस्तेमाल भारत के विरुद्ध न करे।

जहां तक चीन का सवाल है तो वह आजकल पाकिस्तान को अपने कन्धे पर बैठा कर जरूर घूम रहा है मगर वह भी पाकिस्तान की हकीकत जानता है। भारत ने सिन्धु नदी जल समझौते को ठंडे बस्ते में डाल कर साफ कर दिया है कि वह पाकिस्तान को करारा सबक सिखाना चाहता है क्योंकि आज भी इसका सेना प्रमुख उस द्वि-राष्ट्रवाद के सिद्धान्त का ढोल बजाता है जिसे 1971 में इसी की जनता ने कब्र में गाड़ कर बंगलादेश का निर्माण किया था। बेशक 1971 में अमेरिका ने पाकिस्तान का खुलकर साथ दिया था मगर आज परिस्थितियां आधारभूत ढंग से पूरी तरह बदली हुई हैं और अमेरिकी नेताओं व प्रशासन को इन्हीं के अनुसार अपना रुख तय करना होगा।

संपादकीय

वैश्विक शांति में आतंकवाद एक बड़ा अवरोध

(विस्तारवाद के नेपथ्य में आतंकवाद)

समग्र रूप से वैश्विक स्तर पर देखें तो आतंकवाद कई देशों के लिए बड़ा नासूर बन चुका है। भारत में पहलगाम घटना को लिया जाए तो निर्दोष 27 भारतीय पर्यटकों की निर्मम हत्या इसका एक बड़ा उदाहरण है वैश्विक परिपेक्ष में देखें तो वैश्विक शांति के लिए आतंकवाद बहुत बड़ा अवरोध और बड़ी रुकावट है इसका स्थाई समाधान निकाला जाना चाहिए अन्यथा मानवता कराहने लगेगी और ऐसे ही निर्दोष मासूम नागरिकों की हत्या होती रहेगी इनके विरुद्ध कडे से कड़ा कदम उठाकर इनकी जड़े ही खत्म कर देनी चाहिए और आतंकवादियों को चुन चुन कर मारा जाना चाहिए। इसराइल हमास युद्ध किसकी एक बड़ी कड़ी है और अब भारत सरकार भी पाकिस्तान में बैठे आतंकवादियों के साथ उनके पालनहारों को भी खत्म करने में लगी हुई है।

आतंकवाद एक मानसिक विकृति की विचारधारा है, जिसके द्वारा हिंसक कार्यों और गतिविधियों से जनमानस अशांति और भय की स्थापना करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करना होता है। जिससे किसी भी क्षेत्र में आधिपत्य का अधिकार प्राप्त करने के लिए हिंसा और आतंक का सहारा लेकर जनमानस में अशांति का वातावरण निर्मित करने अपने मंसूबे पूरे कर आर्थिक सामाजिक और राजनैतिक विध्वंस का तांडव मचाना होता है। कुछ व्यक्तियों के समूह द्वारा संचालित मानव विरोधी गतिविधियां ही हैं जो कि समाज के विरुद्ध लूट, अपहरण, बम विस्फोट,हत्या जैसे जघन्य अपराधों को जन्म देती है। आतंकवाद मूलतः धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक परिवेश लिए हुए होता है। भारत में आतंकवाद धार्मिक और राजनीतिक ज्यादा परिलक्षित हुआ है। भारत में कश्मीर, लद्दाख, असम में विभिन्न अलगाववादी समूह द्वारा हिंसक अपराधिक कृत्य कर लोगों को भयभीत तथा पलायन करने पर मजबूर करने का कृत्य राजनीतिक आतंकवाद ही है। अलकायदा, लश्कर-ए-तैयबा ,जैश-ए-मोहम्मद जैसे संगठन धार्मिक कट्टरता की भावना से अपराध को अंजाम देते हैं। देश में नक्सलवाद ने छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखंड ,बिहार और पश्चिम बंगाल में अपना मौत का परचम फेहरा के रखा है। नक्सलवाद मूलतः सामाजिक क्रांतिकारी समूह द्वारा सरकार के विरोध में आमजन तथा आदिवासियों के मध्य अपनी समानांतर सरकार चलाने हेतु हिंसक घटनाएं की हैं। यह आतंकवादी ग्रुप हिंसा के द्वारा अलग अलग तरीके से आतंकवाद फैलाने का प्रयास करते हैं ,यह ज्यादातर भीड़भाड़ वाले इलाकों में जैसे रेलवे स्टेशन बस स्टैंड रेल रेल पटरियों वायुयानो का अपहरण निर्दोष लोगों को बंदी बनाना बैंक में डकैतियां कर समाज में अराजकता तथा वैमनस्यता फैलाने का काम करते हैं। भारत में नक्सलवाद तो मूल रूप से पश्चिम बंगाल के नक्सल वाली क्षेत्र से पनपा है, जो पूरे भारत में धीरे-धीरे फैल कर हिंसक रूप अपनाए हुए हैं। आतंकवाद केवल भारत में न होकर उसका साम्राज्य वैश्विक स्तर पर भी दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से फैला हुआ है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद ने अनेक घटनाओं को जन्म देकर विश्व शांति सद्भावना की मूल कल्पना को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास किया है। दुनिया के प्रत्येक देश में आतंकवाद किसी न किसी रूप में आज मौजूद है। आतंकवाद कहीं रंगभेद, कहीं भाषा विभेद, कहीं राजनीतिक विचारधाराओं में विरोध और कहीं रंगभेद के कारण ,नस्ली समस्या आतंकवाद का कारण बनी है। यह समस्याएं हथियारों से सुलझाने के प्रयास में अत्यंत हिंसक बन गई हैं।

आतंकवाद को वृहद रूप देने में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी ने भी बड़ा साथ दिया है, आतंकवादियों, नक्सलवादियों और नस्ल वादियों के लिए रसायनिक, नाभिकीय, जैविक मानव बम जैसे आधुनिक हथियार उपलब्ध होने से यह आतंकवादी गतिविधियां और भी खतरनाक हो गई है। इसके अलावा मीडिया में इंटरनेट उपलब्धता से यह सारी सरकारी गतिविधियों की जानकारी प्राप्त हो जाती है इससे आतंकवादी और ज्यादा खतरनाक साबित हो रहे हैं। विश्व में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर 11 सितंबर 2001 आतंकवादी हमला मानव इतिहास की सबसे क्रूर तम हमला माना जाता है। पाकिस्तान के पेशावर जिले में आर्मी स्कूल में 150 मासूम बच्चों की निर्मम हत्या भी एक क्रूर आतंकवादी घटना हैद्य भारत में 1993 में मार्च में श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोट इसी तरह दिसंबर 2001 में संसद भवन पर हमलावाराणसी बम विस्फोट, अहमदाबाद में बम विस्फोट, 2008 में मुंबई ताज होटल पर हमला,2016 में पठानकोट एयरबेस हमला, 2017 में अमरनाथ तीर्थयात्रियों हमला, 2019 में पुलवामा हमला आतंकवादी घटनाएं हैं जिससे मानवीय संवेदनाएं, शांति स्थापना की मूल धारणा की धज्जियां उड़ जाती हैद्य भारत में तो नक्सलवाद भी आतंकवाद का एक वृहद रूप ले चुका है आतंकवाद का सबसे भयानक रूप यह है की कोई भी देश यह नहीं जानता कि आतंकवाद का अगला निशाना कौन सा देश और कौन सी इमारत, रेलवे स्टेशन, वायुयान और कौन सा धार्मिक स्थल होगाद्य वैश्विक स्तर पर आतंकवाद के खिलाफ असुरक्षा की भावना पूरी तरह व्याप्त हो चुकी हैद्य आतंकवाद का सबसे विस्तृत और भयानक रूप अफगानिस्तान में सरकार का तख्तापलट का ही हैद्य वहां तालिबानी आतंकवादियों द्वारा सरकार को गिरा कर अफगानिस्तान देश पर जाकर वहां शासन स्थापित कर लिया था, और पूरी दुनिया तमाशबीन बनी रही। रूस यूक्रेन युद्ध में भी लाखों लोगों की आक्रमण कर हिंसक हत्या तानाशाही तथा मानसिक आतंकवाद का ही एक भयानक रूप है। पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ भारत सहित अनेक कानून बनाए गए एवं उन पर अमल भी किया जा रहा है। पर आतंकवाद को समूल नष्ट करने के लिए आतंकवादी विचारधारा को ही समूल रूप से नष्ट करना होगा, क्योंकि आतंकवाद कोई तात्कालिक कारणों से पैदा नहीं होता,यह एक घिनौनी, हिंसक आतंक पैदा करने वाली विचारधारा है। अशांति की इस विचारधारा में जन समुदाय में रोश तथा खौफ पैदा कर दिया है और यह मानवता के लिए अभिशाप की तरह व्याप्त हो गया है। जिससे विश्वव्यापी वैश्विक शांति की अवधारणा को नष्ट कर दिया है। वैसे तो पूरे विश्व में आतंकवाद के खिलाफ प्रयास किए जा रहे हैं पर हर देश के हर नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि इस विचारधारा और इनकी गतिविधियों पर नजर रख इसे समूल नष्ट करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

संजीव ठाकुर

गुम होती सुबहें- प्रकृति की चेतावनी

[जहाँ गौरैया नहीं गाती- शहर की मूक त्रासदी]

हर सुबह की शुरुआत पहले चहचहाते स्वर के साथ होती थी – जब गौरैया की चहचहाहट, कोयल की मधुर कूक और कबूतरों की गुटरगूं से घर आंगन गूंज उठते थे। ऐसा लगता था मानो प्रकृति ने जागरण की घड़ी भेजी हो। पर अब वह सुबहें खामोश हैं, और वो स्वर कहीं गुम होते जा रहे हैं। यह खामोशी सिर्फ कानों को नहीं, दिल को भी चीरती है। हमने ऊंची इमारतें, चमचमाती सड़कें और आधुनिकता का तमगा तो हासिल कर लिया, पर क्या कभी ठहरकर सोचा कि इस चकाचौंध के पीछे हमने क्या खो दिया? वे छोटे पंखों वाले मेहमान, जो कभी हमारे आंगन का हिस्सा थे, अब कहीं गुम हो चुके हैं। यह सिर्फ पक्षियों की अनुपस्थिति नहीं, बल्कि हमारे और प्रकृति के बीच बढ़ती खाई की कहानी है। शहरों में बदलते पक्षी आवास एक अनदेखी चुनौती बनकर उभरे हैं, जो हमें चेतावनी दे रही है – अगर अभी नहीं जागे, तो आने वाली सुबहें और भी सन्नाटे में डूब जाएंगी। शहरों का विस्तार आधुनिकता का प्रतीक है, लेकिन यह विस्तार एक भारी कीमत वसूल रहा है। कभी जिन पेड़ों की छांव में चिड़ियां घोंसले बनाती थीं, वे अब कंक्रीट के जंगलों में तब्दील हो चुके हैं। बगीचे, तालाब और खुली छतें, जो पक्षियों का बसेरा हुआ करती थीं, अब मॉल्स, हाईवे और बहुमंजिला इमारतों की भेंट चढ़ गए हैं। गौरैया, जो कभी हर घर की शोभा थी, अब दुर्लभ हो चली है। बुलबुल की मधुर आवाज और मैना की चंचलता अब शायद ही कहीं सुनाई दे। यह सिर्फ कुछ प्रजातियों का गायब होना नहीं, बल्कि उस पारिस्थितिकी तंत्र का टूटना है, जो हमें जीवन देता है। पक्षी केवल गीत और सौंदर्य नहीं लाते; वे प्रकृति के संतुलन का आधार हैं। वे बीज बिखेरते हैं, कीटों को नियंत्रित करते हैं और जैव विविधता को जीवंत रखते हैं। लेकिन जब उनके घर ही उजड़ जाएंगे, तो वे कहां जाएंगे?

शहरीकरण की अंधी दौड़ ने पक्षियों के लिए कई खतरे खड़े किए हैं। बढ़ता प्रदूषण, मोबाइल टावरों से निकलने वाला विद्युत-चुंबकीय विकिरण, और हरित क्षेत्रों का तेजी से सिकुड़ना उनके अस्तित्व पर संकट बनकर मंडरा रहा है। एक अध्ययन के अनुसार, भारत के कई शहरों में गौरैया की आबादी में 60-70त्न तक की कमी आई है, और यह आंकड़ा हर साल बढ़ रहा है। विश्व स्तर पर, 'इंटरनेशनल यूनियन फॉर कंजर्वेशन ऑफ नेचर' ने कई शहरी पक्षी प्रजातियों को लुप्तप्राय की सूची में शामिल किया है। यह संकट केवल पक्षियों तक सीमित नहीं है। जब पक्षी गायब होते हैं, तो कीटों की संख्या बढ़ती है, फसलों को नुकसान होता है, और पारिस्थितिकी तंत्र की पूरी श्रृंखला प्रभावित होती है। फिर भी, हम इस संकट को गंभीरता से क्यों नहीं लेते? शायद इसलिए कि इसका असर तुरंत सामने नहीं आता। यह एक मूक आपदा है, जो धीरे-धीरे हमें घेर रही है। हमारी अनदेखी का एक कारण यह भी है कि हम पक्षियों को अपनी रोजमर्रा की जिंदगी से जोड़कर नहीं देखते। हमारी सुबहें अब अलार्म की घंटियों से शुरू होती हैं, न कि चिड़ियों की चहचहाहट से। बच्चे अब गौरैया को किताबों में या यूट्यूब पर देखते हैं, न कि अपने आंगन में। यह नुकसान सिर्फ पर्यावरण का नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक और भावनात्मक विरासत का भी है। क्या हम चाहेंगे कि हमारी अगली पीढ़ी प्रकृति के इस जीवंत हिस्से से अनजान रहे? क्या हम उन्हें वह अनुभव देने से चूक जाएंगे, जो हमने अपने बचपन में जिया – जब एक गौरैया का दाना चुगना या कोयल का गाना हमें प्रकृति से जोड़ता था?

इस संकट का समाधान असंभव नहीं है, बशर्ते हम अभी कदम उठाएं। छोटे-छोटे प्रयास बड़े बदलाव ला सकते हैं। शहरों में छतों पर बगीचे बनाना, पुराने पेड़ों को संरक्षित करना, और पक्षियों के लिए पानी व दाने की व्यवस्था करना शुरुआती कदम हो सकते हैं। स्थानीय निकायों को शहरी नियोजन में पक्षी-अनुकूल नीतियां अपनानी होंगी, जैसे कि पार्कों और हरित पट्टियों को बढ़ाना। स्कूलों में बच्चों को पक्षियों के महत्व और उनकी सुरक्षा के बारे में पढ़ाया जाना चाहिए। सामुदायिक स्तर पर जागरूकता अभियान चलाए जा सकते हैं, ताकि लोग अपने घरों में छोटे घोंसले या बर्ड-फीडर लगाएं। कुछ शहरों ने पहले ही इस दिशा में कदम उठाए हैं। उदाहरण के लिए, दिल्ली और बेंगलुरु जैसे शहरों में स्थानीय संगठनों ने 'स्पैरो प्रोजेक्ट' शुरू किए हैं, जिनके तहत गौरैया के लिए घोंसले और भोजन की व्यवस्था की जा रही है। ये प्रयास प्रेरणादायक हैं, लेकिन इन्हें राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक समर्थन की जरूरत है। हमें यह भी समझना होगा कि पक्षियों का संरक्षण केवल पर्यावरण की रक्षा नहीं, बल्कि हमारी अपनी भलाई से जुड़ा है। एक स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र ही हमें स्वच्छ हवा, पानी और भोजन दे सकता है। जब हम पक्षियों को बचाते हैं, तो हम अपने भविष्य को बचाते हैं। यह एक सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसमें सरकार, समाज और हर व्यक्ति की भूमिका है। हमें अपने शहरों को सिर्फ इंसानों के लिए नहीं, बल्कि उन सभी जीवों के लिए रहने योग्य बनाना होगा, जो इस धरती को हमसे साझा करते हैं। सोचिए, एक ऐसी सुबह कैसी होगी जब आपकी खिड़की पर फिर से गौरैया चहचहाए, जब कोयल की कूक आपके दिन की शुरुआत करे। यह सपना हकीकत बन सकता है, बशर्ते हम आज से शुरुआत करें। लेकिन अगर हम चुप रहे, अगर हमने इस चेतावनी को अनसुना कर दिया, तो वह दिन दूर नहीं जब शहरों की सुबहें सिर्फ सायरन और हॉर्न की आवाजों से गूंजेंगी। चुनौती हमारे सामने है। सवाल यह है – क्या हम उन पंखों को फिर से उड़ान दे पाएंगे, या हम उन्हें हमेशा के लिए खामोश कर देंगे? जवाब आपके और मेरे हाथ में है।

प्रो. आरके जैन

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक रवि कुमार अवस्थी द्वारा अनवर ऑफसेट एम्- 58, 59 बेसमेंट विकासदीप बिल्डिंग स्टेशन रोड लखनऊ से मुद्रित ई-4 सेक्टर-एम/29 अपोजिट उष्मान एन्क्लेव अलीगंज लखनऊ 226024 से प्रकाशित **संपादक-राजीव कुमार शुक्ल,** मो0- 7499472288
E-Mail: news@swatantraprabhat.com, RNI No: UPHIN/2019/79073 इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारो के चयन एवं संपादन हेतु पी आर बी एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा न्यायलय जनपद लखनऊ ही होगा।

राधे राधे इंटरप्राइजेज पर अवैध खनन का गंभीर आरोप,मानक को ताक पर रखकर रात्रि में किया जा रहा है अवैध खनन

● सुरक्षा मानकों के अभाव में दिनरात चल रहा खनन का खेल

भारी मशीनों का धड़ल्ले से उपयोग कर मानक से ज्यादा निकाला जा रहा बोल्डर। जांच की दरकार

स्वतंत्र प्रभात

ओबरा, सोनभद्र। ओबरा क्षेत्र में राधे राधे इंटरप्राइजेज द्वारा संचालित खनन पट्टा संख्या 5006 लगातार विवादों के घेरे में है। इस फर्म पर न केवल खनन नियमों का उल्लंघन करने का आरोप है, बल्कि नई खदान में असुरक्षित तरीके से 'बैंज 'बनाकर काम करने और रात्रि में बड़े पैमाने पर अवैध खनन जारी रखने के भी गंभीर आरोप लगे हैं, जिससे यह क्षेत्र मजदूरों के लिए 'मौत का कुआं 'साबित हो रहा है। आरोप है कि 3.400 हेक्टेयर क्षेत्र में फैले इस खनन पट्टे, जिसकी अवधि 16 दिसंबर 2022 से 15 दिसंबर 2032 तक है, पर नियमों को ताक पर रखकर रात के अंधेरे में भी खनन कार्य धड़ल्ले से चल रहा है। विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार, शनिवार की रात लगभग 8~28 बजे भी खनन क्षेत्र में अवैध रूप से काम जारी था, जबकि सरकारी नियमों के अनुसार रात्रि में खनन पूर्णतः प्रतिबंधित है। इसके बावजूद, खदान में तेज गति से काम हो रहा है, जो सीधे तौर पर सरकारी नियमों का उल्लंघन है। सबसे भयावह स्थिति यह है कि ऊंचे-ऊंचे चट्टानों के नीचे कई पोकलेन मशीनों का संचालन रात्रि में

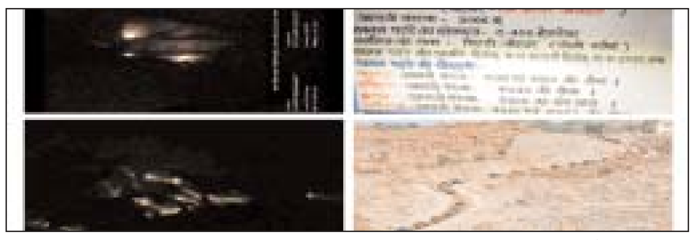

भी किया जा रहा है, जिससे कभी भी गंभीर दुर्घटना घट सकती है। रात्रि के अंधकार में पहाड़ी चट्टानों के ढहने का खतरा हमेशा बना रहता है, जिससे वहां काम कर रहे मजदूरों और ऑपरेटरों की जान खतरे में पड़ सकती है। इसके अतिरिक्त, ऊंचे और खतरनाक चट्टानों पर चढ़कर कंप्रेसर मशीनों से ड्रिलिंग की जा रही है, जो सुरक्षा के लिहाज से अत्यंत जोखिम भरा है। नई खदान में 'बैंज 'बनाकर काम करना भी सुरक्षा मानकों की घोर अनदेखी है। आरोप है कि खनन स्थल पर कंप्रेसर ऑपरेटर से लेकर साधारण मजदूर और पोकलेन ऑपरेटर तक, सभी रात्रि कालीन खनन कार्य में शामिल हैं। यह सरकार द्वारा निर्धारित खनन नियमों की खुली अवमानना है। इस गैरकानूनी गतिविधि से न केवल कर्मचारियों की सुरक्षा दांव पर लगी है, बल्कि पर्यावरण और आसपास के क्षेत्र के लिए भी यह हानिकारक साबित हो सकता है। स्थानीय सूत्रों का यह भी कहना है कि रात्रि में यदि कोई दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित होती है, तो उसे दबा दिया जाता है। पट्टा धारक कथित तौर पर चंद रुपयों के लालच में मजदूरों से रात में जोखिम भरा काम करवा रहे हैं, जो सीधे तौर पर दुर्घटनाओं को चुनौती देना है। स्थानीय लोगों का यह भी गंभीर आरोप है कि स्थानीय अधिकारियों की मिलीभगत से क्षेत्र में रात के समय बड़े पैमाने पर अवैध खनन हो रहा है।

उनका मानना है कि इस तरह की गैरकानूनी गतिविधियां प्रदेश के मुखिया की छवि को खराब करने की साजिश का हिस्सा हो सकती हैं।खनन क्षेत्र तक पहुंचने का एकमात्र रास्ता भी बेहद संकरा और चढ़ाई वाला है। इस पतले मार्ग पर दिन-रात ओवरलोड टिपर वाहनों की आवाजाही बनी रहती है, जिससे दुर्घटनाओं की आशंका और भी बढ़ जाती है। स्थानीय लोगों का यह भी आरोप है कि पट्टा धारक दिन और रात में निर्धारित क्षमता से कहीं अधिक पत्थर निकालकर सरकार को भारी राजस्व का नुकसान पहुंचा रहे हैं।इस गंभीर मामले में संबंधित उच्च अधिकारियों को तत्काल हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है, ताकि अवैध खनन को तुरंत रोका जा सके और खनन क्षेत्र में सुरक्षा नियमों का कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जा सके। ऊंचे चट्टानों के नीचे और नई खदान में असुरक्षित तरीके से रात्रि में खनन कार्य जारी रखना न केवल कानून का उल्लंघन है, बल्कि यह कभी भी एक बड़ी मानवीय त्रासदी का कारण बन सकता है। प्रशासन को इस मामले में त्वरित संज्ञान लेते हुए कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए। खनन क्षेत्र में जगह-जगह कुकुरमुत्ते की तरह कंप्रेसर मशीनें दिखाई दे रही हैं, जहां सुरक्षा और संरक्षा का नामोनिशान नहीं है। आरोप है कि खनन माफिया चंद रुपयों के लालच में निरीह मजदूरों की जिंदगी से खिलवाड़ कर रहे हैं और इस क्षेत्र को 'मौत का कुआं 'बना रहे हैं, जहां रात में कई पोकलेन मशीनें धड़ल्ले से काम कर रही हैं।

दोस्ती का खूनी अंत पनारी जंगल में दोस्त ही बना दुश्मन, लाठी-डंडों से पीटकर हत्या, शव दफनाया

स्वतंत्र प्रभात

सोनभद्र। जनपद के ओबरा थाना क्षेत्र के अंतर्गत पनारी जंगल में एक हृदयविदारक घटना सामने आई है, जिसने दोस्ती के रिश्ते को कलंकित कर दिया है। यहां एक दोस्त ने अपने ही मित्र की निर्मम हत्या कर दी, जिसके बाद उसके शव को जंगल में ही दफना दिया गया। इस सनसनीखेज वारदात का खुलासा तब हुआ, जब सतर्क ग्राम प्रधान ने संदिग्ध गतिविधियों को भांपते हुए तत्काल पुलिस को सूचना दी। ग्राम प्रधान से सूचना मिलते ही ओबरा थाने की पुलिस तुरंत हरकत में आई। घटनास्थल की गंभीरता को देखते हुए उप जिलाधिकारी भी मौके पर पहुंचे। पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों की मौजूदगी में उस स्थान पर खुदाई की गई, जहां शव को दफनाया गया था। कब्र से निकाले गए शव की पहचान ओबरा निवासी अनिल शुक्ला पुत्र स्व. शीतला प्रसाद शुक्ला के रूप में हुई। इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक और क्षेत्राधिकारी भी

घटनास्थल पर मौजूद रहे, जिन्होंने घटना की संवेदनशीलता को देखते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है, ताकि मृत्यु के सही कारणों का पता चल सके। इस जघन्य हत्याकांड के संबंध में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए दो संदिग्ध व्यक्तियों को हिरासत में लिया है। पुलिस की टीमें उनसे गहन पूछताछ कर रही हैं, ताकि हत्या के पीछे के द्वश्वह्लद्व1द्ग और पूरे घटनाक्रम की विस्तृत जानकारी हासिल की जा सके। प्रारंभिक जांच में पुलिस हर पहलू को ध्यान में रखकर पड़ताल कर रही है, जिसमें आपसी रंजिश या किसी अन्य विवाद की संभावना भी शामिल है। मृतक अनिल शुक्ला के संबंध में जानकारी मिली है कि उनके दो भाई हैं। इस दुखद घटना की खबर फैलते ही पूरे ओबरा क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गई है। लोगों को विश्वास नहीं हो रहा है कि दोस्ती जैसे पवित्र रिश्ते का ऐसा खौफनाक अंत हो सकता है। इस घटना ने क्षेत्र में सनसनी फैला दी है और लोग आरोपियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। पुलिस अधिकारियों ने मीडिया को बताया कि वे इस मामले को पूरी गंभीरता से ले रहे हैं और हर संभव सबूत जुटाने का प्रयास कर रहे हैं। उनका कहना है कि जल्द ही इस हत्याकांड का पर्दाफाश कर दिया जाएगा और जो भी दोषी पाया जाएगा, उसे कानून के अनुसार कठोरतम सजा दिलाई जाएगी। फिलहाल, पुलिस की जांच जारी है और हिरासत में लिए गए संदिग्धों से पूछताछ में महत्वपूर्ण सुराग मिलने की उम्मीद है। इस घटना ने एक बार फिर समाज में बढ़ते अपराध और रिश्तों में आई खटास को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं।

ओबरा-चोपन मार्ग पर स्कॉर्पियो पलटी, मालिक का लड़का सुरक्षित

स्वतंत्र प्रभात

ओबरा, सोनभद्र। रविवार दोपहर लगभग 1~00 बजे ओबरा-चोपन मार्ग पर बिल्ली चढ़ाई के पास ग्रामीण आयोग केंद्र के समीप एक स्कॉर्पियो कार दुर्घटनाग्रस्त हो गई। ओबरा की ओर से चोपन जा रही गाड़ी संख्या क्क64त्त6232 अचानक अनियंत्रित होकर पलट गई।प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, यह हादसा तब हुआ जब गाड़ी के सामने अचानक एक गाय आ गई। वाहन के मालिक ने पशु को बचाने की कोशिश की, जिसके चलते गाड़ी सड़क किनारे नाले से उतरकर एक पेड़ से टकरा गई और पलट गई। टक्कर इतनी तेज थी कि स्कॉर्पियो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। इस दुर्घटना में सबसे राहत की बात यह रही कि गाड़ी मालिक का लड़का, जो उस समय वाहन चला रहा था, बाल-बाल बच गया और उसे केवल मामूली

चोटें आईं। टक्कर की आवाज सुनकर आसपास के स्थानीय लोग तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे और घायल युवक की सहायता की।दुर्घटना के कारण ओबरा-चोपन मार्ग पर कुछ देर के लिए यातायात बाधित हो गया। सूचना मिलने पर ओबरा पुलिस भी तत्काल मौके पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और क्षतिग्रस्त वाहन को सड़क के किनारे से हटवाकर यातायात को सुचारू कराया। फिलहाल, पुलिस इस घटना की जांच कर रही है।यह घटना एक बार फिर क्षेत्र में सड़कों पर आवारा पशुओं की बढ़ती समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करती है। स्थानीय निवासियों का कहना है कि आवारा पशुओं के कारण अक्सर इस तरह के हादसे होते रहते हैं। उन्होंने प्रशासन से इस गंभीर समस्या का स्थायी समाधान निकालने की पुरजोर मांग की है, ताकि भविष्य में ऐसी अप्रिय घटनाओं से बचा जा सके।

गोरखपुर में दो बाइकों की भीषण टक्कर, एक युवक गंभीर, जिला अस्पताल रेफर

स्वतंत्र प्रभात

गोला बाजार /गोरखपुर। जनपद के बड़हलगंज-गोला मार्ग पर रविवार सुबह 10 बजे बाहपुर गांव के पास दो बाइकों की आमने-सामने जोरदार टक्कर में दो युवक बुरी तरह घायल हो गए। घायलों में से एक की हालत नाजुक होने के कारण उसे जिला अस्पताल रेफर किया गया, जबकि दूसरे का इलाज निजी अस्पताल में जारी है, स्थानीय पुलिस बाइक को कब्जे में रखकर अग्रिम कार्य मे जुट गई, प्राप्त जानकारी के अनुसार, सुबह करीब 10 बजे मेहड़ा गांव निवासी उत्कर्ष शुक्ला (पुत्र मुन्ना शुक्ला) अपनी बाइक से गोला की ओर जा रहे थे। उसी समय, शिवपुर गांव निवासी राहुल सिंह (पुत्र रामसमुझ सिंह) अपनी अपाचे बाइक से गोला से अपने गांव की ओर आ रहे थे। बाहपुर के पास अधूरी सड़क पर दोनों बाइकों की जबरदस्त भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी भीषण थी कि दोनों चालक गंभीर रूप से घायल हो गए। स्थानीय लोगों ने तुरंत

घायलों को गोला सीएचसी पहुंचाया। चिकित्सकों ने राहुल सिंह की हालत गंभीर देखते हुए उन्हें तत्काल जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहीं, उत्कर्ष शुक्ला का इलाज बड़हलगंज के एक निजी अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने घटनास्थल का जायजा लिया और मामले की जांच शुरू कर दी है। अधूरी सड़क को हादसे का प्रमुख कारण माना जा रहा है। स्थानीय लोग सड़क निर्माण में देरी को लेकर आक्रोश जता रहे हैं।हादसे ने एक बार फिर सड़क सुरक्षा और निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर सवाल उठाए हैं।

गैंगस्टर व गोवध के आरोपी युवक को पुलिस ने दबोचा भेजा जेल

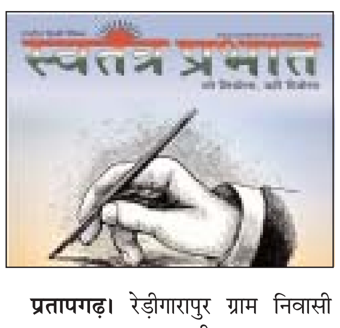

प्रतापगढ़। रेड़ीगारापुर ग्राम निवासी आज़ाद पुत्र स्वश वकील अहमद पर गैंगस्टर सहित गोवध निवारण अधिनियम का मुकदमा दर्ज था। गैंगस्टर व गोवध के आरोपी युवक को पुलिस ने उसके घर के पास से गिरफ्तार कर लिया जब वह कहीं भागने के फिराक में था। पट्टी कोतवाली पुलिस ने आरोपी को जेल भेज दिया है। वह काफी दिनों से फरार चल रहा था। उपनिरीक्षक विजय कुमार यादव व हेड कास्टेबल लालजी गश्त पर थे तो आरोपी युवक रेडीगारापुर गांव में अपने घर के पास दिखाई दिया तो आरोपी युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया।

गोरखपुर में संगठित धोखाधड़ी गिरोह पर बड़ी कार्रवाई, गैंगस्टर एक्ट के तहत 5 अपराधी चिह्नित

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर- जिले में संगठित अपराधों पर शिकंजा कसते हुए गोरखपुर पुलिस ने एक बड़े धोखाधड़ी गिरोह के खिलाफ सख्त कार्रवाई की है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर गुलरिहा थाना पुलिस ने एक ऐसे गिरोह के पांच सदस्यों के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है, जो प्राइवेट हॉस्पिटलों में जबरन भर्ती कराने जैसे अपराधों में लिप्त था। गिरोह का सरगना डॉ. प्रवीण सिंह है, जबकि अन्य सदस्यों में मुनेन्द्र कुमार, अमन गुप्ता, तुषार टेकरीवाल और मिथिलेश गुप्ता उर्फ सोनू शामिल हैं। पुलिस अधीक्षक नगर के मार्गदर्शन और क्षेत्राधिकारी गोरखनाथ के पर्यवेक्षण में यह कार्रवाई की गई। जिला मजिस्ट्रेट द्वारा अनुमोदित गैंग चार्ट के आधार पर गुलरिहा थाने में मुकदमा संख्या 379/2025 दर्ज किया गया है।

अपराध का मामला और

कार्यप्रणाली

यह गिरोह मिलकर धोखाधड़ी जैसे जघन्य अपराधों को अंजाम देता था, जिससे आम जनता में भय का माहौल बना हुआ था। 17 जनवरी 2025 को मेडिकल कॉलेज के एम्बुलेंस चालकों द्वारा एक महिला को गुमराह कर प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराने की घटना के बाद गुलरिहा थाने में मुकदमा संख्या 65/2025 दर्ज किया गया था। इस मामले में भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराएं 318(4), 351(3), 352, 308(5), और 61(2) लगाई गई थीं।

अपराधियों का आपराधिक इतिहास

डॉ. प्रवीण सिंह (बेलदार, बरहज, देवरिया)- गिरोह का सरगना, 4 मामले दर्ज। मुनेन्द्र कुमार (भवानीपुर, उरुवा बाजार, गोरखपुर)- 2 मामले दर्ज। अमन गुप्ता (मुण्डेला, चिलुआताल, गोरखपुर)- 2 मामले दर्ज। तुषार टेकरीवाल (रायगंज रोड, राजघाट, गोरखपुर)- 1 मामला दर्ज। मिथिलेश गुप्ता उर्फ सोनू (बनकटिया, सहजनवां, गोरखपुर)~2 मामले दर्ज।

कानूनी कार्रवाई और उद्देश्य

पुलिस ने इस गिरोह के खिलाफ उत्तर प्रदेश गिरोहबंद एवं समाज विरोधी गतिविधियां निवारण अधिनियम की धारा 2(ख)(1)(XI)/3(1) के तहत मुकदमा दर्ज किया है। इस सख्त कदम का मकसद धोखाधड़ी जैसे अपराधों पर अंकुश लगाना और गोरखपुर में भयमुक्त वातावरण स्थापित करना है। गोरखपुर पुलिस का संदेश पुलिस ने यह भी स्पष्ट किया है कि भविष्य में संगठित अपराधों के खिलाफ इसी प्रकार की सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

गोरखपुर पुलिस की 'सर्जिकल स्ट्राइक'- 5 मोस्ट वॉन्टेड अपराधियों पर 85,000 का इनाम

स्वतंत्र प्रभात

गोरखपुर - गोरखपुर पुलिस ने अपराध की दुनिया में तहलका मचा दिया है! जिले के पांच खूंखार अपराधियों, जो लंबे समय से कानून को ठेंगा दिखा रहे थे, पर कुल 85,000 का इनाम घोषित कर दिया गया है। पुलिस का जाल अब इन फरार अपराधियों के चारों ओर कस चुका है, और जनता तालियां बजा रही है। यह ऑपरेशन किसी बॉलीवुड ब्लॉकबस्टर से कम नहीं !कौन हैं ये 'फरारी ब्रिगेड' के सितारे पुलिस ने इन पांच मोस्ट वॉन्टेड अपराधियों की लिस्ट जारी की है, जिनके नाम सुनकर ही अपराध की दुनिया में सनसनी मच गई है- रंजीत चौहान (गोरखनाथ थाना) आरोप- गैंगस्टर एक्टपता- काशीराम आवास, महाराजगंजइनाम- 10,000फिल्मी परिचय- अपराध का 'सीनियर प्लेयर', जो पुलिस को चकमा देने में माहिर है।सतीश उर्फ बोबे उर्फ भोलू यादव (गोला थाना)आरोप- एससी/एसटी एक्टपता- पाण्डेयपार, गोलाइनाम- 10,000फिल्मी परिचय~ नाम भोलू, लेकिन कारनामे खतरनाक। सामाजिक उत्पीड़न का 'पोस्टर बॉय'।गंगेश निषाद (गीडा थाना)आरोप~ अपहरण, धमकीपता- हरखपुर टोला खुजही इनाम- 25,000फिल्मी परिचय- अपहरण का 'मास्टरमाइंड', पुलिस की हिट लिस्ट का टॉप स्टार।बृजेश यादव (गीडा थाना)आरोप- धोखाधड़ी, चोरीपता- पटपर, खोराबार इनाम- 15,000फिल्मी परिचय- आर्थिक अपराधों का 'जुगाड़ू बाबा', जो ठगी में नंबर वन है।कंचन पोरवाल (चौरी-चौरा थाना)आरोप- जालसाजी, धोखाधड़ी पता-गणेश नगर, शाहगंजइनाम- 15,000 फिल्मी परिचय- 'फ्रॉड क्वीन', जिसने जालसाजी को बनाया अपना ताज।

पुलिस का मास्टर प्लान

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) गौरव ग्रोबर ने साफ शब्दों में कहा, "यह तो बस ट्रेलर है, पूरी पिक्चर इनकी गिरफ्तारी होगी!"गोरखपुर पुलिस ने हर गली-नुक्कड़ पर नजर रखनी शुरू कर दी है। सूचना देने वालों का नाम गुप्त रखा जाएगा, और इनाम की राशि पक्की है। पुलिस टीमें हाई अलर्ट पर हैं, और इन अपराधियों के ठिकानों पर छापेमारी तेज हो चुकी है। गोरखपुर की जनता ने पुलिस के इस कदम का स्वागत किया है। स्थानीय निवासी रामजी बर्मा रामबृक्ष ,अनिल पांडेय ,आदि लोगों ने कहा, "पुलिस का यह कदम गेम-चेंजर है। अब अपराधी कितना भी छिपें, बचेंगे नहीं। गोरखपुर क्राइम-फ्री जोन बनेगा!" कुछ सूत्रों का कहना है कि इनाम के पोस्टर देखकर कई अपराधी पहले ही गुमनामी के रास्ते पर चल पड़े हैं 'पुलिस ने आम जनता से अपील की है कि अगर आपको इन अपराधियों के बारे में कोई जानकारी मिले, तो तुरंत नजदीकी थाने या हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क करें। आपका एक कॉल गोरखपुर को 'सुपर सेफ' शहर बना सकता है। सूचना देने वालों को न सिर्फ इनाम मिलेगा, बल्कि शहर को अपराधमुक्त बनाने का गौरव भी प्राप्त होगा।संदेश साफ है" चुप रहना अपराधियों को बचाना है, बोलना गोरखपुर को बचाना है!"गोरखपुर पुलिस की इस 'सर्जिकल स्ट्राइक' ने अपराधियों के होश उड़ा दिए हैं। अब सवाल यह है- ये फरारी ब्रिगेड कितने दिन और बचेगी।

गंगा सप्तमी पर कराया गरीब कन्यों का विवाह

अलीगढ़। स्वर्गीय पन्नालाल वार्ष्णेय मेमोरियल ट्रस्ट का राजघाट गंगा तट पर डेढ़ किलोमीटर लंबी साड़ियों की मनोहारी श्रृंखला के साथ 29 वा दो दिवसीय गंगा जन्मोत्सव समारोह शुरू हो गया। प्रारंभ में ट्रस्ट की ओर से पांच गरीब कन्याओं का विवाह भी कराया गया जानकारी के अनुसार राजघाट गंगा तट पर ट्रस्ट की ओर से 29वां दो दिवसीय गंगा जन्म उत्सव समारोह आचार्य बबली गुरु और पंडित रूप किशोर शर्मा वेद पाठी की टीम के सानिध्य में पांच गरीब कन्याओं आयुष्मति सुतापा के साथ अंकित , आयुष्मति नेहा के साथ मोनू, आयुष्मति चांदनि के साथ सोनू , पूजा के साथ विवेक और रामेश्वरी के साथ रघुवीर ने फेरे लिए। ट्रस्ट के अध्यक्ष कालीचरण वार्ष्णेय एवं उनकी पत्नी निर्मला कांत ने सर्वप्रथम कन्यादान किया । ट्रस्ट की ओर से घर में काम आने वाले सामान बेड कंबल, रजाई, कूलर ,सिलाई मशीन प्रेस बर्तन कपड़े आदि आवश्यक सामान भेंट किए गए। दोपहर 3:00 बजे चुनरी मनोरथ पूजा संपन्न हुई जिसमें 251 साड़ियों का आपस में बांधकर डेढ़ किलोमीटर लंबी श्रृंखला बनाई गई बाद में इन साड़ियों को प्रसाद स्वरूप घाट पर मौजूद सभी महिलाओं को वितरित किया गया सभी कार्यक्रमों को संपन्न कराने में ट्रस्ट की महामंत्री व व्यापारी नेता प्रदीप गंगा, वीरेंद्र डिब्बा, विशाल आनंद,देवेंद्र सैनी संयोजक आदि का योगदान रहा।

खनन माफिया सक्रिय, ख़जनी उनवल सतुआभार क्षेत्र को कर रहे हैं छलनी

●जिला खनन अधिकारी के मिलिभगत से खनन माफिया फल फूल रहे कारोबार , लाखों रुपए का राजस्व का लगा रहे हैं चुना

स्वतंत्र प्रभात

खजनी- थाना क्षेत्र के उनवल चौकी अंतर्गत -नगरपंचायत तथा गाँव में रात के अंधेरे में बेखौफ माफिया कर रहे खनन, मिट्टी खनन का कारोबार जोर पकड़ रहा है। अवैध खनन करने वाले माफिया बिना किसी डर के खनन कर रहे हैं। उसी क्रम में सतुआभार बसियखोर रावतडाड़ी सहिदाबाद के क्षेत्र खंडहर में तब्दील हो रहे है । स्थानीय लोगों के मुताबिक खनन का काम जोरों पर चल रहा है। जिससे रोड से लेकर खेत तक में गड्ढे होते जा रहे है, बारिश के दिनों में गड्ढों में पानी भर जाने से आवागमन पर भी असर पड़ सकता है वही राहगीरों का निकलना मुश्किल हो व सोना दुभर हो रहा है, नगर वासीयों एवं ग्रामिणों के मुताबिक

नाबालिग लडके ट्रैक्टर चला रहे हैं जिनका न ड्राईविंग लाइसेंस बना है ना की चलाने का कोई अनुभव जिम्मेदार अंजान बने हूए है. खजनी थाना क्षेत्र उनवल चौकी अंतर्गत विगत दिनों में खनन विभाग एव राजस्व विभाग द्वारा नगर पंचायत एवं क्षेत्र के गांव में जाकर अवैध खनन करने वालों को पकड़कर कार्य वाही तो कर नहीं पा रहा है, लेकिन जो लोग रोज धड़ल्ले से उनवल क्षेत्र को बेखौफ होकर छनली कर रहे है, उन पर कार्रवाई करने का साहस नहीं दिखा पा रहा है। उनवल हो या फिर जरलही या भिउरी का इलाका क्षेत्र के चारों दिशाओं में खनन माफिया सक्रिय है, बस निष्क्रिय कोई है तो वो खनन विभाग एवं राजस्व विभाग।उक्त सम्बंन्ध में जिला खनन अधिकारी से बात करने पर उन्हेंने कहा कि खनन कर रहे लोगों को चिन्हित कर कार्यवाई की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

गांव में सभी परिवारों की फैमिली आईडी बनाने का काम शुरू

फैमिली आईडी के अनुसार ही गांव के नीवासियों को चिन्हित किया जाएगा रमेश शुक्ला

खजनी – गोरखपुर गांवों में रहने वाले सभी परिवारों की फैमिली आईडी बनाने का काम तेजी से शुरू हो गया है। खजनी ब्लॉक मुख्यालय में ग्राम सभा सचिवों के साथ बैठक के दौरान खण्ड विकास अधिकारी रमेश शुक्ला ने फैमिली आईडी का कार्य तेजी से पूरा कराने का निर्देश देते हुए बताया कि एक परिवार में परिवार के मुखिया के बाद सभी सदस्यों के नाम शामिल किए जाएंगे। उन्होंने बताया कि सभी सरकारी योजनाओं का लाभ पाने के लिए सभी के लिए अपनी फैमिली आईडी बनाना जरूरी है। आने वाले समय में फैमिली आईडी के अनुसार ही गांव के निवासियों को चिन्हित किया जाएगा, जिसमें परिवार के सभी सदस्यो को उनके आधार कार्ड से लिंक किया जाएगा। गांवों के पंचायत सहायकों के सहयोग से इसे तेजी से पूरा कराना है। आगामी 15 मई तक गांवो में कैंप लगाकर इसे तेजी से पूरा कराने के निर्देश दिए गए हैं । इस संदर्भ में बीडीओ खजनी रमेश शुक्ला ने बताया कि ब्लॉक के सभी गांवों की फैमिली आईडी का डाटा जिले पर भेजा जाएगा।

नाबालिग को बहला-फुसलाकर भगा ले जाने व दुष्कर्म करने का आरोपी गिरफ्तार

नाबालिग अपहृता/पीड़िता पूर्व में सकुशल बरामद

भदोही- थाना भदोही क्षेत्र अंतर्गत वादिनी मुकदमा की पुत्री को आरोपी द्वारा बहला-फुसलाकर भगा ले जाने की घटना के संबंध में प्राप्त सूचना पर दिनांक-18.03.2025 को मु0अ0सं0-137/2025 धारा-87 भारतीय न्याय संहिता का अभियोग पंजीकृत कर विवेचनात्मक कार्यवाही प्रचलित की गई। पंजीकृत अभियोग से संबंधित अपहृता को दिनांक 30.04.2025 को बरामद किया गया तथा साक्ष्य संकलन, मेडिकल परीक्षण व बयान के आधार पर विवेचना के क्रम में दुष्कर्म की घटना प्रकाश में आने पर उक्त अभियोग में धारा-137(2),64(2)(ड) भा0न्या0सं0 व 3/4 पाक्सो एक्ट की बढ़ोत्तरी किया गया । अभिमन्यु मांगलिक,पुलिस अधीक्षक भदोही द्वारा यवांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी व महिला सम्बन्धित अपराध में त्वरित कार्यवाही हेतु निर्देश के क्रम में आज दिनांक-04.05.2025 को स्थानीय पुलिस टीम द्वारा उक्त अभियोग से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त दीपक बिन्द पुत्र प्रदीप बिन्द निवासी गंगापुर थाना व जनपद भदोही उम्र करीब 20 वर्ष को अभियुक्त के घर से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही करते हुए चालान सम्बन्धित मा0 न्यायालय किया गया।

ट्रेनी प्लेन क्रैश हाने से बाल-बाल बचा पायलट

अलीगढ़। थाना महुआखेड़ा क्षेत्र के धनीपुर हवाई पट्टी पर एक ट्रेनी प्लेन क्रैश हो गया जिसमें पायलट बाल-बाल बचा है। बताया जा रहा है कि यह प्लेन एयरपोर्ट की दीवार से जा टकराया। हादसा उस वक्त हुआ जब ट्रैनी पायलट ट्रेनिंग ले रहा था। इस हादसे के जांच के आदेश दे दिए गए हैं। प्लेन क्रैश होने की सूचना मिलने पर मौके पर पहुंचे अधिकारियों ने हादसे का जायजा लिया। बताया जा रहा है कि धनीपुर हवाई पट्टी पर पायनियर फ्लाइंग क्लब प्रशिक्षण देता है। विमान के अंदर बैठे पायलट की पहचान परव जैन के दौर पर हुई है। वह सोलो प्रशिक्षण ले रहा था, उनका विमान उतरते समय एयरपोर्ट की दीवार से टकरा गया। नागरिक उद्यान विभाग के एसएस अग्रवाल ने बताया कि प्रशिक्षु सोलो पायलट परव जैन सुरक्षित है। अग्रवाल ने बताया कि विमान में किसी प्रकार की कोई आग नहीं लगी है। केवल विमान क्षतिग्रस्त हुआ है।

संक्षिप्त खबरें

पागल सियार के हमले में दो महिला समेत तीन घायल, फैली दहशत

बरेली/क्योलड़िया गन्ने के खेत से निकले पागल सियार ने दो महिलाओं और एक युवक पर हमला कर दिया। हमले में दोनों महिलाएं और युवक गंभीर घायल हो गए। ग्रामीणों और स्वजन ने घायलों का उपचार कराया। हमले का वीडियो वायरल हुआ तो ग्रामीण तेंदुए के हमले का बताने लगे। वन विभाग को भी इसकी सूचना दी गई। क्योलड़िया के बबुरी गांव की राम प्यारी,तारा वती,अन्य महिलाओं के साथ गेहूं की बाली बीनने खेतों पर गई। उनके साथ युवक भी खेतों पर थे। बताया जा रहा है कि शनिवार को 4 बजे के करीब गन्ने के खेत से निकले पागल सियार ने महिलाओं पर हमला कर दिया। हमले में राम प्यारी, तारा वती के साथ वीरपाल में भी गंभीर रूप से घायल हो गए। चीख पुकार मची तो खेतों पर काम कर रहे अन्य ग्रामीणों ने शोर मचाया तो पागल सियार भागा। ग्रामीणों ने घायलों का उपचार कराया। इस दौरान एक वीडियो वायरल हो गया जिसमें एक महिला गंभीर रूप से घायल थी उसका हाथ जख्मी था। और वह जोर जोर से अपने जख्मी हाथ को देखते हुए रो रही थी। लोगों ने इसे तेंदुआ के हमले का बताया। बाद में पता चला कि वीडियो में घायल महिला को सियार ने काटा था। इसकी सूचना वन विभाग को भी दी गई। पागल सियार की गांव में दहशत फैल गई।

जातिगत जनगणना करवाने में बीजेपी ओबीसी मोर्चा की महत्वपूर्ण भूमिका - भूपेंद्र मोदी

लखीमपुर खीरी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार जताने के लिए जिला अध्यक्ष बीजेपी ओबीसी मोर्चा भूपेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा जिला कार्यालय पर जातिगत जनगणना करवाने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फैसले पर बीजेपी कार्यालय पर पटाखे छुड़ाए गए व मिठाई का वितरण किया गया। इस मौके पर भाजपा ओबीसी मोर्चा के जिला अध्यक्ष भूपेंद्र मोदी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह निर्णय साहसिक है।इससे ओबीसी समाज को एक नई पहचान और अधिकार मिलेगा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ओबीसी समाज को एक बड़ा अवसर दिया है। जिससे जातीय गणना करने से विशेषकर भारत के पिछड़े व अति पिछड़े वर्ग के लोगों को अपनी संख्या की पहचान मिलेगी उसी अनुपात से संवैधानिक अधिकारों को पाने का अवसर भी मिलेगा,। और मोदी ने कहा कि केंद्रीय कैबिनेट में 27 पिछड़े सांसदों को मंत्री बनाना जैसे महत्वपूर्ण निर्णय प्रधानमंत्री के नेतृत्व में लिए गए हैं। इस अवसर पर जिलाध्यक्ष भाजपा सुनील सिंह जिला उपाध्यक्ष कुलभूषण सिंह जिला महामंत्री राम जी मौर्य जिला महामंत्री आशु मिश्रा जिला मंत्री उमेश शुक्ला जिला संयोजक आईटी अंकित अवस्थी जिला मंत्री ओबीसी राकेश जायसवाल जिला मंत्री ओबीसी ब्रह्मदिन राजपूत जिला मंत्री ओबीसी मनजीत कश्यप नगर अध्यक्ष ओबीसी मुकेश कश्यप जिला सोशल मीडिया प्रभारी अनिरुद्ध वर्मा एवं रवि शर्मा प्रजानंद वर्मा आदित्य मनार दुर्गेश प्रजापति आदि लोग उपस्थित रहे।

शादी में दहेज बना बाधा शादी से 8 दिन पहले टूटा रिश्ता

शाहजहांपुर- जनपद के थाना कलान क्षेत्र में दहेज की अतिरिक्त मांग के चलते एक शादी टूट गई। लालपुर ढका की रहने वाली हीरा कश्यप ने अपनी बेटी की शादी बदायूं जिले के रसूलपुर निवासी रोहित कश्यप से तय की थी। शादी 7 मई को होनी थी और कार्ड भी बंट चुके थे।और वही पीड़िता की मां ने बताया कि गोद भराई में उन्होंने लड़के को डेढ़ तोला सोने की चेन, एक सोने की अंगूठी और कपड़े दिए। साथ ही 51,000 रुपए नकद और लड़के की दादी को सोने की अंगूठी दी। गोद भराई में आए 20 मेहमानों को एक लाख रुपए की दक्षिणा भी दी गई। लग्न में एक लाख रुपए नकद के साथ सामान और मिठाइयां भी भेजी गई।और वही महिला ने बताया कि 29 अप्रैल की शाम को वर पक्ष ने फोन कर 3 लाख रुपए नकद और एक चार पहिया वाहन की अतिरिक्त मांग रख दी। मांग पूरी न होने पर उन्होंने रिश्ता तोड़ने की धमकी दी और 7 मई को बारात न लाने की बात कही,वही अब पीड़ित परिवार अब तक शादी की तैयारियों में करीब 3 लाख रुपए खर्च कर चुका है। समाज में बदनामी से परेशान परिवार ने पहले थाना कलान में शिकायत की। पुलिस द्वारा कार्रवाई न करने पर जलालाबाद क्षेत्राधिकारी अमित चौरसिया को प्रार्थना पत्र सौंपकर न्याय की गुहार लगाई है।

बिना फिटनेस और परमिट के फर्राटा भर रहे स्कूली वाहन

स्वतंत्र प्रभात

लखीमपुरखीरी जनपद मे संचालित सैकड़ो प्राइवेट स्कूलों मे बच्चों को लाने ले जाने वाले वाहन नियम कानून को ताकपर रख कर बगैर फिटनेस बीमा तथा परमिट के सड़को पर फर्राटा भरते देखे जा रहे हैं जिसकी एक झलक निघासन ब्लॉक क्षेत्र के "एब्लॉन पब्लिक स्कूल" में देखी जा सकती हैं।जहां बच्चों को लाने-लेजाने के लिए स्कूल प्रबंधन की ओर से ल गाए गए वाहनों के फिटनेस परमिट नहीं हैं। फिर भी यह सड़क पर बेखौफ होकर फर्राटा भर रहे हैं। इनको चलाने वाले कई ड्राइवरों के पास लाइसेंस भी नहीं है। मगर वह बिना लाइसेंस के ही तीन और चार पहिया वाहन चला रहे हैं।ऐसे आरोप कई क़स्बा बासियो ने लगाए हैं।जब कभी स्कूली वाहनों से हादसे होते हैं तो जांच और जागरूकता की बात तो होती है। लेकिन, इस पर काम सिर्फ कागजों में ही होता है।क्षेत्र में बिना फिटनेस, परमिट के यह स्कूली वाहन बच्चों की जान जोखिम में डालकर सड़कों पर दौड़ लगा रहे हैं लेकिन, कार्रवाई तो दूर अब तक इन पर लगाम कसने के लिए विभाग ने कोई ठोस कदम नहीं उठाए हैं। परिवहन विभाग सिर्फ वाहन संचालकों प्रबंधकों को नोटिस भेजकर कार्रवाई का कोरम पूरा कर ले रहा है।क्षेत्र के अनेकों स्कूली वाहन बच्चों को घर से स्कूल लाने और वापस पहुंचाने के कार्य में लगे हैं। स्कूल के अधीन चलने वाले वाहनों के एवज में स्कूल प्रबंधन अभिभावकों से मनमानी फीस भी वसूल करता है। लेकिन, वाहन फिट हैं या नहीं, वाहन के अंदर अग्निशमन यंत्र व फर्स्ट एड बॉक्स है या नहीं, इसे देखने की जहमत कोई नहीं करता। इनकी जांच के लिए विभाग जरूर है, लेकिन उनकी जांच-पड़ताल सिर्फ अभियान के दिनों में ही होती है। वाहन ही फिट नहीं तो इसमें बैठने वाले बच्चे कितने सुरक्षित होंगे, इसको आसानी से समझा जा सकता है। यही नहीं बोलेरो, जीप, टेंपो जैसी कुछ प्राइवेट गाड़ियां जो थोड़ा पुरानी हैं और इनका चलन धीरे-धीरे खत्म होता जा रहा है। वह भी इन स्कूलों में धड़ल्ले से बच्चों को लाने-लेजाने के लिए इस्तेमाल की जा रही हैं।क्षेत्रीय लोगों का कहना है कि सब सेटिंग का खेल है। जो गाड़ी रोड पर बिना परमिट, फिटनेस के चल रही है, उसके बारे में कौन नहीं जानता है।

हैदराबाद विद्युत उपकेंद्र से जुड़े लगभग 150 गांवों में 15 घंटे से अधिक बिजली गुल

● छाया अंधेरा लोगों में मचा त्राह माम त्राह माम।

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। विद्युत उपकेंद्र हैदराबाद से संचालित अजान फिडर से जुड़े लगभग 150 गांवों की बिजली सप्लाई ओवर लोडिंग के चलते ठप हो गई। जिसकी वजह से 24 घंटे से गांवों में अंधेरा छाया हुआ है। ऐसे में लोगों के घरों में लगे विद्युत उपकरण भी जवाब दे गए हैं और लोगों के घरों में पानी की समस्या हो गई। विद्युत सप्लाई चालू न होने की वजह से ग्रामीणों में आक्रोश बढ़ना स्वाभाविक है। हैदराबाद विद्युत उपकेंद्र से जुड़े अजान सुहेला ,इमलिया ,मुगला खेड़ा,कोरैया, मझिगवां,बगहा,परसेहरा, बघेल ,सहित लगभग 150 गांवों में बिजली आपूर्ति बाधित होने से ग्रामीणों को परेशानी हो रही है। पिछले दो हफ्तों से बिजली ओवर लोडिंग के चलते बिजली हर पांच मिनट में ट्रपिंग हो रही है। हद तो तब हो गई जब शनिवार की देर शाम करीब 11 बजे के बाद से इन गांवों में बिजली आपूर्ति पूरी तरह ठप हो गई। पहले तो उपभोक्ताओं को लगा कि जल्द ही सप्लाई बहाल हो जाएगी, लेकिन यह उम्मीद सपना बनकर रह गई। पूरी रात अंधेरे में गुजारने के बाद रविवार सुबह पानी की किल्लत से लोग बेहाल हो गए। इन्वर्टर और मोबाइल डिस्चार्ज होने से लोग इधर-उधर चार्जिंग के लिए भटकते रहे। बिजली बहाली की उम्मीद में उपभोक्ता रविवार दोपहर 12 बजे तक इंतजार करते रहे, लेकिन 15 घंटे बाद भी सप्लाई शुरू नहीं हुई।इस सम्बन्ध में एसडीओ पवन कुमार ने बताया कि मुझे जानकारी नहीं है, बिजली चोरी की जा रही है। जिसके चलते ओवर लोड हो रहा है ,कुछ गांवों की लाइन खोल कर दूसरे फीडर में जोड़ी जा रही है, इसके बाद लोड कम हो जायेगा। जल्द ही सप्लाई बहाल की जाएगी।

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दू परिषद राष्ट्रीय बजरंग दल गोला नगर की संपन्न बैठक में नवीन कार्यकारिणी का गठन किया

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। स्थानीय नगर की खुटार रोड निकट यूको बैंक के पास अंशु वर्मा कंप्यूटर्स स्थान पर राष्ट्रीय बजरंग दल के जिला अध्यक्ष राकेश कनौजिया की अध्यक्षता में व एप्रचपी कार्यवाहक जिला अध्यक्ष अंशु वर्मा के नेतृत्व में गोला नगर ईकाई की आयोजित बैठक में नगर कार्यकारणी गठित की गई।जिला अध्यक्ष श्री कनौजिया ने आकाश बजरंगी नगर अध्यक्ष के स्थान पर उन्नत करते हुए गोला विधानसभा अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। रामनिवास गुप्ता को नगर संयोजक के पद पर व प्रमोद गुप्ता को नगर अध्यक्ष, प्रेमचंद को कार्यवाहक नगर अध्यक्ष,जितेंद्र कुमार को वरिष्ठ नगर उपाध्यक्ष, विनय अवस्थी को कनिष्ठ नगर उपाध्यक्ष,विकास कनौजिया को नगर मंत्री,प्रेमचंद राठौर को गोला तहसील मंत्री पद पर नियुक्त किया गया।बैठक में जिला महामंत्री प्रदीप जायसवाल, अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष अंशु वर्मा, जिला उपाध्यक्ष एप्रचपी अंकित वर्मा, जिला संयोजक अशोक जायसवाल, जिला मंत्री श्री मनोज वर्मा और सोनू शाह,प्रेमचंद राठौर,हर्षित गुप्ता,दिलीप कुमार गुप्ता,प्रमोद कुमार गुप्ता,विनय अवस्थी, विजय त्रिवेदी करुणेश त्रिवेदी,मनोज शुक्ला,ठाकुर पंकज सिंह आदि दर्जनों पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

गन्ना उत्पादकता बढ़ाने के लिए पेड़ी प्रबन्धन पर जोर देते हुए गोष्ठी आयोजित

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। बजाज हिन्दुस्तान शुगर लिमिटेड इकाई गोला द्वारा पेड़ी प्रबन्धन,गन्ना रकबा सर्वेक्षण एवं कीट नियंत्रण हेतु मिल गेट परिक्षेत्र के ग्राम मुड़ाअस्सी में प्रगतिशील कृषक पीताम्बर लाल वर्मा की अध्यक्षता में एक कृषक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें वरिष्ठ महाप्रबन्धक पी एस चतुर्वेदी,ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक गोला आशुतोष मधुकर सहित लगभग 120 कृषकों ने भाग लिया।वरिष्ठ महाप्रबन्धक ने कृषकों को बताया कि पेड़ी प्रबन्धन में तत्काल सिंचाई कर 1.5 बैग (75 किलोग्राम) यूरिया प्रति एकड़ डाले तथा गुड़ाई के साथ सुपर फॉस्फेट व पोटाश का प्रयोग करने की सलाह दी। साथ ही अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिये रिक्त स्थानों को भरने व पुरानी जड़ों को तोड़ने की सलाह दी।,पेड़ी में निकाई गुड़ाई द्वारा खरपतवार नियंत्रण करने तथा बरसात से पहले पेड़ी में मिट्टी अवश्य चढ़ाने की सलाह दी गयी जिससे अवांछित कल्ले न निकले और जो कल्ले निकले हैं वह सभी गन्ने बनते हैं और पैदावार अधिक मिलती है। फफूंदी जनित बीमारियों के लिए फफूंद नाशक प्रिज्म (थायोफेनेट मिथाइल) का स्प्रे तथा कीट नियंत्रण के लिए कीटनाशक एमिडा क्लोरप्रिड का प्रयोग करने की सलाह दी। इसी क्रम में ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक गोला ने गन्ना विकास परिषद में चल रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी तथा उनमें देय अनुदान तथा समिति में उपलब्ध फार्म मशीनरी बैंक में उपलब्ध यंत्रों को किफायती दरों पर किराये पर ले जाकर उपयोग कर अधिक से अधिक लाभ कमाना तथा ड्रिप सिंचाई एवं पंचामृत खेती इत्यादि के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी दी।मंच संचालन कर रहे प्रबन्धक गन्ना सत्येन्द्र कुमार मिश्र ने सबसे अधिक नुकसानदायक कीट टॉप बोरर के नियंत्रण हेतु सुपर सिक्सर/ कोराजन अथवा टुबेन्टा की ड्रिन्चिंग अवश्य करने की सलाह दी। इसके अतरिक्त पायरिला कीट तथा उसके पैरासाइट की पहचान की जानकारी दी तथा यह भी बताया कि गन्ना सर्वेक्षण का कार्य चल रहा है सभी किसान भाई अपने अपने खेत पर उपस्थित रहकर अपना अपना गन्ना रकबा अवश्य सर्वे करवा लें, जिससे कि पेराई सत्र में गन्ना आपूर्ति करने में सर्वे संबंधी किसी भी प्रकार की समस्या न हो। इस अवसर पर उप प्रबन्धक(गन्ना) गन्ना राजेश कुमार मिश्र, सहा0 अधिकारी(गन्ना) रावेन्द्र कुमार, विकास मिश्र, राधेश्याम (मोराश कम्पनी), प्रगतिशील कृषक शिवा जी वर्मा, उपदेश अवस्थी, रामकुमार वर्मा,रमाकान्त शुक्ल, मालती प्रसाद वर्मा, यज्ञ दत्त प्रजापति, रामकिशोर मौर्या सहित मिल व समिति के सुपरवाइजर उपस्थित रहे।

टक्कर से बाइक सवार की मौत,एक घायल

● खुटार पूरनपुर हाइवे पर गुरधिया गांव की मोड पर हुआ हादसा

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर। थाना खुटार क्षेत्र में पूरनपुर रोड पर प्लेटिना बाइक पर सवार दो युवकों को तेज रफ्तार से आए एक वाहन ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे बाइक सवार एक युवक सड़क पर ही गिर गया। जबकि उसका दूसरा साथी उछलकर काफी दूर सड़क के किनारे खाई में जा गिरा। राहगीरों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खुटार पहुंचाया। जहां डाक्टर ने एक को मृत घोषित कर दिया। दूसरे युवक को गंभीर हालत में जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया है। दोनों की अभी तक पहचान नहीं हो पाई है। पुलिस दोनों के पास से मिले मोबाइल फोन के आधार पर मृतक युवक की पहचान कपिल 23 पुत्र धर्मेंद्र मुरादपुर सबलपुर पूरनपुर जनपद पीलीभीत व घायल युवक की पहचान मुकेश 24 पुत्र मिश्रीलाल सिहरा खुर्द कलां थाना खुटार के रुप में की। ये दोनो खुटार के ही लौंहगापुर भट्ठा पर काम करते थे और खुटार की शनिवार की बाजार से खरीददारी करके वापस भट्ठे पर जा रहे थे। तभी ये हादसा हो गया।हादसे की खबर लगते ही दोनो के परिवार के लोग भी अस्पताल पहुंच गए है।

संविदा कर्मी को निकाला गया तो सामूहिक रूप से दिया जाएगा इस्तीफा

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर। संविदा कर्मियों के प्रांतीय अध्यक्ष नवल किशोर ने जानकारी देते हुए बताया कि यदि उत्तर प्रदेश सरकार संविदा कर्मियों की छटनी करेगा। तो सामूहिक रूप से दे देंगे इस्तीफा। उन्होंने बताया संविदा कर्मी मजबूर होंगे।संविदा कर्मियों की छंटनी के विरोध में उत्तर प्रदेश विद्युत संविदा मजदूर संगठन इसी 5 मई को मध्यांचल के सभी जिलों जिसमें बरेली, बदायूं, पीलीभीत एवं शाहजहांपुर शामिल हैं पर एक दिवसीय सत्याग्रह एवं कार्य बहिष्कार करेगा। वहीं 7 मई को लखनऊ स्थित मध्यांचल मुख्यालय पर अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल किया जाएगा। जबकि आज शनिवार को संगठन के प्रांतीय अध्यक्ष नवल किशोर सक्सेना द्वारा निर्णय लिया गया है कि 5 मई को कार्य बहिष्कार के साथ ही मंडल भर के सभी संविदा कर्मी सायं 4 बजे अपने अपने क्षेत्रों के अधीक्षण अभियंता व अधिशासी अभियंता अथवा चीफ को सामूहिक तौर पर इस्तीफा देंगे।

नहर मे पानी कम आने से सूख रही गन्ना की फसल

मितौली खीरी किसानो की गन्ने की फसल की सिंचाई के समय नहर में पानी का संचालन कम होने के कारण किसानो की गन्ने की फसल की सिंचाई नहीं हो पा रही है. हाल ही में कुछ दिन पहले सीतापुर रजबहा प्रखंड द्वितीय में पानी का संचालन तो किया गया किंतु पानी का संचालन मानक के अनुरूप न होने के कारण कुलाबों से पानी ही नहीं निकला. किसान कुलाबों से पानी निकालने का इंतजार करते हुए ही रह गए तब तक नहर में पानी का संचालन बंद होने का समय आ जाएगा. साधन संपन्न किसानों द्वारा तो निजी ट्यूबेलो से अपनी फसलों की सिंचाई कर ली गई किंतु मध्यम वर्ग के किसान जिस क्षेत्र में निजी ट्यूबवेल भी नहीं है उन किसानों की गन्ने की फसलों की सिंचाई आज तक नहीं हो पा रही है गन्ने की फसल सिंचाई के अभाव में सूखती हुई नजर आ रही है क्षेत्रीय किसान नहर का सहारा लगाए हुए बैठे हैं क्षेत्रीय किसानों ने जिला अधिकारी खीरी एवं सिंचाई विभाग के उच्च अधिकारियों से शीघ्र ही सीतापुर रजबहा खंड द्वितीय में पानी का संचालन कराए जाने की मांग की है।

बिहारीपुर में दिखा तेंदुआ,वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची पकड़ने वन विभाग नाकाम

स्वतंत्र प्रभात

बरेली/क्योलड़िया15 दिन बाद बीत जाने के बाद भी वन विभाग की टीमें खाली हाथ हैं। क्षेत्र में वन विभाग की तीन टीमें तेंदुए को पकड़ने को अभियान छेड़े हुए हैं। लेकिन तेंदुआ हाथ नहीं लग रहा है। ग्रामीणों ने बिहारीपुर प्रीतम राम,और दलेल नगर गांव में तेंदुए की सूचना वन विभाग को दी। टीम मौके पर पहुंची और सर्च अभियान चलाया। लोगों में दहशत का माहौल है। 18 अप्रैल को बिहारीपुर अब्दुल रहमान गांव में तेंदुए ने किसान अरविंद पर हमला कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। सूचना पर डीएफओ दीक्षा भंडारी ने गांव में पिंजड़ा भेज कर वन विभाग की पांच टीमों को गांव में जीपीएस कैमरे और वॉच टॉवर से निगरानी करने के निर्देश दिए। घटना के बाद से वन विभाग की टीमों के पास हर रोज तेंदुआ होने की सूचनाएं आती हैं। टीमें मौके पर जांच पड़ताल करते हुए सर्च।

अभियान चला रही हैं। लेकिन अभी तक कोई ठोस नतीजा नहीं निकल सका है। वन रेंजर आनंद सिंह का मानना है कि अभी तक तेंदुआ होने के जरूरी साक्ष्य नहीं मिलने के कारण पिंजड़ा नहीं लगाया गया है। इस बीच गांव बिहारीपुर प्रीतम राम के प्रधान जयवीर वर्मा और अन्य ग्रामीणों ने गांव में तेंदुआ होने की सूचना विभाग और पुलिस को दी तो मौके पर टीम ने पहुंच कर जांच पड़ताल और सर्च अभियान चलाया। गांव दलेल नगर में भी तेंदुआ होने की सूचना पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और सर्च अभियान चलाया। टीम ने कांबिंग भी की। लेकिन टीम को कोई सफलता नहीं मिल सकी। तेंदुआ देखे जाने पर ग्रामीणों में दहशत फैल गई। गांव बिहारीपुर प्रीतम गांव के प्रधान जयवीर वन विभाग के दरोगा के साथ पहुंचे।

नगर पालिका मे भ्रष्टाचार होने के विरोध में नौ सभासदों ने सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात

मोहम्मदी नगरपालिका में आए दिन हो रहे भ्रष्टाचार का विरोध सभासद करते नजर आते है। इस से पहले भी नौ सभासदों ने 21.4,,.2025, को होने वाली वार्षिक बजट मीटिंग का बहिष्कार किया था। जिससे वित्तीय बजट मीटिंग का कोरम अपूर्ण रहा था मीटिंग में मात्र 16 सभासद ही उपस्थित थे इसलिए, वित्तीय बजट मीटिंग शून्य रह गई थी। और भी कई विषय है जो मोहम्मदी नगरपालिका भ्रष्टाचार के मामले में चर्चा में बनी रहती है। आज फिर नौ सभासदों ने हो रहे भ्रष्टाचार के विरुद्ध में एक शिकायत पत्र जिलाधिकारी को सौंपा। (1) नगर पालिका परिषद में कार्यरत लड़कियां साक्षी रस्तोगी व जागृति रस्तोगी मोहम्मदी महाविद्यालय मोहम्मदी की संस्थागत छात्राएं हैं, जो कि नगर पालिका परिषद में अपनी सेवाएं दे रही हैं। जिसकी शिकायत हम सभासदों द्वारा की गई थी जिसमें सेवा प्रदाता कम्पनी द्वारा नोटिस भी जारी किया गया परन्तु फिर भी उक्त दोनों लड़कियां नगर पालिका में कार्यरत हैं। (2), नगर पालिका परिषद में कार्यरत शिवनंदन रस्तोगी जो प्रधान लिपिक पद से रिटायरमेंट 60 वर्ष की आयु में वर्ष 2014 में हो गया थे। रिटायरमेंट के बाद 2 साल का सेवा विस्तार किया जा सकता है, उसके बाद भी वह 8 वर्ष से नगर पालिका में कार्यरत हैं जो कि नगर पालिका सेवा नियमावली 1996 का उल्लंघन है। (3), प्रदीप कुशवाहा नगर पालिका मोहम्मदी में कार्यत है जबकि उनके द्वारा जन सेवा केंद्र संचालित किया जाता है और उनके स्थान पर इसी नगर पालिका में सेवा नियुक्त उनके पिता के0 एल0 कुशवाहा कार्य कर रहे हैं जो कि नियम के विरुद्ध है। (4) नगर पालिका परिषद द्वारा आहूत मीटिंग दिनांक 21,4, 2025 को हम नौ सभासदों ने अनुपस्थित रहकर मीटिंग का बहिष्कार किया था। मीटिंग में कुल 16 सभासद ही उपस्थित थे जो की कोरम पूरा करने के लिए दो तिहाई सभा सदस्यों की आवश्यकता थी जिसके तहत 17 सभासदों की उपस्थिति अनिवार्य थी जो कि नहीं हो सकी थी। इसलिए कोरम के अभाव में वार्षिक वित्तीय बजट मीटिंग 0 थी।फिर भी केवल 16 सभासद की उपस्थिति में वार्षिक वित्तीय बजट मीटिंग कैसे पास हो गई जांच की जाए ये जांच का विषय है। (5), नगर में नाला सफाई का कार्य किया जा रहा है जो की मानक के अनुसार नहीं किया जा रहा है जिससे सरकारी धन का दुरुपयोग हो रहा है। (6), नगर में जलभराव की बहुत ही बड़ी समस्या है जिससे थोड़ी ही बरसात में नगर के सदके जलमग्न हो जाती है और आम जनमानस को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है। नगरपालिका जलभराव की तरफ बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते है (7,) नगरपालिका परिषद में उपस्थिति रजिस्टर के साथ मनमानी तरीके से छेड़खानी की जाती है जिसको जहां चाहा जाता है उसको उपस्थित दिखाया जाता है और रजिस्टर के पन्नों के साथ छेड़छाड़ की जाती है। जिसके साक्ष्य प्रार्थना पत्र के साथ संलग्न है (8), शासन देश के अनुसार नगर पालिका के ठेका कर्मचारियों का चयन जिला द्वारा नामित समिति के अधिकारी द्वारा की जाती है एवं उसका अध्यक्ष उपजिलाधिकारी होते हैं कर्मचारियों को रखने एवं निकालने का अधिकार समिति अध्यक्ष के पास होता है ना कि नगर पालिका अध्यक्ष के पास। जब की नगर पालिका अध्यक्ष मनमाने तरीके से कर्मचारियों को चयनित एवं निकालने का काम करते हैं। शासनादेश की कॉपी प्रार्थना पत्र के साथ संलग्न है।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने फूंका पुतला

शाहजहांपुर जलालाबाद- परशुराम पुरी के मेन चौराहे पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ता नारेबाजी करते हुए पहुंचे, पहुंचे कार्यकर्ताओं ने बने हुए पुतले के जमकर जूता चप्पल एवं लाठी डंडे मारे और जमकर विरोध प्रदर्शन किया उसके बाद नगर के मुख्य चौराहे पर आतंकवाद का पुतला होगा और आतंक बाद पाकिस्तान के खिलाफ जमकर नारे बाजी की और उसके बाद आतंक बाद का पुतला दहन किया, जलालाबाद के मुख्य चौराहे पर पुतला दहन करने के दौरान जिला मे डिविजन संयोजक जितेन्द्र पाल, छात्र नेता संजय गुप्ता, तहसील संयोजक जय श्रीवास्तव, नगर सह मंत्री शिवा सक्सेना, रचित वर्मा, प्रियांशु गुप्ता, साहिल, प्रभात, संगम, बंटू, आयुष, अजय, यश गोतम, शिवांश, अंकित, आदि कार्यकर्ता मोजूद रहे।

जिले में हाईस्कूल परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली छात्रा का डा.कौशल वर्मा ने किया सम्मान

स्वतंत्र प्रभात

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। स्थानीय सनसाइन ग्रुप ऑफ हॉस्पिटल्स के डायरेक्टर डा.कौशल वर्मा ने हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा मे जिले मे प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली प्रतिभाशाली छात्रा प्रियांशी वर्मा को उनके लखीमपुर आवास पर जा कर सम्मानित कर माता और पिता को बधाई दी है।टापर छात्रा को शील्ड, मिठाई, और सम्मान राशि भेंट की और छात्रा के पिता को गीता भेंट की। छात्रा भविष्य में डॉक्टर बनना चाहती है। जिसके लिए डॉक्टर साहब ने उसका मार्गदर्शन किया, और भविष्य मे सफलता हासिल करने के लिए प्रेरित किया।डा. कौशल वर्मा ने बताया शिक्षा जीवन व व्यक्ति की परिचायक है, इसलिये वह हर किसी को शिक्षा के लिये प्रेरित करते हैं। प्रियांशी वर्मा जो कि लखनऊ पब्लिक स्कूल की छात्रा है। पिता प्रदीप कुमार बी एस एन एल में,तरूहै। वहीं माता मीनू वर्मा होम मेकर है। प्रियांशी ने 98.25% मार्क्स प्राप्त करके न सिर्फ अपने माता पिता और स्कूल का बल्कि पूरे जनपद को गौरवान्वित किया है। प्रियांशी के माता पिता मूल रूप से लखीमपुर मे सीतापुर रोड पर ग्राम आधा चाट के निवासी हैं।इस अवसर पर कौशल किशोर वर्मा अध्यक्ष पटेल संस्थान लखीमपुर, शुभेंद्र सिंह भैया जी ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि बेहजम, अनुज सिंह पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष, इंजी अभिषेक वर्मा, सचिन प्रभाकर, आदर्श मिश्रा, अवधेश सिंह, रंजीत मौर्या, अविनाश गुप्ता आदि मौजूद रहे।

महामंडलेश्वर, का शिष्यों ने फूल बरसा कर किया स्वागत

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर जलालाबाद विधान सभा क्षेत्र गांव नौसारा लहसडी में बने श्री देवनारायण मंदिर देवभूमि योग साधना आश्रम के स्वामी सत्यदेव महाराज बने अंतरराष्ट्रिय सन्त ऋषि अखाड़ा के महामंडलेश्वर श्री देवनारायण मंदिर देवभूमि योग साधना आश्रम ग्राम नौसारा लहसडी ब्लाक मदनापुर,वाया जलालाबाद जिला शाहजहांपुर उत्तर प्रदेश के (पीठाधीश्वर) स्वामी सत्यदेव महाराज को अंतरराष्ट्रीय अखाड़ा परिषद में महामंडलेश्वर बनाया गया है,उनकी नियुक्ति पर क्षेत्र वासियों में खुशी की लहर देखने को मिली,आश्रम पर पधारने पर आज क्षेत्र वासियों ने उनका गर्म जोशी से स्वागत किया,उन्हें पटका वह फूल वाला पहना कर महाराज श्री का स्वागत किया,इस अवसर पर स्वामी सत्यदेव महाराज ने कहा कि मुझे अखाड़े द्वारा जो जिम्मेदारी सौंपी गई है,हम पूर्ण रूप से उसका निर्वहन करेंगे तथा सनातन धर्म की रक्षा के लिए पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे,उन्होंने अखाड़ा परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारी साधु संतों महंतों का आभार व्यक्त किया तथा अपने शुभचिन्तकों को आशीर्वाद दिया,इस अवसर पर क्षेत्र के समस्त सम्मानित प्रबुद्ध व्यक्ति उपस्थित रहे महाराज श्री को बधाई देने वालों का ताता लगा हुआ है,और इस अवसर पर मास्टर महिपाल सिंह मुखिया

विजयपाल सिंह कृष्णपाल नेताजी रामनिवास विकेश कुमार पप्पू लहसडी वीरपाल सिंह महावीर सिंह,रमनपाल शिवांकर सौरभ शैलेंद्र सिंह आकाश रंजीत आदि मौजूद रहे।

25 हजार का इनामी गिरफ्तार, तीन सगे भाइयों को मारी थी गोली

स्वतंत्र प्रभात

शाहजहांपुर- पुलिस ने एक बड़ी सफलता हासिल करते हुए 25,000 रुपये के इनामिया अभियुक्त शेरू को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार अभियुक्त ने तीन सगे भाइयों पर फायरिंग कर क्षेत्र में सनसनी फैला दी थी जिसमें से एक भाई की इलाज के दौरान मौत भी हो गई है। पुलिस ने बताया कि शेरू ने 28 अप्रैल को मोहल्ला अजीजगंज में एक मोमोज वाले ठेले के पास अखिलेश कुमार और उनके भाइयों के साथ विवाद किया था। इस दौरान शेरू और उसके साथियों ने फायरिंग की, जिसमें अखिलेश के भाई कमलेश और जितेंद्र घायल हो गए थे। इलाज के दौरान कमलेश की मौत हो गई थी। पुलिस ने शेरू की गिरफ्तारी के लिए कई टीमें बनाई थीं और उसकी गिरफ्तारी पर 25,000 रुपये का इनाम घोषित किया था। सोमवार को पुलिस ने शेरू को बरेली मोड़ साउथ सिटी के पास से गिरफ्तार किया। इस दौरान पुलिस और शेरू के बीच मुठभेड़ हुई, जिसमें शेरू के दोनों पैरों में गोली लगी। पुलिस ने शेरू के पास से एक तमंचा और कारतूस बरामद किया है। गिरफ्तार शेरू और घायल पुलिसकर्मी का इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है। पुलिस ने शेरू के खिलाफ आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है।

संक्षिप्त खबरें

कई वर्षो से गड्ढे में तब्दील पड़ी है सड़क नहीं हुआ आज तक रिपेयरिंग

गड्ढे में प्रतिदिन होता है दुर्घटना सड़क रिपेयरिंग की ग्रामीणों ने किया मांग

हलिया, मिर्जापुर। नैडी सुखणा सम्पर्क मार्ग से बरबसा गहरवार से होते हुए देवरीपुरब से नैडी अदवा सम्पर्क मार्ग मे जोड़ने वाली सड़क कई वर्षो से गड्ढे में तब्दील पड़ी है आज तक नहीं हो सका सड़क की रिपेयरिंग ग्रामीणों ने सड़क रिपेयरिंग की मांग करते हुए बताया कि गड्ढे में तब्दील सड़क पड़ी हुई है इस पर नहीं है पीडब्ल्यूडी के कर्मचारियों की नजर आए दिन गड्ढे में बाइक वाले साइकिल वाले गिरकर होते रहते हैं चोटिल हर गांव की सड़क में रिपेयरिंग का काम चल रहा है लेकिन इस सड़क पर नहीं है पीडब्ल्यूडी के कर्मचारियों का नजर ग्रामीणों का जिला प्रशासन से मांग है कि इस सड़क कर रिपेयरिंग करा कर सड़क को सुरक्षित बनाया जा सके जिससे आने जाने वाले यात्रियों को दिक्कत ना हो कई गांवों को जोड़ती है यह सड़क साथ ही साथ ग्रामीणों ने बताया कि पीडब्ल्यूडी के द्वारा सड़क की रिपेयरिंग मोबिल से नहीं बल्कि डामर से किया जाए जिससे सड़क कुछ दिनों तक सही सलामत चल सके ठेकेदारों के द्वारा डामर की जगह मोबिल का इस्तेमाल किया जाता है जिससे सड़क जल्द ही गड्ढे में तब्दील हो जाता है।

मां गंगा के अवतरण दिवस पर किया गया रुद्राभिषेक

चुनार, मिर्जापुर। उत्तर वाहिनीं मां गंगा सेवा समिति के तत्वाधान में गंगा उत्पत्ति के पावन अवसर पर रविवार को बालूघाट पर जीवन दायिनी पाप नाशिनी माता गंगा का रुद्राभिषेक सम्पन्न हुआ। पंडित शशिकांत मिश्रा शिवाकांत पाठक ,ज्ञान प्रकाश मिश्रा गोपीनाथ पांडे ने विधिवत पूजन अर्चन और आरती किया। तत्पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। रुद्राभिषेक में देवरिया के ग्राम प्रधान संतोष गुप्ता सपत्नीक का विशेष योगदान रहा । कार्यक्रम में घरवारपुर के नीरज सिंह, उत्तराखंड के भगवान दास बिंद विशेष रूप से सम्मिलित हुए।इस अवसर पर रामविलास साहनी,ऋषभ सिंह, मदन गुप्ता, वीरेंद्र साहू, महेंद्र वर्मा, रोहित साहनी, पवन प्रजापति, मन्नू लाल साहनी, प्रियांशु ,विशाल साहनी, बचाउ साहनी, मनोज केसरी, रामकृत साहनी, कविता मिश्रा, अर्चा मिश्रा, मंजू गुप्ता, आरती देवी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

अवैध तमंचा मय कारतूस के साथ एक अभियुक्त गिरफ्तार

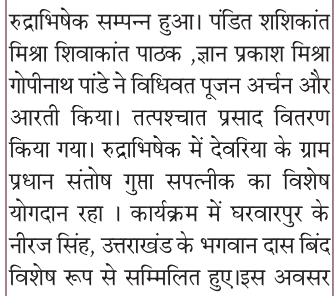

मीरजापुर। रविवार को "सोमेन बर्मा" वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा जनपद में अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों के विरूद्ध तथा अवैध शस्त्रों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान में कड़ी कार्यवाही करने हेतु जनपद के समस्त थाना प्रभारी निरीक्षक/थानाध्यक्षगण को निर्देश दिये गये है । उक्त निर्देश के अनुक्रम में शनिवार को उप-निरीक्षक भरतलाल पाण्डेय व भारत सिंह यादव मय पुलिस टीम द्वारा क्षेत्र में भ्रमणशील होकर की जा रही संदिग्ध व्यक्तियों/वाहनों के सघन चेकिंग के दौरान थाना को0देहात क्षेत्र से अभियुक्त झब्बू बिन्द पुत्र स्व0पन्नालाल निवासी लोहदीकलां थाना को0देहात जनपद मीरजापुर को गिरफ्तार कर 01 अदद अवैध तमंचा 12 बोर व 01 अदद जिन्दा कारतूस बरामद किया गया । उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बन्ध में थाना को0देहात पर मु0अ0सं0-183/2025 धारा 3/25 आयुध अधिनियम पंजीकृत कर नियमानुसार विधिक कार्यवाही करते हुए गिरफ्तार अभियुक्त को जेल भेजा गया ।

आजीविका जेहाद रोकना सनातन की सभी जातियों का नैतिक कर्त्तव्य - कृष्णा नन्द पाण्डेय

स्वतंत्र प्रभात

सीखड़, मीरजापुर। "धरोहर संरक्षण सेवा संगठन "द्वारा सनातन विस्तार के उद्देश्य को लेकर अनवरत चल रहे " संस्कृति संवाद यात्रा "की बैठक का (33 वाँ पड़ाव) सिटी मॉंटेसरी बालिका इण्टर कालेज, सरायनन्दन खोजवा वाराणसी में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रमुख समाज सेविका प्रियंवदा मिश्रा ने किया।मुख्य वक्ता संगठन के प्रमुख संयोजक कृष्णा नन्द पाण्डेय ने कहा हमारी आजीविका को हमारे ऋषिओं ने हमारी संस्कृति से जोड़ा,जो सनातन कर्म संस्कृति को मजबूत करता था,सनातन धर्म में सभी जातीयों के लिए अपना अलग व्यवसाय था मुगलों और अंग्रेजों के कुचक्र में में फसकर हम अपने व्यवसाय को छोटा समझ कर छोड़ते गए और कमजोर हो गए,हमारे व्यवसाय पर विधर्मियों का कब्जा हो गया,दुनिया का कोई संविधान अपने एक एक लोगो को व्यवसाय नहीं दे सकता,हमारे शास्त्र का संविधान वर्तमान व भविष्य में अपने एक एक लोगो को व्यवसाय देने की गारण्टी देता था सनातन धर्म की हर जाति के लोगो को आगे आकर अपनी आजीविका को आजीविका जेहाद से बचाना होगा।वक्ताओं में अर्जुन मौर्य ने कहा जनसंख्या असन्तुलन धर्मान्तरण, पलायन तीनों बहुत बड़ी समस्या है जिसको जनजागरण के द्वारा ही रोका जा सकता है अन्यथा सनातन कमजोर होगा, राकेश त्रिपाठी ने कहा सनातन है तभी संबिधान है सनातन है तभी भारत है,सनातन संस्कृति ही राष्ट्र व संविधान दोनों को मजबूत करेगी इसके लिए हर सनातनी को गम्भीरता से विचार करना होगा।विवेक चौहान ने कहा किसी राष्ट्र की संस्कृति उस राष्ट्र की प्राण होती है जहाँ हमारी संस्कृति कमजोर हुई वो भू भाग इस राष्ट्र से अलग हो गया,सनातन धर्म को मजबूत करने के लिए सनातन संस्कृति को जानना होगा, हरिनाथ सिंह ने कहा संस्कृति ही हमारा आत्मगौरव है हर सनातनी को अपने संस्कृति के विस्तार के लिए एकजुट होकर कार्य करने की ज़रूरत है संस्कृति विस्तार से ही हर सनातनी को गर्व की अनुभूति होगी, इसके लिए हर व्यक्ति को सनातन विस्तार योद्धा बनना होगा । कार्यक्रम मे प्रमुख रूप से सर्वश्री अशोक पाण्डेय, अरुण चौहान, विशाल दुबे, बबीता चौरसिया,"सुनील मिश्र, सहित गणमान्य लोग उपस्थित रहे । कार्यक्रम का आयोजन केसरिया भारत की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रितिका दूबे ने किया, कुशल संचालन गौरव मिश्र ने किया, कार्यक्रम का समापन सामूहिक श्री हनुमान चालीसा पाठ से हुआ ।

छः मई से तीन दिवसीय योग शिविर का आयोजन

प्रतापगढ़। पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट हरिद्वार के तत्वावधान में पतंजलि योग समिति कांदिवली के सहयोग से प्रतापगढ़ जिले के सदहा पट्टी स्थित निर्मला राम अजोर यादव फार्मेसी कॉलेज में 6 मई से 8 मई तक तीन दिवसीय निःशुल्क समन्वित योग शिविर का भव्य आयोजन किया जा रहा है। प्रत्येक दिन सुबह 6 बजे से 8 बजे तक चलने वाले इस योग शिविर में स्वास्थ्य, आत्मबल और जीवनशैली में सुधार हेतु वैज्ञानिक पद्धति से योगाभ्यास कराया जाएगा। इसमें पतंजलि योग समिति के प्रशिक्षित योगाचार्य भाग ले रहे हैं, जिनकी देखरेख में प्रतिभागियों को विभिन्न योगासनों, प्राणायाम, ध्यान और आयुर्वेदिक जीवनशैली के लाभ के बारे में बताया जायेगा। कॉलेज के प्रबंधक विजय यादव ने बताया कि योग से तमाम प्रकार की बीमारियां को दूर किया जा सकता है। इच्छुक लोग योग शिविर में पहुंचकर योग का लाभ उठा सकते हैं।

2.41 करोड़ की लागत से होगा पक्का घाट का निर्माण

स्वतंत्र प्रभात

चुनार, मिर्जापुर। विधान परिषद सदस्य श्यामनारायण उर्फ विनीत सिंह ने शनिवार को नगर के काजीटोला बालूघाट वार्ड में स्थित संतोषी माता मंदिर के पास 2.41 करोड़ की लागत से होने वाले पक्का घाट निर्माण के लिए भूमि पूजन व शिलापट्ट का अनावरण कर शिलान्यास किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री वैश्विक नगरोदय योजना से गंगा किनारे सुंदर घाट का निर्माण का कार्य कराया जाएगा। गंगा स्वच्छता अभियान पर उन्होंने कहा कि इसके लिए तमाम ट्रीटमेंट प्लांट गंगा की स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए संचालित हैं और कई योजनाओं का संचालन भी हो रहा है जिससे गंगा में गिरने वाले गंदे पानी के दुष्प्रभाव को रोका जा सके। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पालिकाध्यक्ष मंसूर अहमद ने संतोषी माता मंदिर से पंप हाउस तक घाट निर्माण की स्वीकृति में प्रयास करने के लिए एमएलसी के प्रति आभार जताया। इस दौरान ईओ राजपति बैस,सफाई निरीक्षक लालमणि यादव, बचाऊ लाल सेठ,पूर्व पालिकाध्यक्ष विजय वर्मा, ज्योति प्रकाश सिंह, बीके बीनू दीदी,तारा दीदी,किशन मोदनवाल,विजय बहादुर सिंह, आलोक श्रीवास्तव, अभिलाष राय, दिनेश सिंह पटेल, अफसर अली आदि मौजूद रहे।

समाधान दिवस में अपर जिलाधिकारी में सुनी फरियाद

स्वतंत्र प्रभात

चुनार, मिर्जापुर। तहसील सभागार में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस मे आये फरियादियों की समस्याओं को अपर जिलाधिकारी शिव प्रताप शुक्ल ने सुना। थाना अहरौरा के ग्राम खुटहां निवासी मु0 शहाबुद्दीन तिवारी उर्फ जोसफ ने प्रार्थना पत्र दिया कि गांव में स्थित आराजी नंबर 293/647 जिसका क्षेत्रफल सात विस्वा है जिसमें बनसती देवी की समाधि एवं मंदिर स्थित है जिसे आसपास के लोगों द्वारा अतिक्रमण कर लिया गया है, शिकायत कर्ता ने अतिक्रमण मुक्त कराए जाने की मांग किया है।अदलहाट थाना क्षेत्र के फत्तेपुर गांव निवासी मनीष केशरी ने शिकायती प्रार्थना पत्र देते हुए कहा कि पिता ने सौतेली मां व उनके दो लड़कों के साथ ही शिकायतकर्ता को बराबर बराबर पुश्तैनी व पैतृक संपत्ति का वसीयत किया है लेकिन सौतेली मां व लड़कों द्वारा पूरी जमीन पर कब्जा किया जा रहा है जिसे रोकते हुए शिकायतकर्ता ने अपने हक हिस्से की संपत्ति को दिलाएं जाने की मांग किया है।चुनार थाना क्षेत्र के भरेहठा गांव निवासी सुबासचन्द्र सिंह ने प्रार्थना पत्र दिया कि गांव के आराजी नंबर 167 रकवा 0.620 हे0 का सह खातेदार है आराजी में ही काफी पुराना मंदिर बना हुआ है जिससे सटकर गांव के ही रमेश सिंह अवैध तरीके से निर्माण करा रहे हैं। सीखड ब्लाक के पसियाही निवासी खंझाटी यादव ने शिकायती प्रार्थना पत्र दिया कि ग्राम पंचायत में कुल 78 अंत्योदय राशनकार्ड धारक है जिनमे से 30 से अधिक अपात्र है और वह सरकारी खाद्यान्न का उठान कर रहे हैं। नियामतपुर कला के प्यारेलाल सिंह, विभूति नारायण सिंह, अवतार सिंह सहित आधा दर्जन किसानों ने बिना सरहद तय किए पैमाइस के मामले में राजस्व निरीक्षक आदर्श यादव द्वारा दिए आख्या पर नाराजगी जताते हुए किसी अन्य राजस्व निरीक्षक व लेखपाल टीम से पुनः पैमाइस कराएं जाने की मांग किया है। कुल 74 प्रार्थना पत्रों में दो का मौके पर निस्तारण हुआ।इस दौरान एसडीएम राजेश कुमार वर्मा, एसडीएम न्यायिक संजीव कुमार यादव, तहसीलदार योगेन्द्र शरण शाह, पुलिस उपाधीक्षक मंजरी राव, बीडीओ नरायनपुर डा0राजीव कुमार शर्मा सहित राजस्व, पुलिस व अन्य विभागों के अधिकारी, कर्मचारी मौजूद रहे।

दुष्कर्म के अभियोग में वांछित 01 अभियुक्त गिरफ्तार

प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक प्रतापगढ़ डॉ0 अनिल कुमार द्वारा अभियुक्त वांछित अपराधी की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के अंतर्गत अपर पुलिस अधीक्षक पूर्वी दुर्गेश कुमार सिंह एवं क्षेत्राधिकारी पट्टी मनोज कुमार सिंह रघुवंशी के कुशल पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक गुलाबचन्द्र सोनकर मय हमराह का0 विकेश मिश्रा, का0 रामदेव गौतम, चालक का0 जगजीत सिंह थाना कंधई जनपद प्रतापगढ़ द्वारा मुखबिर की सूचना पर कंधई थाना पर पंजीकृत अभियोग अन्तर्गत धारा 69/352/351 (2) व (3) भादवि थाना कन्धई जनपद प्रतापगढ से संबंधित वांछित अभियुक्त अंशुमन चौबे पुत्र उमाकान्त चौबे निवासी मजिस्ता उर्फ भवानीगढ़ थाना कन्धई जनपद प्रतापगढ़ को थानाक्षेत्र कंधई के मजिस्ता मोड़ के पास से गिरफ्तार जेल भेज दिया गया।

दहेज हत्या के अभियोग से सम्बन्धित 02 आरोपी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। थाना मड़िहान में वादी शिवशंकर पुत्र रामधारी निवासी सिरसाई थाना घोरावल जनपद सोनभद्र द्वारा नामजद अभियुक्तों के विरूद्ध दहेज की मांग पूरी न करने पर प्रताड़ित करने तथा वादी की पुत्री को जान से मारकर फांसी पर लटका देने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गई । जिसके आधार पर थाना मड़िहान पर मु0अ0सं0-141/2025 धारा 80,85 बीएनएस 3/4 डीपी एक्ट पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई । "सोमेन बर्मा" वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा उक्त घटना को गंभीरता पूर्वक लेते हुए महिला सम्बन्धित अपराध में त्वरित कार्यवाही करते हुए अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु क्षेत्राधिकारी ऑपरेशन के नेतृत्व में थाना प्रभारी मड़िहान को निर्देश दिये गये । उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना मड़िहान पर पंजीकृत उपरोक्त अभियोग में अग्रिम विवेचनात्मक कार्यवाही के क्रम में रविवार को उप-निरीक्षक राधेश्याम मय पुलिस टीम द्वारा प्राप्त मुखबिर की सूचना के आधार पर थाना मड़िहान क्षेत्र से मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित नामजद 02 नफर अभियुक्त/अभियुक्ता 1.अजय पुत्र रमाशंकर व 2.शांति देवी पत्नी रमाशंकर निवासीगण दारानगर थाना मड़िहान जनपद मीरजापुर को गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेजा गया ।

पुलिस द्वारा दो वारंटी अभियुक्तों को गिरफ्तार किया गया

प्रतापगढ़। थाना कंधई के उप निरीक्षक राजेश यादव मय हमराह द्वारा तलाश वांछित वारण्टी अभियुक्त की दबिश के दौरान मु0न0 2551/92, अ0स0 270/90 धारा 323/324 भादवि थाना कन्धई जनपद प्रतापगढ से संबंधित एक वारंटी सोहराब अली पुत्र सुल्तान अली निवासी ग्राम जैतीपुर थाना कन्धई जनपद प्रतापगढ़ को उसके घर से गिरफ्तार किया गया।थाना मांधाता के उप निरीक्षक अलंकार यादव मय हमराह का0 अनी कुमार के द्वारा तलाश वांछित वारण्टी अभियुक्त पर एसटी न0 175/13 अ0सं0 18/13धारा 138बी भादवि थाना मान्धाता जनपद प्रतापगढ से संबंधित एक वारंटी ओम प्रकाश पटेल पुत्र अलगुराम निवासी बुआपुर थाना मान्धाता जनपद प्रतापगढ़ को उसके घर से गिरफ्तार किया गया।

जमुआ बाजार में मिठाई की दुकान पर हुई मारपीट की घटना से सम्बन्धित 02 अभियुक्त गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर। थाना कछवां में वादी राजकुमार मोदनवाल पुत्र स्व0श्यामसुन्दर निवासी जमुआ बाजार थाना कछवां जनपद मीरजापुर द्वारा नामजद अभियुक्तों के वादी के दुकान से ग्राहक को जबरी पकड़कर अपने दुकान पर ले जाने तथा मना करने पर दुकान में घुसकर गाली-गलौज देते हुए मारपीट करने, जिससे आयी गंभीर चोट के कारण वादी के पुत्र के बेहोश हो जाने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गई । जिसके आधार पर थाना कछवां पर मु0अ0सं0-56/2024 धारा 115(2), 352, 351(2), 333, 110 बीएनएस पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई। "सोमेन बर्मा" वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा उक्त घटना को गंभीरता से लेते हुए क्षेत्राधिकारी सदर के नेतृत्व में घटना से सम्बन्धित अभियुक्तों की यथाशीघ्र गिरफ्तारी हेतु थाना प्रभारी कछवां को निर्देश दिए गए । उक्त निर्देश के अनुक्रम में रविवार को उपनिरीक्षक धीरेन्द्र कुमार सिंह मय पुलिस टीम द्वारा 02 नफर अभियुक्त 1.गया प्रसाद पुत्र स्व0बेनी प्रसाद व 2.विकास पुत्र गया प्रसाद निवासीगण जमुआ बाजार थाना कछवां जनपद मीरजापुर को गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेजा गया ।

अलग-अलग ब्राण्ड की 310 बोतल अंग्रेजी शराब के साथ 02 अन्तर्राज्यीय शराब तस्कर गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर । "सोमेन बर्मा"वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा जनपद में शांति एवं कानून व्यवस्था सुदृढ़ बनाये रखने हेतु अपराध की रोकथाम एवं अपराधियों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही करने तथा अवैध रूप से मादक पदार्थों की तस्करी में लिप्त अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान में प्रभावी कार्यवाही करने हेतु जनपद के समस्त प्रभारी निरीक्षक/ थानाध्यक्षगण को निर्देश दिया गया है । उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना मड़िहान, एसओजी व सर्विलांस की संयुक्त पुलिस टीम को बड़ी सफलता हाथ लगी है । अपर पुलिस अधीक्षक ऑपरेशन-ओ0पी0सिंह व क्षेत्राधिकारी ऑपरेशन-मुनेन्द्र पाल के नेतृत्व मे रविवार को थाना मड़िहान, एसओजी व सर्विलांस की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा थाना मड़िहान क्षेत्रांतर्गत ग्राम गोपलपुर नहर पुलिया के पास से संदिग्ध होण्डा सिटी कार सवार 02 नफर अभियुक्तों 1.मोहम्मद जावेद पुत्र साबिर अहमद निवासी गोसाई टोला बोरिंग रोड़ थाना पाटलिपुत्र जनपद पटना बिहार व 2.राहुल कुमार पुत्र राजू राय निवासी आलमपुर थाना दीदारगंज जेथुली जनपद पटना बिहार को गिरफ्तार किया गया । मौके से बरामद वाहन होण्डा सिटी कार की तलाशी ली गयी तो वाहन की डिग्गी में लदी कुल 310 बोतल अंग्रेजी शराब(जॉनी वॉकर रेड लेबल–76बोतल/750ml, रॉयल स्टैग बैरल सेलेक्ट–144बोतल/750ml, ब्लेंडर प्राइड–58बोतल/750ml, मैजिक मोमेंट्स–32बोतल/750ml) व 02 अदद नम्बर प्लेट बरामद किया गया । उक्त गिरफ्तारी व बरामदगी के सम्बन्ध में थाना मड़िहान पर मु0अ0स0-143/2025 धारा 318(4) बीएनएस व 63/63 आबकारी अधिनियम पंजीकृत कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए गिरफ्तार अभियुक्तों को मा0न्यायालय/जेल भेजा जा रहा है तथा अंग्रेजी शराब तस्करी में प्रयुक्त होण्डा सिटी कार को अन्तर्गत धारा 207 एमवी एक्ट में सीज किया गया ।

मेडिकल स्टोरो पर बेची जा रही है नशीली दवाइयां ग्रामीण हो रहे हैं नशे के शिकार

हलिया, मिर्जापुर। ड्रमडगज क्षेत्र के रतेह चौराहा ड्रमडगज कस्बा नैडी कठारी के मेडिकल स्टोरो पर जमकर बेची जा रहे हैं नशीली दवाइयां ग्रामीण हो रहे है नशे के शिकार आए दिन नशे में गुप्त होकर करते हैं ड्राइवर एक्सीडेंट जबकि तमाम मेडिकल स्टोरो का नहीं है लाइसेंस नहीं है कोई डिग्री होल्डर जबरदस्ती कमीशन के दम पर चला रहे हैं मेडिकल स्टोर ऐसे में ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से माग करना चाहते हैं कि अवैध संचालित हो रहे हैं मेडिकल स्टरों के ऊपर कडी से कड़ी कार्रवाई हो जिससे मेडिकल पर नशीली दवाइयां मिलना बंद हो और ग्रामीण नशे से वंचित हो सके यहां तक की मेडिकल स्टोरो पर नशीली दवा के साथ ही साथ स्टोर मालिक अपने आप को डॉक्टर का दर्जा देते हैं और इंजेक्शन से लेकर जांच तक मेडिकल स्टरों पर किया जाता है मध्य प्रदेश तक नशीली दवाइयां मेडिकल स्टोर से सप्लाई किया जाता है ऐसे में ग्रामीणों का मांग है कि जिला प्रशासन अवैध संचालित मेडिकल स्टोरो के ऊपर कड़ी से कड़ी कार्रवाई करें जिससे ग्रामीण नशे से वंचित रह सके और दुर्घटना से बचें।

नवनिर्मित मंदिर में प्रतिमाओं की हुई प्राण प्रतिष्ठा

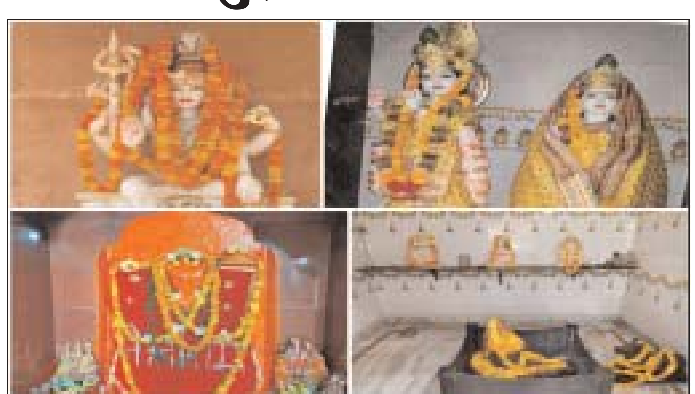

● समाज के अंतिम पायदान पर खड़े सज्जन को पूजा पाठ करने हेतु बनाया पुजारी

स्वतंत्र प्रभात

मिर्जापुर। अन्नपूर्णा एग्रो एलएलपी मुहकुचवा की ओर से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विन्ध्याचल विभाग के विभाग संपर्क प्रमुख केशव नाथ तिवारी द्वारा मुहकुचवा में नवनिर्मित मन्दिर में गणेश जी, शिव जी, हनुमानजी, भगवान भोलेनाथ एवं राधा कृष्ण भगवान की प्रतिमा का प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधि विधान से संपन्न हुआ। आरएसएस प्रमुख/सर संघचालक मोहन भागवत जी की प्रेरणा के प्रतिफल स्वरुप समाज के अंतिम पायदान पर खड़े सज्जन बंगाली बाबा को पूजा पाठ करने हेतु उनके ही हाथो प्राण प्रतिष्ठा संपन्न कराया गया। अंतिम पायदान के बंगाली बाबा मन्दिर के पुजारी होंगे। विभाग संपर्क प्रमुख केशव नाथ तिवारी ने बताया कि कैलाश नाथ तिवारी, शंभू नाथ तिवारी, केशव नाथ तिवारी, शेष नाथ तिवारी के द्वारा मन्दिर का निर्माण कार्य कराया गया। मन्दिर निर्माण परिवार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्वयंसेवक परिवार है और इस परिवार ने मंदिर के पुजारी बंगाली महराज को बनाया गया है। प्राण प्रतिष्ठा में भोलानाथ गिरि, प्रधान कमलेश सोनकर, अजय लाला, बब्बू, भुनेश्वर, तिवारी आदि ग्रामवासी रहे।

नाबालिग को बहला-फुसला कर भगाने एवं दुष्कर्म करने के अभियोग से सम्बन्धित अभियुक्त गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात

मीरजापुर । थाना को0कटरा में एक महिला द्वारा नामजद अभियुक्त के विरूद्ध के वादिनी की नाबालिग पुत्री को बहला फुसलाकर भगा ले जाने तथा जानकारी होने पर वादिनी द्वारा अभियुक्त के घर जाकर पूछने पर अभियुक्त के माता-पिता व बहन द्वारा गाली देते हुए जान से मारने की धमकी देने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गयी । उक्त के सम्बन्ध में प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना को0कटरा पर मु0अ0सं0-86/2025 धारा 137(2), 352, 351(2) बीएनएस पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई । ÷सोमेन बर्मा÷ वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक जनपद मीरजापुर द्वारा उक्त घटना को गंभीरता से लेते हुए क्षेत्राधिकारी नगर के नेतृत्व में प्रभारी निरीक्षक को0कटरा को अभियुक्त की गिरफ्तारी एवं अपहृता की बरामदगी कराये जाने के निर्देश दिए गए । उक्त निर्देश के अनुक्रम में थाना को0कटरा पुलिस द्वारा अपहृता को पूर्व में बरामद कर थाना स्थानीय पर पंजीकृत मु0अ0सं0-86/2025 धारा 137(2), 352, 351(2), 87,64(1) बीएनएस व 3/4 पॉक्सो एक्ट में अग्रिम विवेचनात्मक कार्यवाही के क्रम में रविवार को उप-निरीक्षक दिलीप कुमार मय पुलिस टीम द्वारा प्राप्त मुखबिर सूचना के आधार पर थाना को0कटरा क्षेत्र से नामजद अभियुक्त आनन्द पुत्र चुलबुल निवासी अनगढ़ महावीर थाना को0कटरा जनपद मीरजापुर को गिरफ्तार कर नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेजा गया ।

संक्षिप्त खबरें

105 परिषदीय प्रतिभाओं का आज होगा सम्मान

कौशाम्बी। जनपद में बेसिक शिक्षक परिवार कौशाम्बी की 25 सदस्यीय टीम द्वारा परिषदीय प्रतिभा सम्मान समारोह के तीसरे संस्करण का आयोजन आज यानी सोमवार को होगा।कोर टीम के सदस्य नागेश सिंह ने जानकारी साझा करते हुए बताया कि मंझनपुर स्थित डायट के आडोटोरियम हॉल में राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा, राष्ट्रीय आविष्कार विज्ञान प्रतियोगिता,स्पेल बी प्रतियोगिता, कविता-गायन प्रतियोगिता,सुलेख प्रतियोगिता, नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षा एवं विद्या ज्ञान प्रवेश परीक्षा में सफल हुए 105 छात्रों को सम्मानित किया जाएगा। कार्यक्रम में सीडीओ,डायट प्राचार्य,बीएसए,व डायट के प्रवक्तागण शामिल होंगे।

कलयुगी शराबी बेटे ने पिता को उतारा मौत के घाट

शराब के नशे में लाठी से पीट-पीटकर ले ली पिता की जान,पुलिस जांच में जुटी

कौशाम्बी। जनपद में एक कलयुगी बेटे ने अपने ही पिता को लाठी से पीट पीटकर मौत के घाट उतार दिया, लोग बताते हैं कि वह तब तक अपने पिता को पीटता रहा जब तक कि उनकी मौत नहीं हो गई। इस घटना से परिजनो में कोहराम मच गया,घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और मामले की जांच में जुटी हुई है। घटना महेवा घाट थाना क्षेत्र के महेवा गांव की है, जहां 21 वर्षीय करण यादव उर्फ गुड्डा ने अपने पिता रमेश यादव उम्र करीब 50 वर्ष को शराब के नशे में लाठी से पीट-पीट कर मौत के घाट उतार दिया।बताया जा रहा है कि आरोपी गुड्डा अपने पिता से जमीन अपने नाम करवाना चाह रहा था और इसी को लेकर आये दिन झगड़ा करता था, लेकिन शनिवार की शाम तकरीबन 8 बजे उसने लाठी से पीट कर अपने पिता को मार डाला। परिजन और स्थानीय लोग आनन-फानन उनको अस्पताल ले गए लेकिन, डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और आरोपी की तलाश में जुटी हुई है।

नगर पंचायत अध्यक्ष बीरेन्द्र फौजी द्वारा विभिन्न वार्डों में साफ-सफाई एवं जलापूर्ति व्यवस्था का लिया गया जायजा

कौशाम्बी। जनपद के नगर पालिका परिषद मंझनपुर के अध्यक्ष बीरेन्द्र सरोज फौजी ने नगर पालिका मंझनपुर के विभिन्न वार्डों में जाकर साफ-सफाई की व्यवस्था एवं जलापूर्ति व्यवस्था का जायजा लिया गया।इस दौरान सम्बन्धित पम्प ऑपरेटरों से बातचीत कर जरूरी दिशा-निर्देश दिये गये।और आगामी आने वाली बरसात के समय को ध्यान में रखते हुए जल निकासी की व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु स्थलीय निरीक्षण किया तथा स्थानीय नागरिकों से संवाद स्थापित कर उनकी समस्याओं को सुना गया और समाधान का आश्वासन दिया गया। साथ ही नगर पालिका के वार्ड प्रभारी एवं सफाई नायकों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया गया। उन्होंने कहा कि जनमानस की सुविधा और स्वास्थ्य हमारी पहली प्राथमिकता में शामिल है,और हम सभी वार्डों में बेहतर से बेहतर व्यवस्था सुनिश्चित करने हेतु लगातार प्रयासरत हैं साथ ही उन्होंने कहा कि नगर आपका साफ नगर और स्वास्थ्य जीवन की जिम्मेदारी हमारी रहेगी। इस मौके पर अधिशासी अधिकारी प्रतिभा सिंह,अवर अभियन्ता ओमकार पटेल,लेखा लिपिक संजय कुमार गुप्ता सहित बहुत से लोग उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय हिंदू युवा वाहिनी युवा प्रकोष्ठ का गठन

अलीगढ़। राष्ट्रीय हिंदू युवा वाहिनी युवा प्रकोष्ठ की बैठक जिला अध्यक्ष रुद्र पंडित की अध्यक्षता में रविवार को पला रोड के प्रेम चौक जिला कार्यालय पर हुई जहाँ फिर प्रकोष्ठ का विस्तार किया गया ।रुद्र पंडित द्वारा बताया गया कि संगठन लव जिहाद एवं सामाजिक मुद्दों पर कार्य करेगा। बैठक में मुख्य अतिथि पंडित देवेंद्र शर्मा का पटका पहनाकर स्वागत किया गया संगठन जल्द बड़ी कार्यकारिणी गठित करने जा रहा है जो जिम्मेदारी संगठन ने उन्हें सौंपी है उसे पर निस्वार्थ कार्य करेंगे व खरा उतरेंगे ! बैठक में मुकेश वर्मा, प्रहलाद शर्मा, कृष्णा राजपूत, सत्येंद्र शर्मा, नीरज हिंदू, अभिषेक हिंदू, विशाल, अजय, लालू रघुवंशी, दीपक, सुशील शर्मा,अमित आदि लोग मौजूद रहे।

यूपी के कौशांबी, मथुरा, उन्नाव और बरेली में हादसे; तीन किशोरों सहित 10 लोगों की मौत, 30 से ज्यादा घायल

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। यूपी के कौशांबी/मथुरा/उन्नाव/बरेली में 24 घंटे के अंदर 4 बड़े हादसे हो गए. इसमें कुल 10 लोगों की मौत हो गई. कौशांबी में एक स्कॉर्पियो गाड़ी पेड़ से टकरा गई, जिसमें 4 लोगों की मौत हो गई है. मृतकों में एक एयरफोर्स कर्मी भी शामिल है. हादसा पिपरी थाना क्षेत्र के गुगवा में बाग के पास का है. वहीं, मथुरा में रविवार सुबह यमुना एक्सप्रेस-वे पर मांट इलाके के जावरा के पास तेज रफ्तार सफारी अज्ञात वाहन से टकरा गई. हादसे में कार सवार दो लोगों की मौके पर मौत हो गई. जबकि उन्नाव में दिल्ली से गोरखपुर जा रही बस और ट्रक में टक्कर हो गई. इसमें चालक की मौत हो गई, जबकि 27 यात्री घायल हैं. इन तीनों दुर्घटनाओं में 30 से ज्यादा लोग घायल हैं. चौथी घटना बरेली की है, जिसमें शादी समारोह में काम करने के बाद लौट रहे तीन किशोरों को अज्ञात वाहन ने रौंद दिया. तीनों किशोरों की मौत हो गई। जानकारी के मुताबिक, कौशाम्बी के पिपरी थाना क्षेत्र के दरियापुर पटेल नगर से बारातियों से भरी एक स्कार्पियो कार बारात से घर वापस जा रही थी. जैसे ही कार गुगवा के बाग के पास पहुंची, अचानक बेकाबू होकर सड़क किनारे एक पेड़ से टकरा गई।

एयरफोर्स कर्मी की भी हुई मौत- इस हादसे में पुरामुफ्ती थाना क्षेत्र के मानिकपुर निवाली सुनील कुमार पटेल (35) पुत्र खालिक सिंह पटेल, रविकुमार पटेल (38) पुत्र शंभू पटेल, पूरा पजवा बाकराबाद निवासी चंदबदन (35) पुत्र गुलाब सिंह पटेल और बलिया जिले के बटौरिया थाना क्षेत्र के करन छपरा निवासी विकास कुमार (38) पुत्र दिनेश सिंह की मौत हो गई. इसमें विकास कुमार (38) पुत्र दिनेश सिंह उम्र एयर फोर्स कर्मचारी बताए जा रहे हैं। वहीं, धूमनगंज थाना क्षेत्र के कोटवा गांव निवासी ड्राइवर अमित कुमार गंभीर रूप से घायल है. उसे घायल अवस्था में एंबुलेंस की मदद से मेडिकल कॉलेज भेजा गया, जहां इलाज किया जा रहा है. घटना की जानकारी मिलते ही शादी वाले घर पर मातम पसरा हुआ है.जामुन के पेड़ से टकराई कार~ थानाध्यक्ष सिद्धार्थ सिंह ने बताया कि बारातियों से भरी एक स्कॉर्पियो सड़क के किनारे जामुन के पेड़ से टकरा गई, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई है. वहीं, ड्राइवर गंभीर रूप से घायल है, जिसका इलाज कराया जा रहा है।

मथुरा में यमुना एक्सप्रेसवे पर हादसा, दो की मौत, तीन घायल~ रविवार सुबह यमुना एक्सप्रेस-वे पर मांट क्षेत्र जावरा के पास तेज रफ्तार सफारी अज्ञात वाहन से टकरा गई. हादसे में कार सवार दो लोगों की मौके पर मौत हो गई, तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए. सफारी सवार सभी लोग नोएडा से आगरा की ओर जा रहे थे. बताते हैं कि नोएडा के रहने वाले प्रेम सिंह, पत्नी पूजा, सूर्य सिंह, सुमित, रोशन आगरा की ओर जा रहे थे. मथुरा में हादसे का शिकार हो गए. अस्पताल में डॉक्टरों ने सुमित और पूजा को मृत घोषित कर दिया और तीन लोगों का इलाज जिला अस्पताल में कराया जा रहा है। बरेली में बैंड बाजे की ठेलिया लेकर लौट रहे तीन किशोरों को अज्ञात वाहन ने रौंदा~बरेली के शाही थाना क्षेत्र में शादी समारोह से लौट रहे बैंड बाजे में काम करने वाले तीन किशोरों की अज्ञात वाहन की चपेट में आकर जान चली गई, जबकि एक गंभीर रूप से घायल हो गया है. बताते हैं कि खिदयपुर गांव में शनिवार रात को एक शादी थी. बैंड बाजे वाले 8-10 मजदूर ठेलिया लेकर पैदल आनंदपुर लौट रहे थे। मिर्जापुर की तरफ से एक अज्ञात वाहन ने मजदूरों को टक्कर मार दी.हादसे में 16 साल के रोहित कुमार निवासी बकेनिया वीरपुर की मौके पर ही मौत हो गई. उसके साथी सचिन (16), मोहित (14), और संजीव (17) घायल हो गए. अस्पताल ले जाते समय रास्ते में मोहित मौत हो गई, जबकि इलाज के दौरान

सचिन की मृत्यु हो गई है. संजीव की हालत गंभीर बनी हुई है. शाही थाने के प्रभारी अमित सिंह ने बताया कि अज्ञात गाड़ी ने चार लड़कों के टक्कर पीछे से मार दी, जिसमें तीन लड़कों की मौत हो गई है, जबकि एक घायल है। अज्ञात वाहन की तलाश की जा रही है उन्नाव में ट्रक से भिड़ी बस, चालक की मौत, 27 घायल~उन्नाव में रविवार देर रात दिल्ली से गोरखपुर जा रही एक यात्री बस आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे पर ट्रक से टकरा गई. यह दुर्घटना थाना औरास क्षेत्र के अंतर्गत किमी संख्या 264 के पास रात करीब 1 बजे हुई. टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बस के चालक हरेन्द्र सिंह (निवासी कोलशेरी, संगरूर, पंजाब) की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई. सूचना मिलते ही थाना औरास पुलिस तुरंत मौके पर पहुंची और रेस्क्यू कार्य शुरू किया. बस में सवार कुल 27 यात्री घायल हो गए थे, जिनमें से 11 की हालत गंभीर बताई जा रही है. सभी घायलों को प्राथमिक उपचार के लिए सीएचसी औरास भेजा गया, जहां से गंभीर रूप से घायलों को बेहतर इलाज के लिए लखनऊ ट्रॉमा सेंटर रेफर कर दिया गया. घायलों में हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली और बिहार के यात्री शामिल हैं. गंभीर रूप से घायल यात्रियों में रूपलाल (हिमाचल), सुधा सिंह व अभय सिंह (गोरखपुर), कुसुम व वीरेन्द्र गुप्ता (देवरिया), कविता व साक्षी (दिल्ली), प्रभात (शिवान, बिहार), निशा व विशेष कुमार (मयूर विहार, दिल्ली), और जुगनू (कुशीनगर) के नाम शामिल हैं।

स्वदेशी जागरण मंच के जिला सह संयोजक बने अशोक कुमार गुप्ता

हरदोई विश्व हिंदू परिषद के प्रांतीय उपाध्यक्ष हर्षवर्धन के नेतृत्व में काम करने वाले अशोक कुमार गुप्ता को पुनः हर्षवर्धन सिंह के द्वारा एक नई जिम्मेदारी दी गई। विश्व हिंदू परिषद में लगभग 20 वर्षों से जुड़े अशोक कुमार गुप्ता को अब स्वदेशी जागरण मंच का जिला सह संयोजक बनाकर नई जिम्मेदारी के साथ कार्य करने के लिए दायित्व दिया गया है।श्री गुप्ता ने बजरंग दल संयोजक से विश्व हिंदू परिषद में एक अच्छे और कुशल नेतृत्व से संगठन की ऊंचाइयों तक पहुंचाया। जिसमें बजरंग दल संयोजक से लेकर जिला उपाध्यक्ष रहे।उन्हें कई बार शाहाबाद का नगर अध्यक्ष बनाया गया। जिसमें मुख्य रूप से पुनीत कनौजिया पवन रस्तोगी, अनिल लाहोरी आदि शामिल रहे। अशोक ने अपने कार्यकाल में कभी भी अपने आप को दिखाने की कोशिश नहीं की। नगर के सभी लोगों से उनका अच्छा व्यवहार रहा चाहे वह कोई भी अधिकारी हो या अन्य। सभी को सम्मान देने वाले अशोक कुमार गुप्ता को जिले का नया दायित्व मिलने पर सभी ने शुभकामनाएं और बधाई दी। अशोक से बात करने पर उन्होंने बताया मैं सभी अधिकारियों का जैसे सम्मान करता था वैसे ही करता रहूंगा लेकिन अपने कार्यकर्ताओं के लिए सदैव खड़ा हूं खड़ा रहूंगा वह भी हमारे अभिन्न अंग हैं।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने प्रतिनिधि को मण्डल काजू गांव भेज कर मृतक के परिजनो की आर्थिक मदद

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के निर्देशानुसार समाजवादी पार्टी का प्रतिनिधि मण्डल तीन मई को कौशाम्बी पहुंचा। चरवा थाना क्षेत्र के काजू गांव में धोबी समाज के संगम लाल दिवाकर की पत्नी संगीता देवी और पुत्र सर्वजीत दिवाकर की दस मार्च को निर्मम हत्या कर दी गई थी। पीड़ित परिवार को सांत्वना देने तथा समाजवादी पार्टी द्वारा परिवार को दी गई एक लाख रुपए की आर्थिक सहायता का चेक सौंपने हेतु प्रतिनिधि मण्डल ग्राम काजू पहुंच कर पीड़ित परिवार को सहायता के रूप में एक लाख रुपए आर्थिक मदद किया। और पीड़ित परिवार के सभी सदस्यों की दुःख की घड़ी में सहानुभूति जताते हुए वर्तमान सरकार पर तंज कसते हुए एम एल सी मान सिंह यादव ने कहा कि सरकार क्राइम पर काबू नहीं कर पा रही है। जनपद कौशाम्बी में इस तरह की कई घटनाएं सामने आई है जो निन्दनीय है। और परिवार वालों को भरोसा दिलाया कि हमारी पार्टी द्वारा पीड़ित परिवार की हर सम्भव मदद किया जाएगा।प्रमुख रूप से मौजूद सांसद पुष्पेन्द्र सरोज, जिलाध्यक्ष दया शंकर यादव, डॉ0 एम एल सी मान सिंह यादव, डॉ0 राम करन निर्मल प्रदेश अध्यक्ष लोहिया वाहिनी, मो0 अनवर, चन्द्र जीत यादव विधान सभा अध्यक्ष, मिठाई लाल पासी, राम सरन निर्मल, सरदार यादव, अनिल यादव, सोनू पासी, राम सुख, कमलेश गौतम, ओम पाल, अदालती प्रसाद,पवन यादव, आदि लोग उपस्थित रहे।

ग्रामीण क्षेत्रों में नये सम्पर्क मार्ग बनाए जाने की सकिपा ने लोक निर्माण विभाग से की मांग

● ग्राम खनवारी से कमासिन माता मन्दिर तक नया सम्पर्क मार्ग बनाया जाये.... अजय सोनी

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में रविवार चार मई को सिराथू ब्लॉक के ग्राम खनवारी में बैठक हुई। बैठक में ग्रामीणों एवं पार्टी कार्यकर्ताओं ने ग्राम खनवारी से कमासिन माता मंदिर ग्राम गंभीरा पूर्व समेत कई ग्रामीण क्षेत्रों में नये सम्पर्क मार्ग बनाए जाने की जिला प्रशासन एवं लोक निर्माण विभाग से मांग की। बैठक में लोगों ने ग्राम खनवारी से कमासिन माता मंदिर ग्राम गम्भीरा पूर्व, ग्राम बारातफरीक से उदहिन मंझनपुर नहर मार्ग, ग्राम तेरहरा से ग्राम मलाक पींजरी, ग्राम फैजलीपुर मजरा नारा से ग्राम महंदापुर, ग्राम भवनी का पुरवा मजरा ग्राम जुवरा से ग्राम केशवापुर मजरा मोंगरी कड़ा, ग्राम नादीन का पुरवा से गंभीरा पूर्व होकर उदहिन मंझनपुर नहर मार्ग, ग्राम चकिया मजरा ग्राम मलाक पिंजरी से उदहिन मंझनपुर नहर मार्ग, ग्राम कैनी से ग्राम तेजवापुर, ग्राम बेला (अचाकापुर) से ग्राम पितम्बरपुर नहर मार्ग, ग्राम तुलसीपुर से उदहिन मंझनपुर नहर मार्ग एवं ग्राम हिसामबाद से करारी माइनर नहर मार्ग तक नए समर्क मार्ग बनाए जाने की मांग की।

इस अवसर पार्टी नेता अजय सोनी ने लोगों से बताया कि मेरे द्वारा इस सम्बन्ध में कई बार जिला पंचायत कौशाम्बी में मांग की जा चुकी है, साथ ही पूर्व में कई बार मैंने मुख्य विकास अधिकारी कौशाम्बी एवं लोक निर्माण विभाग कौशाम्बी को लिखित मांगपत्र सौंपकर इन ग्रामीण क्षेत्रों में नए सम्पर्क मार्ग बनाए जाने हेतु आवाज उठाई है। इसी क्रम में पूर्व में ग्राम खनवारी से कमासिन माता मन्दिर तक नया संपर्क मार्ग बनाए जाने की भी मैने मांग की है।

इस अवसर पर अजय सोनी ने अधिशाषी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग हरवंश सिंह को फोन कर तत्काल सिराथू ब्लॉक के कई गांवो में नए सम्पर्क मार्ग बनाए जाने हेतु फोन पर वार्ता की। इसी क्रम में ग्राम खनवारी से कमासिन माता मंदिर ग्राम गम्भीरा पूर्व तक नया संपर्क मार्ग बनाए जाने हेतु फोन पर विशेष आग्रह किया। जिसपर अधिशाषी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग हरवंश सिंह ने जल्द ही सर्वे कराकर नये सम्पर्क मार्ग बनाए जाने की बात कही है। अजय सोनी ने इस मामले में जल्द ही पुन~ लोक निर्माण विभाग में लिखित मांगपत्र दिए जाने एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नए संपर्क मार्ग के निर्माण कराए जाने की बात कही है। इस अवसर पर दशरथ लाल चौरसिया, राजू चौरसिया, सुरेश चौरसिया, संतोष चौरसिया, गया प्रसाद, राम नेवाज, उमाशंकर सिंह, सत्यम चौरसिया आदि मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेले में 1624 मरीज का चिकित्सकों द्वारा किया गया इलाज

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। जनपद में प्रत्येक रविवार को मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया जाता है। जनपद में 33 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों तथा 3 शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर दिनांक 04-05-2025 को मुख्यमंत्रीआरोग्य स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया। आरोग्य स्वास्थ्य मेले को सफल बनाने के लिए नोडल अधिकारी तथा अपर/उप मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो मे आरोग्य स्वास्थ्य मेले के निरीक्षण हेतु जिम्मेदारी दी गयी है।

डा0 हिन्द प्रकाश मणि, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी, कौशाम्बी ने प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, मंझनपुर का निरीक्षण किया द्य प्रभारी/अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 संजय चंद ने अवगत कराया कि समस्त प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर प्रत्येक रविवार को मुख्यमंत्री आरोग्य स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया जा रहा है। अन्य उप मुख्य चिकित्सा /अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारियो के द्वारा भी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रो का निरीक्षण किया जाता है। आरोग्य स्वास्थ्य मेले में 65 चिकित्साधिकारी व 153 पैरामेडिकल कर्मचारी की ड्यूटी लगायी गयी थी । आरोग्य स्वास्थ्य मेले में विभिन्न रोगों से ग्रसित कुल 1624 मरीजों का चिकित्सको द्वारा उपचार किया गया एवं 05 मरीजों को जिला संयुक्त चिकित्सालय मंझनपुर कौशाम्बी सन्दर्भित किया गया। साथ ही मेले मे कुल 60 गोल्डेन कार्ड एवं 40 आभा आईडी भी बनाये गये।

शहरी क्षेत्र के 44 रिक्त पदों पर वार्डवार विज्ञप्ति प्रकाशित न होने के कारण ऑगनबाड़ी कार्यकत्री भर्ती निरस्त

शीघ्र ही शहरी क्षेत्र के 44 निरस्त पदों पर नवीन विज्ञप्ति की जायेगी प्रकाशित

कौशाम्बी। कार्यालय जिला कार्यक्रम अधिकारी कौशाम्बी की प्रेस विज्ञप्ति दिनांक 11.03.2024 के क्रम में ऑगनबाड़ी कार्यकत्री के रिक्त पदों पर संविदा आधारित मानदेय पर तैनाती हेतु सीधी भर्ती के तहत विभागीय भर्ती पोर्टल पर 190 रिक्त पदों पर ऑनलाइन आवेदन आमन्त्रित किये गए थे। तत्क्रम में निहित नियमों / मानकों के अनुसार 146 पदों पर भर्ती प्रक्रिया पूर्ण कर ली गयी है।शहरी क्षेत्र के सिराथू-12, कड़ा-03, सरसवां-03, मंझनपुर-06, शहर स्लम-03, मूरतगंज-06 एवं चायल- 11 कुल 44 रिक्त पदों पर वार्डवार विज्ञप्ति प्रकाशित न होने के कारण ऑगनबाड़ी कार्यकत्री भर्ती हेतु गठित चयन समिति द्वारा सर्वसम्मति से लिये गये निर्णय के क्रम में उक्त विज्ञप्ति निरस्त की जाती है। शीघ्र ही शहरी क्षेत्र सिराथू, कड़ा, सरसवां, मंझनपुर, शहर स्लम, मूरतगंज एवं चायल के 44 निरस्त पदों पर ऑगनबाड़ी कार्यकत्री पद पर चयन हेतु नवीन विज्ञप्ति प्रकाशित की जायेगी।

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के खिलाफ अवमानना कार्रवाई की मांग वाली याचिका पर 5 मई को सुनवाई संभव

स्वतंत्र प्रभात

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 5 मई को एक याचिका पर सुनवाई किए जाने की उम्मीद है, जिसमें भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के खिलाफ शीर्ष अदालत और भारत के मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ कथित रूप से अपमानजनक और निंदनीय टिप्पणी करने के लिए स्वतः संज्ञान लेते हुए अवमानना कार्यवाही शुरू करने की मांग की गई है। इस सप्ताह संभावित सुनवाई के लिए सूचीबद्ध याचिका में न्यायपालिका की गरिमा पर हमले के बारे में न्यायालय से हस्तक्षेप करने की मांग की गई है। इसमें शीर्ष अदालत से केंद्रीय गृह मंत्रालय को सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को राजनीतिक नेताओं द्वारा नफरत फैलाने वाले और भड़काऊ भाषणों पर अंकुश लगाने के लिए एक सलाह जारी करने का निर्देश देने का भी आग्रह किया गया है, खासकर वक्फ (संशोधन) अधिनियम, 2025 के संबंध में। विवाद दुबे की वक्फ (संशोधन) अधिनियम को लेकर सर्वोच्च न्यायालय के व्यवहार पर की गई टिप्पणी से उपजा है।

पिछले सप्ताह शनिवार को एएनआई को दिए एक साक्षात्कार में उन्होंने कहा, "सर्वोच्च न्यायालय अपनी सीमाओं से परे जा रहा है। अगर सब कुछ वहीं तय होना है, तो संसद को बंद कर दें," उन्होंने आरोप लगाया कि न्यायपालिका धार्मिक कलह को भड़का रही है और सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ पर "गृह युद्धों" के लिए जिम्मेदार होने का आरोप लगाया। उन्होंने अनुच्छेद 377 पर न्यायालय के फैसले की भी आलोचना की और दावा किया कि इसने विधायी शक्तियों को हड़प लिया है, उन्होंने कहा, "आप इस देश को अराजकता की ओर ले जाना चाहते हैं।"

निशिकांत दुबे को सुप्रीम कोर्ट और सीजेआई के बारे में अपनी टिप्पणी के बाद आलोचनाओं का सामना करना पड़ा है, जिसके बाद गरमागरम विवाद खड़ा हो गया। उनके बयान की तीखी निंदा हुई, जिसमें उनकी अपनी पार्टी भी शामिल थी, भाजपा अध्यक्ष ने सार्वजनिक रूप से दुबे के विचारों से खुद को अलग कर लिया। दुबे के गृह राज्य से झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) के प्रवक्ता मनोज पांडे ने टिप्पणी को "दुर्भाग्यपूर्ण" बताते हुए कहा, "देश में तानाशाही इस स्तर पर पहुंच गई है कि अब संसद का एक सदस्य अदालत को चुनौती दे रहा है... क्या ये लोग न्यायाधीशों से ज़्यादा विद्वान हैं? क्या वे बहुमत के अंधेरे में कुछ करेंगे, और क्या अदालतें चुप रहेंगी?"

उत्तर मध्य रेलवे आफिसर्स स्पोर्ट्स एवं कल्चरल मीट 2025 संपन्न

● मुख्यालय ने हासिल की सांस्कृतिक और खेल स्पर्धाओं की ओवरऑल शील्ड।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे प्रशासन द्वारा खेल को प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से समय-समय पर विभिन्न खेल तथा सांस्कृतिक स्पर्धाओं का आयोजन किया जाता रहा है। इसी क्रम में दिनांक 02.05.2025 से 03.05.2025 तक रेलगांव स्थित स्पोर्ट्स परिसर एवं अधिकारी क्लब, सूबेदारगंज, प्रयागराज में दो दिवसीय 'उत्तर मध्य रेलवे आफिसर्स स्पोर्ट्स एवं कल्चरल मीट 2025' का आयोजन किया गया। इस मीट का समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह महाप्रबन्धक उत्तर मध्य रेलवे उपेंद्र चंद्र जोशी की अध्यक्षता एवं उत्तर मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन की अध्यक्षा चेतना जोशी की गरिमामयी उपस्थिति में किया गया।

स्पोर्ट्स एवं कल्चरल मीट 2025 के समापन समारोह में महाप्रबन्धक उत्तर मध्य रेलवे उपेंद्र चंद्र जोशी एवं चेतना जोशी ने सभी विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए । ज्ञात हो कि मुख्यालय के दल ने ओवरॉल उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए सांस्कृतिक और स्पोर्ट्स शील्ड प्राप्त की। मुख्यालय ने कुल 10 स्वर्ण 6 रजत एवं 6 कांस्य पदक के साथ 22 पदक जीते हुए और 178 अंकों के साथ सांस्कृतिक शील्ड जीती। दूसरे स्थान पर प्रयागराज मंडल रहा जिसको 90 अंक मिले। इसी क्रम में मुख्यालय ने 47 स्वर्ण 28 रजत एवं 24 काँस्य पदक कुल 99 पदको के साथ 343 अंक प्राप्त करते हुए खेल शील्ड पर भी कब्जा जमाया। यहां भी दूसरे स्थान पर प्रयागराज मंडल रहा जिसने 83 अंक प्राप्त किया।

दो दिन तक चली इस उत्तर मध्य रेलवे स्पोर्ट्स एवं कल्चरल मीट के अन्तर्गत विभिन्न खेल स्पर्धाओं जैसे क्रिकेट, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, लॉन टेनिस, कैरम, चेस प्रतियोगिताओं एवं एथलेटिक में 3 किलोमीटर की रन फॉर फन, 100 मी. दौड़, रिले रेस, आदि के साथ-साथ, बॉक्स क्रिकेट, सैक रेस एवं स्पून रेस आदि का भी आयोजन किया गया। इसी क्रम में सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं जैसे वाद्य संगीत, गायन, नृत्य, अभिनय के अतिरिक्त पेंटिंग, रंगोली एवं फैशन शो का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के दौरान खेले गए क्रिकेट के फाइनल में मुख्यालय ने प्रयागराज मंडल को 9 विकेट से हरा कर खिताब जीता।

इसी प्रकार बॉक्स क्रिकेट के फाइनल में मुख्यालय ने आगरा मंडल को हराकर खिताब जीता। इस अवसर पर अपने संबोधन में

महाप्रबंधक ने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और कहा कि, इस तरह के आयोजन हमें आपस में मिलने जुलने का अवसर प्रदान करते हैं । यह प्रतियोगिता केवल खेल और संस्कृति का मंच नहीं थी, बल्कि यह उत्तर मध्य रेलवे परिवार के अधिकारियों के बीच एकता, सहयोग और सौहार्द की भावना को मजबूत करने का भी एक सशक्त माध्यम थी। इन दो दिनों में हमने देखा कि कैसे विभिन्न मंडलों के अधिकारी एक साथ आए, एक दूसरे का समर्थन किया और एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के माहौल में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। यही हमारी सबसे बड़ी उपलब्धि है। कार्यक्रम के प्रारंभ में आगमन पर महाप्रबंधक का स्वागत पौधा भेंट कर प्रधान मुख्य वाणिज्य प्रबंधक बृजेंद्र कुमार ने किया। बी पी सिंह द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन अनम सिद्दीकी, तनुजा प्रसाद एवं डॉ अमित मालवीय ने किया।

कटकमदाग के हाथामेढ़ी और शिवदयाल नगर के यज्ञ में शामिल हुए सांसद मनीष जायसवाल

हजारीबाग, झारखंड- हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में इन दिनों भक्ति की बयार बह रही है। करीब दो दर्जन से अधिक गांवों में यज्ञ सह मंदिर प्राण प्रतिष्ठा का धार्मिक अनुष्ठान चल रहा है। लगातार इन धार्मिक अनुष्ठान में शामिल होने का आवास प्राप्त हो रहा हैं। रविवार की सुबह हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल सदर विधानसभा क्षेत्र के त्रिदेव मंदिर, विजय पथ, शिवदयाल नगर, कदमा में आयोजित श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ- सह- शिव परिवार प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के दूसरे दिन और ग्राम हाथामेंढ़ी में आयोजित श्री श्री 1008 रुद्र महायज्ञ एवं श्रीमद् भागवत कथा के छठे दिन पहुंचकर शामिल हुए और यज्ञ मंडप की परिक्रमा कर क्षेत्र की सुख, शांति और खुशहाली की कामना ईश्वर से की। सांसद मनीष जायसवाल ने इस दौरान ग्राम हाथामेढ़ी में एक बहन को लहंगा भेंटकर शादी से पूर्व बधाई दिया। मौके पर विशेष रूप से अजय कुमार साहू, दीपक सिंह, सतपाल सिंह, विजय वर्णवाल, सुनील तिवारी, सुधीर चौधरी, राजेश सिन्हा, गोपाल गौर, सुधीर पांडेय, सुधीर सिंह, दीपक सिन्हा सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

रिजर्ब पुलिस लाइंस में विवेचकों को अपराध विषयक कानूनों की जानकारी दिये जाने के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

● संयुक्त निदेशक अभियोजन अभियोजन अधिकारी द्वारा उक्त कार्यशाला में दिया गया व्याख्यान।

स्वतंत्र प्रभात

प्रयागराज। पुलिस आयुक्त प्रयागराज तरुण गाबा द्वारा रिजर्व पुलिस लाइन्स त्रिवेणी सभागार में विवेचकों को अपराध विषयक कानूनों की जानकारी दिये जाने विषयक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें संयुक्त निदेशक अभियोजन श्री दिनेश द्विवेदी व अभियोजन अधिकारी श्री मुकेश कुमार द्वारा उक्त कार्यशाला में व्याख्यान दिया गया।

» अभियुक्तों की गिरफ्तारी एवं बरामदगी के सम्बन्ध में न्यायालय द्वारा समय समय निर्गत आदेशों एवं निर्देशों के प्रभावी क्रियान्वयन से सम्बन्धित महत्वपूर्ण दिशा निर्देश दिये गये।

» पॉक्सो एक्ट के सम्बन्ध में विवेचना सम्बन्धी महत्वपूर्ण तथ्यों पर चर्चा की गयी।

» मादक पदार्थो की तस्करी/बिक्री की रोकथाम सम्बन्धी अधिनियमों के विवेचनात्मक बिन्दुओं पर प्रकाश डाला गया।

» गैंगचार्ट बनाने सम्बन्धी विधिक प्रावधानों पर चर्चा की गयी।

» कमिश्नरेट प्रयागराज में कानून व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ किये जाने के उद्देश्य से पुलिस आयुक्त प्रयागराज द्वारा समस्त सहायक पुलिस आयुक्त व थाना प्रभारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये।

» अपराध नियंत्रण को प्राथमिकता देते हुए सभी थाना प्रभारियों को अपने अपने थाना क्षेत्र में लगातार गश्त और चेकिंग बढ़ाने के सम्बन्ध निर्देश दिये गये।

» महिला सम्बन्धी अपराधों पर तत्काल कार्रवाई की जाये तथा पीड़ित महिला की शिकायत को उच्च प्राथमिकता प्रदान की जाये।

» जनसुनवाई के दौरान जनमानस से प्राप्त होने वाली जनशिकायतों को गंभीरता से लिया जाये एवं प्राथमिकता के आधार पर समयबद्ध निस्तारण हेतु सभी प्रभारी निरीक्षक/थाना प्रभारियों को निर्देशित किया गया।

» टोल फ्री नम्बर-1090, डायल-112, सोशल मीडिया, जनसुनवाई पोर्टल (आई0जी0आर0एस0) आदि माध्यमों से प्राप्त शिकायतों पर तत्काल संज्ञान लेकर गुणवत्तापूर्ण निस्तारण कराते हुये शिकायतकर्ता से संवाद स्थापित कर उन्हें कार्रवाई की स्थिति से अवगत करायें।

» हिस्ट्रीशीटर (HS) अपराधियों की सूची अपडेट कर नियमित सत्यापन एवं निगरानी सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये।

» सभी थाना प्रभारी अपने अपने क्षेत्र में टैक्सी, ई-रिक्शा चालकों का सत्यापन अवश्य कर लें एवं अवैध डग्गामार वाहनों पर प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करें।

उक्त कार्यशाला/गोष्ठी में अपर पुलिस आयुक्त कानून व्यवस्था, पुलिस उपायुक्त मुख्यालय, सहायक पुलिस आयुक्त लाइन्स, समस्त सहायक पुलिस आयुक्त व समस्त थाना प्रभारियों तथा अन्य पुलिस अधिकारीगण द्वारा प्रतिभाग किया गया।

संक्षिप्त खबरें

गौरियाकर्मा में पशुपालन विभाग की जमीन पर अवैध कब्जा, कार्रवाई के निर्देश

बरही, झारखंड- राजकीय पशु प्रक्षेत्र, गौरियाकरमा की भूमि पर स्थानीय ग्रामीणों द्वारा अवैध रूप से कब्जा किए जाने का मामला सामने आया है। कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग (पशुपालन प्रमंडल) के अधीन देवकुंडा मौजा, थाना संख्या 01, खाता संख्या 47, प्लॉट संख्या 794 की जमीन पर यह अतिक्रमण हुआ है। यह भूमि विभाग को 1960 में हस्तांतरित की गई थी, लेकिन इसके एक हिस्से पर कुछ ग्रामीणों ने कब्जा कर लिया है। इस संबंध में 2022 में ही अतिक्रमणकारियों को नोटिस दिया जा चुका था, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है। संबंधित जानकारी कार्यालय को भी नहीं दी गई। 15 फरवरी 2025 को कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता मंत्री द्वारा दिए गए निर्देशों के आलोक में संबंधित अंचल अधिकारी को अपने स्तर से शीघ्र कार्रवाई करने को कहा गया है। इस पत्र पर प्रबंधक, राजकीय पशु प्रक्षेत्र, गौरियाकर्मा (हजारीबाग) ने हस्ताक्षर किए हैं।

मायापुर में भव्य जल यात्रा का आयोजन, पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला हुए शामिल

चौपारण, झारखंड- चौपारण प्रखंड के अंतर्गत पांडेयबारा पंचायत के ग्राम मायापुर में रविवार को एक भव्य जल यात्रा का आयोजन किया गया। यह आयोजन स्थानीय समाजसेवी जितेन्द्र यादव के गृह प्रवेश के शुभ अवसर पर संपन्न हुआ। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोग एवं ग्रामीणों की भारी उपस्थिति रही। इस जल यात्रा में पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला ने बतौर मुख्य अतिथि शामिल होकर कार्यक्रम की गरिमा को और बढ़ाया। उन्होंने विधिवत रूप से प्रधान पुजारी को प्रधान कलश सौंपकर जल यात्रा की शुरुआत कराई। कलश यात्रा में बड़ी संख्या में महिलाएं पारंपरिक परिधानों में कलश सिर पर रखकर शामिल हुईं, जिससे पूरे क्षेत्र में धार्मिक और सांस्कृतिक वातावरण का संचार हो गया। पूर्व विधायक उमाशंकर अकेला ने इस अवसर पर कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से सामाजिक एकता और सांस्कृतिक परंपराएं सुदृढ़ होती हैं। उन्होंने जितेन्द्र यादव को गृह प्रवेश के लिए शुभकामनाएं दीं और उनके सामाजिक कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम में स्थानीय पंचायत प्रतिनिधियों, ग्रामीणों, युवाओं और वरिष्ठ नागरिकों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जल यात्रा गांव के विभिन्न मार्गों से होते हुए मंदिर प्रांगण तक पहुंची, जहां विशेष पूजा-अर्चना की गई।

लातेहार विधायक प्रकाश राम ने सुनीं ग्रामीणों की समस्याएं

लातेहार, झारखंड- भाजपा विधायक प्रकाश राम ने रविवार को लगातार दूसरे दिन मोंगर पंचायत के कई गांवों का दौरा किया। उन्होंने विशुनपुर, केडू, हरखा, घुटुआ समेत कई टोलों में जाकर ग्रामीणों से मुलाकात की। लोगों ने पीने के पानी, सिंचाई, सड़क और नाली जैसी समस्याओं से जुड़े आवेदन विधायक को सौंपे। विधायक ने मौके पर ही कई समस्याओं का समाधान कराया।संबंधित अधिकारियों को फोन कर तुरंत कार्रवाई कराई। कुछ मामलों में अधिकारियों को जल्द समाधान का निर्देश दिया। विधायक ने कहा कि जनता ने उन्हें विधानसभा भेजा है, तो उनकी समस्याओं का समाधान करना उनका संकल्प है। लोग बेझिझक अपनी बात रखें, समाधान कराना उनका काम है.भाजपा नेता पवन कुमार ने बताया कि विधायक श्री राम पंचायत भ्रमण के क्रम में मोंगर, विशुनपुर, केडू, हरखा और घुटुआ समेत कई गांवों का भ्रमण किया. ग्रामीणों के द्वारा पीने का पानी, सिंचाई की व्यवस्था, सड़क और नाली समेत विभिन्न जन समस्या से संबधित आवेदन दिया गया. उन्होंने बताया कि 75 फीसदी समस्याओं का समाधान मौके पर करा दिया गया. शेष समस्यायों का समाधान का संबधित पदाधिकारियों को निर्देशित किया गया है.मौके पर राजेंद्र प्रसाद, पिंटू रजक, देवेंद्र राम, विनोद उरांव, अजय प्रसाद, संत गुप्ता, विशाल चंद्र साहू, अजय पांडेय, आनंद सिंह समेत बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे।

भारत निर्वाचन आयोग जल्द ही हितधारकों के लिए एक एकल-बिंदु ऐप लॉन्च करेगा

● मौजूदा 40 से अधिक आईटी ऐप्स को इस उन्नत यूआई यूएक्स वाले ऐप में शामिल किया जाएगा

नया ईसीआई-नेट नागरिकों के लिए चुनावी सेवाएं सुगम बनाएगा; चुनाव पदधारियों को डेटा प्रबंधन में आसानी और सुविधा होगी

स्वतंत्र प्रभात

रांची, झारखंड- एक प्रमुख पहल के तहत, भारत निर्वाचन आयोग निर्वाचकों और इनके अन्य हितधारकों जैसे चुनाव पदधारियों, राजनीतिक दलों और नागरिक समाज के लिए एक नया उपयोगकर्ता-अनुकूल डिजिटल इंटरफ़ेस विकसित कर रहा है। यह नया वन स्टॉप प्लेटफ़ॉर्म, ईसीआई नेट, आयोग के 40 से अधिक मौजूदा मोबाइल और वेब एप्लिकेशनों को एकीकृत करेगा और अनुकूल बनाएगा। ईसीआई नेट में एक सुंदर यूजर इंटरफेस (यूआई) और एक सरलीकृत यूजर एक्सपीरियंस (यूएक्स) होगा, जो चुनाव-संबंधित सभी गतिविधियों के लिए एक एकल प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराएगा। यह प्लेटफ़ॉर्म उपयोगकर्ताओं को कई ऐप डाउनलोड करने और नेविगेट करने तथा अलग-अलग लॉगिन याद रखने के बोझ को कम करने के लिए भी डिज़ाइन किया गया है। इस प्लेटफॉर्म की परिकल्पना भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार ने निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधु और निर्वाचन आयुक्त डॉ. विवेक जोशी की उपस्थिति में मार्च 2025 में आयोजित मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (सीईओ) के सम्मेलन के दौरान की थी। ईसीआई नेट उपयोगकर्ताओं को अपने डेस्कटॉप या स्मार्टफोन पर सुसंगत चुनावी डेटा तक पहुँचने में भी सक्षम बनाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि डेटा यथासंभव सटीक है, ईसीआई-नेट पर डेटा केवल आयोग के अधिकृत पदधारी द्वारा दर्ज किया जाएगा। संबंधित पदधारी ?द्वारा की गई प्रविष्टि से यह सुनिश्चित होगा कि हितधारकों को उपलब्ध कराया गया डेटा यथासंभव सटीक है। हालांकि, किसी भी विवाद के मामले में, सांविधिक फॉमों में विधिवत भरा गया प्राथमिक डेटा ही मान्य होगा। ईसीआई-नेट में वोटर हेल्पलाइन ऐप, वोटर टर्नआउट ऐप, सी-विजिल, सुविधा 2.0, ईएसएमएस, सक्षम और केवाईसी ऐप जैसे मौजूदा ऐप शामिल होंगे, जिन्हें कुल मिलाकर 5.5 करोड़ से ज्यादा बार डाउनलोड किया जा चुका है (ऐप्स की पूरी सूची संलग्न है)। ईसीआई-नेट से लगभग 100 करोड़ निर्वाचकों और सम्पूर्ण चुनावी तंत्र को फायदा मिलने की उम्मीद है, जिसमें देश भर के 10.5 लाख से ज़्यादा बूथ लेवल अधिकारी (बीएलओ), राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त लगभग 15 लाख बूथ लेवल एजेंट (बीएलए), लगभग 45 लाख मतदान पदधारी, 15,597 सहायक निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी (एईआरओ), 4,123 ईआरओ और 767 ज़िला चुनाव अधिकारी (डीईओ) शामिल हैं। ईसीआई-नेट पहले ही अपने विकास के उन्नत चरण में पहुंच चुका है और इसकी सुचारु कार्यक्षमता, उपयोग में आसानी और मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित करने के लिए कठोर परीक्षण किए जा रहे हैं। इसे सभी राज्यों/संघ राज्य-क्षेत्रों के 36 सीईओ, 767 डीईओ और उनके राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के 4,123 ईआरओ को शामिल करके एक विस्तृत परामर्शी प्रयोग करने के साथ-साथ समय-समय पर आयोग द्वारा जारी चुनावी ढांचे, अनुदेशों और पुस्तिकाओं के 9,000 पृष्ठों वाले 76 प्रकाशनों की समीक्षा करने के बाद विकसित किया जा रहा है। ईसीआई-नेट के माध्यम से उपलब्ध कराए गए आंकड़े लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950, 1951, निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण नियम, 1960 तथा निर्वाचनों का संचालन नियम, 1961 और आयोग द्वारा समय-समय पर जारी अनुदेशों द्वारा स्थापित कानूनी ढांचों के सख्त दायरे के भीतर होंगे तथा इसके अनुरूप होंगे।

वॉलंटरी ब्लड डोनर्स एसोसिएशन द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित, थैलेसीमिया पीड़ितों को समर्पित रहा आयोजन

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग, झारखंड- वॉलंटरी ब्लड डोनर्स एसोसिएशन की ओर से शेख भिखारी मेडिकल कॉलेज में मई माह का दूसरा रक्तदान शिविर आयोजित किया गया। यह शिविर थैलेसीमिया एवं रक्त की गंभीर कमी से जूझ रहे मरीजों के लिए समर्पित था। शिविर का उद्घाटन एसोसिएशन के अध्यक्ष निर्मल जैन, जिन्हें लोग 'ब्लड मैन' के नाम से भी जानते हैं, ने किया। शिविर की शुरुआत शक्ति कुमार और राजीव जैन सेठी द्वारा रक्तदान कर की गई। इसके बाद योगेश जैन, राहुल कुमार, रवि कुमार, अभिषेक कुमार, पुनीत सिंह, बसंत कुमार और सनी साव समेत कई अन्य रक्तदाताओं ने भी रक्तदान किया।

इस दौरान एक कैंसर पीड़ित मरीज को क्क पॉजिटिव रक्त की सख्त आवश्यकता थी, लेकिन ब्लड बैंक में वह उपलब्ध नहीं था। इस विषम परिस्थिति में राजीव जैन सेठी और योगेश जैन ने तत्परता से रक्तदान कर मरीज की जान बचाने में अहम भूमिका निभाई। रक्तदान के उपरांत, अध्यक्ष निर्मल जैन ने सभी रक्तदाताओं को उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित भी किया। इस अवसर पर श्री जैन ने कहा, "आज भी जागरूकता की कमी के कारण लोग रक्तदान से कतराते हैं, जबकि यह एक पूर्णतः सुरक्षित और स्वास्थ्यवर्धक प्रक्रिया है। रक्तदान से न केवल दूसरों की जान बचाई जा सकती है, बल्कि यह शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है। प्रत्येक स्वस्थ व्यक्ति को नियमित रक्तदान करना चाहिए।"इस शिविर को सफल बनाने में एसोसिएशन के सदस्यों के साथ-साथ मेडिकल कॉलेज के तकनीशियनों और कर्मचारियों का विशेष सहयोग रहा।

समस्तीपुर में महिला ने की आत्महत्या, पति से विवाद के बाद लगाई फांसी

स्वतंत्र प्रभात

समस्तीपुर- समस्तीपुर के दलसिंहसराय में एक महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली है। बताया गया है कि जलावन के लिए लकड़ी लाने को लेकर पति-पत्नी में विवाद हुआ था। लड़ाई के बाद पति पड़ोसी के घर आईपीएल मैच देखने चला गया। इधर महिला अपने कमरे में सुसाइड कर लिया। मृतका की पहचान मोहम्मद रिजवान की पत्नी इशरत खातून (40) के रूप में हुई है। घटना दलसिंहसराय थाना क्षेत्र के मालपुर पूर्वी पट्टी तरसपुर वार्ड-2 का है। ग्रामीणों ने बताया कि कल जलावन को लेकर पति-पत्नी के बीच विवाद हुआ था। उसके पति मोहम्मद रिजवान उस दिन काम पर नहीं गए थे। शाम को वह पड़ोसी के घर क्रिकेट मैच देखने चले गए। रात करीब 10 बजे मैच खत्म होने के बाद जब घर लौटे, तो दरवाजा अंदर से बंद था। आवाज लगाने पर उनके बेटे मोहम्मद फैजान ने दरवाजा खोला। तो देखा कि अंदर इशरत ने दुपट्टे से फांसी लगा ली थी। इसके बाद लोगों ने इसकी सुचना पुलिस को दी। सुचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया है। पड़ोसियों के अनुसार, इशरत शांत स्वभाव की महिला थीं, लेकिन कुछ दिनों से तनाव में रह रही थीं। इशरत के पांच बच्चे हैं। मृतका के बेटे मोहम्मद फैजान ने बताया कि पापा के आने पर दरवाजा खोले। रूम में आए तो देखे कि मम्मी ने फांसी लगा लिया था। मम्मी ने कल दोपहर में पापा को खाना बनाने के लिए लकड़ी लाने के लिए कहा था। पापा बोले कि अभी पैसे नहीं है, इस पर मम्मी गुस्सा हो गई थी। दलसिंहसराय थाना अध्यक्ष इरशाद आलम ने बताया कि प्रथम दृष्टया से मामला आत्महत्या का लगता है। प्रारंभिक जांच में घरेलू कलह को आत्महत्या का कारण माना जा रहा है। परिवार की आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं थी। इस कारण पति-पत्नी के बीच अक्सर विवाद होता रहता था। हालांकि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही आत्महत्या के सटीक कारणों का पता चल पाएगा। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

नमनदीप पब्लिक स्कूल के नवनिर्मित भवन का विधायक मनोज कुमार यादव ने फिता काटकर किया उद्घाटन

स्वतंत्र प्रभात

चौपारण, हजारीबाग, झारखंड- चौपारण प्रखण्ड के चोरदाहा पंचायत के ग्राम दनुआ में विगत पंद्रह वर्षो से संचालित विद्यालय के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन शनिवार को किया गया। इस नये भवन के उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि बरही विधानसभा के विधायक मनोज कुमार यादव ने किया। इस दौरान विधायक ने उपस्थित अभिभावकगण एवं बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि शिक्षा ही हमें महान बनाती हैं। अभिभावक अपने तमाम कष्टों को झेलते हुए भी वे अपने बच्चों को पढाए। वही विद्यालय के निदेशक सह प्रधानाध्यापक सतीश केशरी के द्वारा सहित पूरे विद्यालय के प्रति उज्जवल भविष्य की कामना किया साथ ही कहा कि इस पंचायत में शिक्षा की गुणवत्ता बढाने हेतु हमलोग की जब भी जरूरत होगी हरसंभव मदद करने को तैयार हैं। अब बच्चों को खुले आकाश के नीचे पठन पाठन नहीं करना पड़ेगा। नवनिर्मित भवन में अब सुचारू रूप से पठन-पाठन होगा। इससे पहले कार्यक्रम के दौरान विद्यालय परिवार के द्वारा विधायक मनोज कुमार यादव को बुके देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय के नए भवन बन जाने से आसपास के लोगों में खुशी का माहौल है। मौके पर चोरदाहा पंचायत मुखिया कसिया देवी, बैजनाथ सिंह, पूर्व मुखिया संघ अध्यक्ष राजदेव यादव, राजकुमार यादव, सुखदेव पासवान, सुरेश प्रसाद केशरी, सुरेंद्र प्रसाद केशरी, संदीप केशरी, सुजीत केशरी, सत्येंद्र केशरी, महेंद्र केशरी, बाढ़ो साव, मदन केशरी, सुरेंद्र केशरी, संतोष केशरी, रवि केशरी, अरविंद केशरी, प्रधानाध्यापक सह निदेशक सतीश प्रसाद केशरी, शिक्षक रंजन कुमार रजक, अमित कुमार केशरी, उमेश कुमार, शिक्षिका अंजली कुमारी, राखी कुमारी, मोनिका कुमारी व ग्रामीण समेत बच्चे आदि मौजूद थे।

बेटी आई... और जश्न में डूब गया पूरा परिवार

● सुरेंद्र खंडेलवाल परिवार ने रच दिया एक नई सोच और सांस्कृतिक बदलाव की मिसाल

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग, झारखंड- हज़ारीबाग के ऐतिहासिक इलाके बड़ी बाजार में उस दिन कुछ अलग ही चमक थी। आम दिनों की तुलना में वह सुबह बेहद खास थी। लोगों के चेहरों पर उत्साह था, गलियों में चहल-पहल थी, और हर ओर से एक ही बात सुनाई दे रही थी–बधाई हो,सुरेंद्र खंडेलवाल परिवार में बेटी आई है! जी हां, रितेश खंडेलवाल और उनकी धर्मपत्नी सोनाली खण्डेलवाल के घर लक्ष्मी का आगमन हुआ था। यह कोई आम संतान का जन्म नहीं था, बल्कि एक नव सोच का, नव चेतना का और समाज को दिशा देने वाले पल का जन्म था।

स्वागत ऐसा जैसे देवी पधारी हों

जैसे ही अस्पताल से बिटिया को लेकर माता-पिता घर पहुंचे,पूरे परिवार ने उन्हें फूलों की वर्षा से स्वागत किया। बिटिया रानी की पालकी जैसे ही गलियों से गुज़री, बुजुर्गों ने आशीर्वाद दिए और बच्चों ने तालियां बजाई। घर का मुख्य द्वार पीले और लाल फूलों से ढंका था। जैसे ही बेटी ने पहली बार घर में पांव रखा। घर की दीवारों पर रंग-बिरंगे गुब्बारे और तोरण झूल रहे थे। घर का हर आंगन तक कोना सजा हुआ था। रसोई से घी के लड्डू, खीर और पकवानों की खुशबू आ रही थी। घर की महिलाओं ने ढोल की थाप पर नृत्य किया। मोहल्ले की औरतें बेटी को आशीर्वाद दी. यह सब देखकर हर कोई यही कह उठा काश हर बेटी का स्वागत ऐसा ही हो!

सिर्फ उत्सव नहीं, संदेश भी था यह

सुरेंद्र खंडेलवाल परिवार का यह आयोजन एक गहरी सोच का प्रतिबिंब था। एक ऐसा युग, जब कहीं-कहीं आज भी बेटियों को लेकर भेदभाव होता है, वहां यह परिवार "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"जैसे नारों को व्यवहार में उतारने का उदाहरण बन गया। रितेश ने भावुक होकर कहा की मुझे हमेशा से लगता था कि बेटियां घर की रौनक होती हैं। जब मेरी बेटी आई, तो लगा जैसे मेरे जीवन का असली उद्देश्य अब शुरू हुआ है। उनकी पत्नी ने भी कहा की हम चाहते हैं कि हमारी बिटिया जब बड़ी हो, तो गर्व करे कि उसका स्वागत समाज ने खुले दिल से किया था। अन्य लोगों ने कहा की हमने आज तक ऐसा जश्न नहीं देखा, जहां बेटी के आने पर इतना भव्य स्वागत हो। यह हर परिवार के लिए प्रेरणा है।

एक छोटी पहल, एक बड़ा बदलाव

यह आयोजन सिर्फ एक व्यक्तिगत खुशी नहीं थी, बल्कि समाज में बेटियों के लिए सम्मान और प्रेम की नई लहर की शुरुआत थी। जब लोग सोचते हैं कि बदलाव सिर्फ सरकारों से आता है तब कोई सुरेंद्र खंडेलवाल परिवार जैसे लोग यह साबित कर देते हैं कि बदलाव की असली शुरुआत घर से होती है। बेटियों को बोझ नहीं, सौभाग्य समझना ही आज के भारत की पहचान बनना चाहिए। और इसी सोच को लेकर सुरेंद्र खंडेलवाल परिवार ने यह साबित कर दिया कि जब बेटी मुस्कुराती है, तब पूरा आंगन महकता है। और जब समाज उसे गले लगाता है, तब देश प्रगति करता है। स्वागत बेला में सुरेंद्र खंडेलवाल, शारदा खंडेलवाल, विनिता खंडेलवाल, प्रमोद खंडेलवाल, प्रगति, केशव, प्रतिभा सिंह, रोहित बजाज, विकास तिवारी, प्रिंस कसेरा, अशोक कुमार समेत दर्ज़नों लोग शामिल हुए।

श्रीदस प्रीमियर लीग सीजन 2 - येलो स्ट्राइकर्स और सुपर गर्ल्स ने मारी बाजी

● बरही विधायक मनोज यादव ने बढ़ाया छात्रों का हौसला, शिक्षक मीडिया के दोस्ताना मुकाबले ने लूटी वाहवाही

श्रीदस के छात्रों में अनुशासन और नेतृत्व की भावना काबिल-ए-तारीफ है - मनोज यादव

एसपीएल छात्रों की प्रतिभा निखारने, अनुशासन, टीम भावना और आत्मविश्वास जैसे गुणों को भी मजबूत किया - स्कूल मेन्टर व मैनेजर विकाश सिंह

स्वतंत्र प्रभात

बरही- देवचन्दा मोड़ स्थित श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल में आयोजित श्रीदस प्रीमियर लीग सीजन 2 का समापन रविवार को रोमांचक फाइनल मुकाबलों और भव्य समारोह के साथ हुआ। टूर्नामेंट में छात्रों ने अनुशासन, टीम भावना और शानदार खेल कौशल का प्रदर्शन कर दर्शकों का दिल जीत लिया। बालक वर्ग के फाइनल में येलो स्ट्राइकर्स ने स्काई टीम लायन्स को हराकर खिताब अपने नाम किया। येलो स्ट्राइकर्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 10 ओवर में 6 विकेट खोकर 58 रन बनाए। जवाब में स्काई लायन्स 42 रन पर सिमट गई। कुंदन को मैन ऑफ द मैच और शुभम को मैन ऑफ द सीरीज चुना गया। श्रीदस टाइटन्स को फेयर प्ले अवॉर्ड से सम्मानित किया गया। महिला वर्ग के फाइनल में श्रीदस सुपर गर्ल्स ने श्रीदस मार्वेल्स को 20 रनों से हराया। सुपर गर्ल्स ने 6 ओवर में 61 रन बनाए, जबकि मार्वेल्स 41 रन पर ढेर हो गई। अर्चना को प्लेयर ऑफ द मैच और अदिति को प्लेयर ऑफ द सीरीज का खिताब मिला। टूर्नामेंट के दौरान शिक्षकों और स्थानीय मीडिया कर्मियों के बीच एक दोस्ताना क्रिकेट मैच भी खेला गया, जिसने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। यह मुकाबला शिक्षा और मीडिया जगत के बीच आपसी तालमेल को बढ़ावा देने का अनूठा प्रयास रहा। समापन समारोह में मुख्य अतिथि बरही विधायक मनोज यादव ने विजेताओं को ट्रॉफी और प्रमाण पत्र प्रदान किए। उन्होंने कहा कि श्रीदस इंटरनेशनल स्कूल शिक्षा के साथ-साथ खेलों में भी सराहनीय कार्य कर रहा है। यहां के छात्रों में अनुशासन और नेतृत्व की भावना काबिल ए तारीफ है ढ्ढ वहीं स्कूल मेन्टर व मैनेजर विकाश सिंह ने कहा कि श्रीदस प्रीमियर लीग सीजन 2 ने एक बार फिर साबित कर दिया कि खेल केवल इस मंच ने न सिर्फ छात्रों की प्रतिभा को निखारा, बल्कि उनमें अनुशासन, टीम भावना और आत्मविश्वास जैसे गुणों को भी मजबूत किया। येलो स्ट्राइकर्स और सुपर गर्ल्स की जीत हर छात्र के जोश और मेहनत की मिसाल है। यह आयोजन न सिर्फ खेल का उत्सव था, बल्कि छात्रों की प्रतिभा और जोश का शानदार प्रदर्शन भी रहा। अब सभी की नजरें एसपीएल सीजन 3 पर टिकी हैं।

नक्सलियों का तांडव- खनिज सर्वे कर रही कंपनी की 8 गाड़ियों को किया आग के हवाले

स्वतंत्र प्रभात

चंदवा, झारखंड- चंदवा- लातेहार जिले के चंदवा प्रखंड से एक बड़ी खबर सामने आ रही हैं।सीएमपीडीआई के द्वारा की जा रही भूगर्भ सर्वेक्षण कार्य में लगे पांच वाहनों को जला दिया गया। उग्रवादियों ने कई राउंड फायरिंग कर दहशत फैलानी को कोशिश भी की।जहां चंदवा थाना क्षेत्र के तूरीसोत गांव में 3 मई यानी कल रात नक्सलियों ने CMPDI की कोयला सर्वेक्षण साइट पर हमला कर तांडव मचाया।इस दौरान नक्सलियों ने दो ड्रिलिंग मशीन, दो पिकअप वैन,दो कार और दो ट्रकों समेत कुल आठ वाहनों को आग के हवाले कर दिया,जिसके कारण सभी वाहन जलकर खाक हो गए। इसके अलावा हमले में नक्सलियों ने फायरिंग की और करीब 1 घंटे तक हंगामा करने के बाद घटनास्थल से फरार हो गए। प्रारंभिक जांच के आधार पर और स्थानीय लोगों को पहले माओवादी संगठन का हाथ होने की आशंका है,हालांकि पुलिस ने अभी इसकी कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की हैं। इस घटना की सूचना मिलते ही पलामू डीआईजी वाई.एस. रमेश और लातेहार एसपी कुमार गौरव घटनास्थल पर रविवार सुबह पहुंचे और एसपी के निर्देश पर चंदवा थाना प्रभारी रणधीर कुमार सिंह,बालूमाथ अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी डीएसपी विनोद रवानी के नेतृत्व में पुलिस ने इलाके को सील कर छापेमारी कर जांच शुरु कर दी।डीएसपी विनोद रवानी ने कहा, "घटना के संबंध में मैं इतना कहना चाहूंगा कि मामले की जांच हो रही है। पुलिस घटना स्थल पर पहुंचकर सर्च अभियान चला रही है।"फिलहाल पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि इस घटना को अंजाम देने के पीछे किस नक्सली संगठन का हाथ है। हालांकि, स्थानीय लोगों का कहना है कि इस हमले की शैली से प्रतीत होता है कि इसके पीछे माओवादी संगठन हो सकता है। यह मामला लातेहार,चतरा और रांची जिला के सीमावर्ती क्षेत्र चंदवा प्रखंड के चकला पंचायत अंतर्गत तुरीसोत गांव की है।अब देखना दिलचस्प होगा की उग्रवादियों के द्वारा तांडव मचाए गए इस आपराधिक घटना को लातेहार पुलिस कितना जल्द अपराधियों-उग्रवादियों पर काबू पा सकते हैं।

कोडरमा जेजेए जिला अध्यक्ष के निधन पर शोक

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग, झारखंड- जेजेए (झारखंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन) के कोडरमा जिलाध्यक्ष आलोक कुमार सिन्हा के आकस्मिक निधन पर हजारीबाग जेजेए जिला कमिटी और हजारीबाग प्रेस क्लब ने संयुक्त रूप से 2 मिनट का मौन रख श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर जेजेए जिला अध्यक्ष कृष्णा गुप्ता ने कहा कि आलोक सिन्हा जैसे कर्मठ पत्रकार और जेजेए के स्तंभ के रूप में खड़े रहने वाले अब हमारे बीच नहीं है। आज उनके निधन पर शोक सभा का आयोजन किया गया है। वहीं उपस्थित अन्य पत्रकारों ने कहा कि आलोक सिन्हा सदा पत्रकारों के लिए खड़े रहते थे, ऐसे साथी के जाने से पत्रकार जगत को अपूर्णीय क्षति हुई है। शोक व्यक्त करने वालों में उपाध्यक्ष दीपक सिंह, वरिष्ठ पत्रकार सुबोध मिश्रा, अरविंद राणा, गौरव प्रकाश, सीतेश तिवारी, अमरकांत, पीयूष मिश्रा, भावेश मिश्रा, सुशांत सोनी, रवि शर्मा, बबलू उपाध्याय, अनिल कुमार, आशीष यादव, सूरज कुमार, सुनील श्रीवास्तव समेत कई उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

अदालत में हाजिर न होने पर पुलिस ने वारंटी को दबोचा

खेतासराय(जौनपुर)। न्यायालय में हाजिर न होने पर स्थानीय पुलिस ने लतीफपुर निवासी एक वारंटी को यहाँ दबिश देकर हिरासत में ले लिया। पुलिस ने आवश्यक कार्यवाही के बाद चालान न्यायालय भेज दिया। उक्त गांव निवासी हंसराज बिन्द पुत्र मिट्ठू बिन्द के घर पर रविवार को दबिश देकर गिरफ्तार किया गया है, वह धारा 147/323/504/506/427 मामले में न्यायालय से वांछित था। गिरफ्तार करने वाली टीम में उप निरीक्षक अनिल कुमार सिंह साथ हेड कांस्टेबल त्रिगुण कुमार समेत अन्य लोग शामिल रहे।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग सारा सामान जलकर खाक

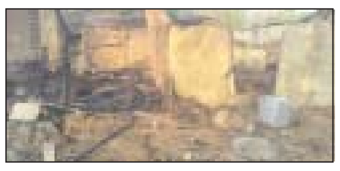

जौनपुर/ बक्शा विकासखंड के भकड़ी में रविवार की रात्रि लगभग ग्यारह बजे कमलेश यादव के छप्पर में आग लग गई जब जिससे छप्पर में रखा खाद्यान्न सामाग्री जल गया पूछने पर कमलेश यादव ने बताया कि रात्रि का समय था जब तक लोग समझ पाते तब तक चार छप्पर व उसमें रखा गेहूं,चावल,हाल में खोदकर रखी लहसून,प्याज व कपड़े सब जल गये।

आरपीएफ व विजलेंस टीम की छापेमारी, दो हिरासत में

110 टिकट, दो लैपटॉप व दो मोबाइल बरामद, टिकट दलालों में हड़कंप

जौनपुर। शाहगंज तहसील क्षेत्र के चिलबिली व चम्पानगर बाजार में उस समय हड़कंप मच गया, जब रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ)लखनऊ की विजिलेंस, शाहगंज आरपीएफ की संयुक्त टीम अचानक टिकट दलालों की तलाश में आ धमकी। कार्रवाई में विभिन्न स्थानों के 110 टिकटों, दो लैपटॉप और दो मोबाइल समेत दो दलालों को पकड़ने में टीम को सफलता मिली। रेलवे की धारा 143 के तहत मुकदमा दर्ज करते हुए रेलवे पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी रही। नाम न छापने की शर्त पर रेलवे पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि प्रतिबंधित साफ्टवेयर से अवैध टिकट बनाने की सूचना पर क्षेत्र के चिलबिली और चम्पानगर बाजार में संयुक्त रूप से कार्रवाई की गई। टीम की इस कार्रवाई से टिकट दलालों के बीच जहां हड़कंप मच गया, वहीं चम्पानगर बाजार से चिलबिली गांव निवासी अब्दुल हफीज पुत्र अब्दुल सलाम और सगीर खान पुत्र इलियास टीम के हत्थे चढ़ गए। इस दौरान उनके पास से विभिन्न स्थानों के 110 टिकट, लैपटॉप बरामद करने में टीम को सफलता मिली। मामले में रेलवे पुलिस धारा 143 के तहत मुकदमा दर्ज कर दोनों से मामले में जांच पड़ताल में जुटी हुई है। सूत्रों की मानें काफी अर्से से उक्त गोरखधंधा बड़े पैमाने पर क्षेत्र में फल फूल रहा है।

कायस्थ समाज के धार्मिक आयोजन में शामिल हुए वरिष्ठ कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह

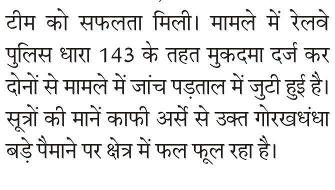

हजारीबाग, झारखंड- भगवान चित्रगुप्त के प्रकटोत्सव के अवसर पर हजारीबाग के छठ तालाब स्थित श्री चित्रगुप्त मंदिर परिसर में एक भव्य धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कायस्थ समाज द्वारा आयोजित इस पारंपरिक समारोह में श्रद्धालुओं ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम में पूजा, हवन, भंडारा और प्रसाद वितरण जैसे धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुए। इस अवसर पर कांग्रेस के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह शामिल हुए। उन्होंने समाज को प्रकटोत्सव की शुभकामनाएं दीं। श्री सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार के धार्मिक आयोजन समाज में भाईचारे, एकता और सांस्कृतिक मूल्यों को सशक्त करते हैं। उन्होंने कायस्थ समाज को शिक्षा, अनुशासन और सेवा का प्रतीक बताते हुए बधाई दी और भविष्य में समाज के हित में हरसंभव सहयोग का आश्वासन भी दिया। पूजा कार्यक्रम का नेतृत्व मंदिर के पुजारी रणधीर कुमार पाण्डेय ने किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति रही, जिनमें अनुपम सिन्हा, राज प्रकाश, विभूति नारायण सिन्हा, संजीव कुमार बॉबी, प्रभात प्रधान, सुनील श्रीवास्तव, अनुज सिन्हा, बापी करण, दीप प्रकाश नारायण, शुभम प्रकाश, सुमित प्रकाश बीटू, विवेक प्रकाश और शशिकांत प्रमुख रूप से शामिल थे।

आजादी के बाद पहली बार मोदी ने जातीय जनगणना का निर्णय लिया है, यह सामाजिक न्याय और सहभागिता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है- अनिल गुप्ता

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर- भाजपा ओबीसी मोर्चा ने जाति जनगणना के निर्णय पर नगर अध्यक्ष कमलेश कुमार निषाद के अध्यक्षता मे सीहीपुर स्थित कार्यालय पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया आयोजित सामाजिक सम्मेलन में ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष अनिल गुप्ता मुख्य अतिथि रहे। सर्वप्रथम पार्टी के पुरोधा पंडित दीनदयाल उपाध्याय एवं श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम का संचालन जिला महामंत्री पिछड़ा मोर्चा अमर जौहरी ने की। आयोजित कार्यक्रम मे आये हुये पिछड़े और अति पिछड़े लोगो को सम्बोधित करते हुये मुख्य अतिथि जिलाध्यक्ष पिछड़ा मोर्चा अनिल गुप्ता ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जाति जनगणना का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। इससे भारत के अन्य पिछड़े एवं अति पिछड़े वर्ग के लोगों को अपनी संख्या की पहचान होगी साथ ही संख्या के अनुपात में संवैधानिक अधिकार भी मिलेंगे इस निर्णय से पूरे देश का जनमानस खुश है आखिरी जातीय जनगणना 1931 में अंग्रेजी शासन के दौरान हुई थी। आजादी के बाद पहली बार प्रधानमंत्री मोदी ने जातीय जनगणना का निर्णय लिया है। इसलिए यह निर्णय सामाजिक न्याय और सहभागिता की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने विपक्ष पर आरोप लगाया कि वह जाति जनगणना को लेकर झूठ फैला रहा है भारत में अधिकांश समय कांग्रेस की सरकार रही, लेकिन उसने कभी जाति जनगणना का निर्णय नहीं लिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की जातीय जनगणना के फैसले से आज पिछड़े वर्ग के लोगों में जश्न का माहौल है, लोग खुशियां मना रहे हैं, लड्डू बांट रहे हैं तथा ढोल-बैण्ड बाजे बजाकर प्रधानमंत्री जी के फैसले का स्वागत कर रहे हैं और करें भी क्यों नहीं, क्योंकि जातीय जनगणना होने से सामाजिक न्याय एवं संवैधानिक अधिकारों को पाने के नये अवसर मिलने वाले हैं। ओबीसी मोर्चा, उ0प्र0 जहाँ एक तरफ जातीय जनगणना का फैसला लेने वाले देश के प्रधानमंत्री आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी का आभार व्यक्त करेगा वहीं कांग्रेस, सपा एवं गैर भाजपाई दलों जिनकी सोच, मानसिकता एवं एजेण्डा पिछड़ा विरोधी रहा है, उसका पर्दाफाश भी करेगा। नगर उत्तरी के अध्यक्ष सारिका सोनी ने कहा कि ओबीसी समाज के लोगों को शिक्षा, अर्थ व्यवस्था एवं राजनीति में भी आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। मोदी जी ने साबित किया है कि वह जो कहते हैं, करके भी दिखाते हैं। भाजपा की विचारधारा अन्योदय से सर्वोदय तक जाने की है। जो जातीय जनगणना के फैसले से सही प्रतीत हो रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सही मायनों में देश की 140 करोड़ जनता के रहनुमा है, जिन्होंने «सबका साथ सबका विकास» की अवधारणा पर सबको आगे बढ़ाने का काम किया है। ओबीसी समाज के लिए तो प्रधानमंत्री मोदी देव के समान है, जिन्होंने ओबीसी समाज के दर्द व मर्म को समझा।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए कमलेश निषाद ने कहा कि देश में गांधी परिवार से 03 प्रधानमंत्री बने हैं जिनमें पं0 जवाहरलाल नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गांधी के अलावा राजीव गांधी, क्या कभी गांधी परिवार ने ओबीसी समाज के लोगों के इस दर्द को समझा ? और समझता भी क्यों, क्योंकि गांधी परिवार तो हमेशा आरक्षण का विरोधी रहा है, ओबीसी समाज का विरोधी रहा है, दलितो का विरोधी रहा है। गांधी परिवार की यह आरक्षण विरोधी नियत देश के सामने उस समय उजागर हो गयी थी जब 1955 के काका कालेलकर आयोग की रिपोर्ट को पं0 जवाहरलाल नेहरू ने लागू नहीं होने दिया और 1980 में बी.पी. मण्डल आयो की रिपोर्ट का तो खुलकर संसद एवं सड़क पर गांधी परिवार ने विरोध किया और सच तो यह भी है कि यदि 1990 में भाजपा के समर्थन से सरकार नहीं बनी होती तो देश को कभी ओबीसी के लोगों को 27 प्रतिशत आरक्षण भी नहीं मिला होता। कांग्रेस पार्टी की नियत यदि ओबीसी समाज के लिए ठीक होती तो इस समाज को आरक्षण का लाभ 1990 से नहीं बल्कि आजादी के तुरन्त बाद से मिलना था। आज ओबीसी समाज भारत की मुख्यधारा से जुड़ा होता तथा बराबरी का स्थान व सम्मान पा चुका होता।

मुख्यमंत्री मॉडल कंपोजिट विद्यालय के जमीन चिन्हित करने के लिए पहुंचे जिलाधिकारी डॉक्टर दिनेश चंद्र

स्वतंत्र प्रभात

रामपुर (जौनपुर) जिले के तेज तर्रार जिलाधिकारी डॉक्टर दिनेश चंद्र रविवार को रामपुर विकासखंड के पूरेदयाल गांव में पहुंचे। जिलाधिकारी डॉक्टर दिनेश चंद्र ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के दिशा निर्देश में शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए मुख्यमंत्री मॉडल विद्यालय के निर्माण के लिए पूरेदयाल गांव में जमीन चिन्हित करने के लिए राजस्व टीम के साथ पहुंचे, उनके साथ जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी डॉक्टर गोरखनाथ पटेल, मुख्य विकास अधिकारी ध्रुव खड़िया, मड़ियाहु के तेज तर्रार उपजिलाधिकारी कुणाल गौरव सहित राजस्व विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

जिलाधिकारी ने बताया कि मुख्यमंत्री के दिशा निर्देश पर यहां मुख्यमंत्री मॉडल विद्यालय बनेगा उसके लिए जमीन चिन्हित करने के लिए राजस्व के टीम सहित सभी लोग उपस्थित हुए है। जिलाधिकारी ने बताया कि यह विद्यालय जब बनकर तैयार होगा तो काफी सुविधाजनक रहेगा विद्यालय मे बहुत ही अच्छी तरह से पढ़ाई और कैंटीन, खेल कूद का मैदान सहित सभी व्यवस्था रहेगी। आंगनबाड़ी से लेकर कक्षा 12 तक सभी छात्र-छात्राएं पढ़ सकेंगे इसके लिए काफी सुविधाजनक होगा। जिलाधिकारी ने वहां पर सभी ग्रामीणों को मिठाई भी खिलाया सभी जिलाधिकारी द्वारा मिठाई पाकर बहुत ही खुश दिखे और जिलाधिकारी के इस सराहनीय कार्य से लोग प्रशंसा ने कर रहे हैं।

सड़क हादसे में पूर्व प्रधान की मौत

स्वतंत्र प्रभात

जौनपुर। शाहगंज तहसील क्षेत्र के अतरडीहा गांव की पूर्व प्रधान सीता देवी की शनिवार सुबह एक सड़क हादसे में मौत हो गई। वह भतीजे के साथ बाइक पर सवार होकर मायके से घर वापसी कर रही थीं। सूचना पर पहुंची पुलिस ने लाश को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्रवाई में जुट गई।शनिवार सुबह पूर्व प्रधान सीतापति (65) पत्नी श्याम अवध रजक अम्बेडकर नगर जनपद के जलालपुर थाना के शाहपुर गांव स्थित अपने मायके से भतीजे नगेन्द्र संग बाइक पर सवार होकर घर आ रही थीं। अखण्डनगर त्रिकौलिया मार्ग पर असैथा बाजार के पास पहुंची कि विपरीत दिशा से आ रहे ईंट लदे ट्रैक्टर से बाइक टकराकर गिर गई। ट्राली के नीचे आ जाने से महिला की दर्दनाक मौत हो गई। वहीं भतीजे को हल्की फुल्की चोट आई। मौके पर जुटे लोगों ने एम्बुलेंस द्वारा स्थानीय सीएचसी ले गए, जहां चिकित्सक द्वारा सीता को मृत घोषित कर दिया।

मौत होने की जानकारी होते ही परिजनों में जहां कोहराम मच गया।सूचना पर पहुंची पुलिस ट्रैक्टर और को अपने कब्जे में लेकर अग्रिम कार्रवाई में जुटी है। पुलिस मृतका के बेटे अकूलचंद की तहरीर पर मामले में मुकदमा दर्ज कर लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

बूंद-बूंद को तरसेगा पाकिस्तान, भारत ने बगलिहार डैम से चिनाब नदी का पानी रोका

पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान पर कड़ी कार्रवाई करते हुए चिनाब नदी पर बगलिहार बांध से पानी के प्रवाह को कम कर दिया है. यह कदम सिंधु जल संधि को स्थगित करने के बाद उठाया गया है. भारत ने झेलम नदी पर किशनगंगा बांध पर भी इसी तरह के उपायों की योजना बनाई है।

स्वतंत्र प्रभात

पहलगाम आतंकी हमले को लेकर भारत का लगातार एक्शन जारी है. पाकिस्तान को दंडित करने के लिए सिंधु जल संधि को स्थगित करने के कुछ दिनों बाद भारत ने चिनाब नदी पर बगलिहार बांध के माध्यम से पानी के प्रवाह को कम कर दिया है और झेलम नदी पर किशनगंगा बांध पर भी इसी तरह के उपायों की योजना बना रहा है। इस मामले से परिचित सूत्र ने समाचार एजेंसी एएनआई को बताया कि ये जलविद्युत बांध जम्मू के रामबन में बगलिहार और उत्तरी कश्मीर में किशनगंगा भारत को पानी छोड़ने के समय को विनियमित करने की क्षमता प्रदान करते हैं।

बगलिहार बांध को लेकर पाकिस्तान ने अतीत में विश्व बैंक से मध्यस्थता की मांग की है. झेलम की सहायक नदी नीलम नदी पर इसके प्रभाव के संबंध में किशनगंगा बांध को कानूनी और कूटनीतिक जांच का सामना करना पड़ा है भारत से पाकिस्तान में बहने वाली ये नदियां देश की जीवन रेखाएं मानी जाती हैं क्योंकि यह सिंचाई और पीने योग्य पानी की आपूर्ति के लिए इन पर निर्भर है.

पहलगाम हमले के बाद भारत ने उठाए सख्त कदम

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हुए आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के खिलाफ सख्त कदम उठाते हुए कूटनीतिक, आर्थिक और जल संसाधन संबंधी कई निर्णय लागू किए हैं। भारत सरकार ने प्रतिक्रिया स्वरूप सिंधु जल संधि को स्थगित करने की घोषणा की है और पाकिस्तान में बहने वाली नदियों खासकर चिनाब और झेलम के प्रवाह को नियंत्रित करने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं. अधिकारियों के अनुसार, बगलिहार बांध (चिनाब नदी पर) से पानी की आपूर्ति में कटौती शुरू कर दी गई है, जबकि किशनगंगा बांध (झेलम की सहायक नीलम नदी पर) पर भी इसी प्रकार के उपायों की योजना बनाई जा रही है।

भारत के इन कदमों से पाकिस्तान में चिंता की लहर दौड़ गई है. पाकिस्तान ने भारत के जल निर्णयों को युद्ध जैसी कार्रवाई करार दिया है. पूर्व पाकिस्तानी विदेश मंत्री बिलावल भुट्टो ने भारत को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि सिंधु का पानी रोका गया, तो "सिंधु में पानी नहीं, खून बहेगा।"

भारत के एक्शन से बिलबिला रहा है पाकिस्तान

भारत ने इससे पहले पाकिस्तान के साथ अपने राजनयिक संबंधों में कटौती की थी, साथ ही भारतीय बंदरगाहों से पाकिस्तानी जहाजों के प्रवेश पर रोक और आयात पर प्रतिबंध भी लागू किया गया है।

इस बीच नियंत्रण रेखा (LoC) और अंतरराष्ट्रीय सीमा (IB) पर भी तनाव बढ़ता जा रहा है. पाकिस्तान की ओर से लगातार दस रातों से संघर्षविराम का उल्लंघन किया जा रहा है, जिसका भारतीय सेना ने मुंहतोड़ जवाब दिया है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले सप्ताह एक बयान में कहा था कि भारत इस हमले के दोषियों को किसी भी कीमत पर न्याय के कटघरे में लाकर रहेगा।

जल संसाधन बने भारत के कूटनीतिक हथियार

भारत द्वारा जल संसाधनों को कूटनीतिक हथियार की तरह इस्तेमाल किए जाने को रणनीतिक परिवर्तन के रूप में देखा जा रहा है. सिंधु, झेलम और चिनाब जैसी नदियां पाकिस्तान के लिए सिंचाई और पेयजल का प्रमुख स्रोत हैं, और इन पर भारत की नियंत्रण क्षमता को लेकर इस्लामाबाद में भारी बेचैनी है। सिंधु जल संधि 1960 में भारत और पाकिस्तान के बीच हुई थी, जिसमें विश्व बैंक ने मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी. यह अब तक दक्षिण एशिया में जल संबंधी विवादों से बचने का प्रमुख साधन रही है।

भगवान श्री चित्रगुप्त का प्रकटोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

● विधायक प्रदीप प्रसाद ने मत्था टेक आशीर्वाद लिया एवं सभी श्रद्धालुओं को दी शुभकामनाएं

स्वतंत्र प्रभात

हजारीबाग- हजारीबाग में भगवान श्री चित्रगुप्त के प्रकटोत्सव को कायस्थ समाज ने 04 मई को धूमधाम से मनाया। यह आयोजन छठ तालाब स्थित श्री चित्रगुप्त मंदिर में हुआ, जहां भव्य पूजा, हवन और भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मंदिर में खिचड़ी का प्रसाद वितरित किया गया, जिसे समाज के सभी वर्गों के बीच बांटा गया। कार्यक्रम में मंदिर के पुजारी आर के पाण्डेय, अनुपम सिन्हा, राज प्रकाश, विभूति नारायण सिन्हा, संजीव कुमार बॉबी, प्रभात प्रधान, सुनील श्रीवास्तव, अनुज सिन्हा, आशीष सिन्हा, बापी करण, दीप प्रकाश नारायण, सुभम प्रकाश, सुमित प्रकाश बीटू, विवेक प्रकाश, शशिकांत सहित समाज के सभी गणमान्य लोग मुख्य रूप से उपस्थित थे। इस आयोजन में भगवान श्री चित्रगुप्त के पूरे परिवार की मूर्तियों की ब्राह्मणों ने वैदिक मंत्रोच्चार विधिपूर्वक पूजा अर्चना की। इसमें भगवान चित्रगुप्त के साथ-साथ माता दुर्गा, दो माताएं और 12 बेटों की मूर्तियों की पूजा की गई।

आज हज़ारीबाग के सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने श्री चित्रगुप्त मंदिर, छठ तालाब में भगवान श्री चित्रगुप्त जी के प्रकटोत्सव में शामिल शामिल होते हुए उन्होंने कहा कि भगवान श्री चित्रगुप्त जी के चरणों में उपस्थित होकर आत्मिक संतोष और आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति हुई। उन्होंने इस पावन अवसर पर सभी श्रद्धालुओं को हार्दिक शुभकामनाएं भी दी। उन्होंने कहा कि न्याय, धर्म और कर्म के प्रतीक भगवान चित्रगुप्त जी का आशीर्वाद हम सभी पर बना रहे। यह उत्सव हमारी आस्था, परंपरा और सामाजिक एकता को सुदृढ़ करता है। ऐसे आयोजनों से हमारी सांस्कृतिक विरासत और लोकसंस्कारों को नई ऊर्जा मिलती है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि यह

पुण्य अवसर सभी के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि लेकर आए। इस अवसर पे मंदिर के वरिष्ठ सदस्य अनुपम सिन्हा ने इस आयोजन की सफलता के लिए सभी समाजिक कार्यकर्ताओं और श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजनों से समाज में धार्मिक और सांस्कृतिक जागरूकता बढ़ती है। उन्होंने सभी से इस परंपरा को आगे बढ़ाने की अपील की।

वरिष्ठ सदस्य राज प्रकाश ने कहा कि भगवान चित्रगुप्त की पूजा से समाज में एकता और भाईचारे की भावना मजबूत होती है। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजनों से समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और आगे बढ़ाने में मदद मिलती है। इस आयोजन में आतिशबाजी का भी आयोजन किया गया, जिससे वातावरण में उल्लास और खुशी का माहौल बना। समाज के लोगों ने एकजुट होकर इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भगवान चित्रगुप्त की पूजा न केवल धार्मिक महत्व रखती है, बल्कि यह समाज में एकता, भाईचारे और सांस्कृतिक धरोहर को संजोने का भी एक माध्यम है। हजारीबाग में इस आयोजन ने यह सिद्ध कर दिया कि समाज के लोग अपनी परंपराओं को जीवित रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

सम्पूर्ण समाधान दिवस में आये 70 मामले, 7 का मौके पर हुआ निस्तारण

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। जिलाधिकारी रवीश गुप्ता की अध्यक्षता में तहसील हरैया में सम्पूर्ण समाधान दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अभिनन्द ने भी शिकायकर्ताओं की समस्याओं को सुना। जिलाधिकारी ने सम्पूर्ण समाधान दिवस में जनता की शिकायतों को सुनते हुए सम्बंधित अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि समस्याओं का निस्तारण गंभीरता के साथ किया जाए। जिलाधिकारी ने कहा कि अधिकारी शिक़ायतकर्ताओं से सहजता से बात करें और स्थलीय निरीक्षण कर गुणवत्तापूर्ण व ससमय समस्याओं का निस्तारण करें। शिकायतों के निस्तारण करते समय अधिकारी शिकायतकर्ताओं से उनके मोबाइल नम्बर पर सम्पर्क करके इस बात को भी सुनिश्चित कर ले कि शिकायतकर्ता को संतुष्टि मिली है या नहीं। जिलाधिकारी ने यह भी निर्देश दिए कि भूमि सम्बन्धी मामलों का प्राथमिकता के साथ निस्तारण किया जाए। आवास, चकमार्ग व रास्ते, नाली की समस्याओं को प्राथमिकता के साथ निराकरण करने के निर्देश अधिकारियों को दिये। खतौनी में नाम आदि की त्रुटियों को सही करने के निर्देश भी दिए। उन्होने सभी सम्बन्धित विभाग के अधिकारियों को मौके पर ही एकीकृत प्रयास कर निस्तारण के निर्देश दिये गये। उन्होंने कहा कि शासन की मंशा के अनुरूप जन शिकायतों का निस्तारण सम्बन्धित अधिकारीगण प्राथमिकता के आधार पर गुणवत्तापूर्ण ढंग से करते हुए शिकायतकर्ता को पूर्ण रूप से संतुष्ट किया जाय। सम्पूर्ण समाधान दिवस में कुल 70 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें से 7 का मौके पर निस्तारण किया गया। इसमें राजस्व के 29, पुलिस के 12, विकास के 12, विद्युत के 08 तथा अन्य विभागों से 09 प्रार्थना पत्र प्राप्त हुये। सम्पूर्ण समाधान दिवस में सीएमओ डा. राजीव निगम, प्रभारी उप जिलाधिकारी सत्येन्द्र सिंह, जिला विकास अधिकारी अजय सिंह, पीडी राजेश कुमार, बीएसए अनूप तिवारी, मत्स्य कार्यकारी अधिकारी संदीप वर्मा, सीवीओ डा. अरूण कुमार गुप्ता, डीएचओ अरूण त्रिपाठी, जिला समाज कल्याण अधिकारी श्रीप्रकाश पाण्डेय, क्षेत्राधिकारी पुलिस, तहसीलदार सहित अन्य संबंधित विभागीय अधिकारीगण उपस्थित रहें।

गौर विकासखंडकेग्राम पंचायत गयाजीतपुर में फर्जी आशा बहू की नियुक्ति करने का लगा आरोप

● आशा बहू की फर्जी नियुक्ति उच्च अधिकारियों से शिकायत करने के बाद भी आशा बहू नियुक्ति के फर्जीवाड़ा मामले में नही हुई कार्यवाह- फर्जी आशा बहू मामले में कार्यवाही करने के बजाएं जिम्मेदार अधिकारियों के द्वारा की जा रही लीपापोती

स्वतंत्र प्रभात

बस्ती। बस्ती जिले के गौर ब्लाक क्षेत्र मेंराष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के तहत निर्धन एवं स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित महिलाओं को गुणवत्ता परख चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराने व मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी लाने के लिए गांव-गांव में आशाओं की तैनाती की गई है लेकिन गौर विकास खंड के गयाजीतपुर में आशा नियुक्ति शासनादेश को ताखकर रख की गई है। आशा बहू की नियुक्ति को लेकर क्षेत्र में तरह - तरह चर्चाएं चल रही है। आपको बता दे कि गौर विकास खंड में कुल 108 ग्राम पंचायतें हैं। हर ग्राम पंचायत में आशा कार्यकत्री तैनात हैं। शासन का आदेश है कि 1000 की आबादी पर एक आशा की तैनाती करने का शासनादेश है।ग्राम पंचायत गयाजीतपुर में फर्जी आशा बहू की नियुक्ति करने का आरोप लगा है कि मुड़िलवा गयाजीतपुर बैरीखाला ये तीनों गांव वर्ष 2006 में एक ग्राम पंचायत में शामिल थी और ये मुड़िलवा ग्राम पंचायत के नाम से जानी जाती थी और यहां की आबादी जनसंख्या के अनुसार 1000 थी और यहां आशा बहू की नियुक्ति जनतीरादेवी पत्नी राकेश कुमार की गई थी जो बैरीखाला गाव की निवासी थी। 2015 में जनसंख्या तकरीबन 2050 की वृद्धि के अनुसार मुड़िलवा ग्राम पंचायत से गयाजीतपुर और बैरीखाला गाव को अलग कर गयाजीतपुर नाम से एक अलग ग्राम पंचायत बनाई गई थी।

शासनादेश के अनुसार 1000 आबादी वाले ग्राम पंचायतों में आशा बहू की नियुक्ति करने का आदेश है ग्राम पंचायत में आशा बहू की नियुक्ति के लिए ग्राम पंचायत की मूल / स्थाई निवासी होना आवश्यक है वही पूरे उत्तर प्रदेश में आशा बहुओ की रिक्त पदों के सम्बंध में वर्ष 2022-2023 में अनुमोदन प्राप्त होने के बाद नियुक्ति को राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन निदेशक ने सभी मुख्य चिकित्सा अधिकारियों को नोटिफिकेशन जारी कर रिक्त पदों भरने के लिए सभी मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिया गया था जिसमें शासनादेश के अनुसार विकासखण्ड स्तर पर तैनात बीसीपीएम को रिक्त पदों की सूची भेजने की जिम्मेदार थी । गौर विकासखंड के अन्तर्गत 8 आशाओं की नियुक्ति हुई थी जिसमें गयाजीतपुर आशा बहू की नियुक्ति के बाद से ही लगातार खींचतान जारी है और 2006 में नियुक्त आशा कार्यकत्री जनतीरा देवी के द्वारा लगातार जिलाधिकारी कार्यालय से लेकर मुख्य चिकित्सा अधिकारी व प्रभारी अधीक्षक गौर से बीसीपीएम रामजीत जायसवाल को शिकायती पत्र दिया गया और यह आरोप लगाया गया कि आशा बहू द्वारा दिए गए शिकायती पत्र में जनतीरा देवी पिछले 20 वर्षों से शासन के मंशा के अनुरूप कार्य कर रही हैं और अपने द्वारा कभी भी अपने कार्यों में हीलाहवाली नहीं की गई परंतु इधर ज्ञात हुआ कि रामजीत जायसवाल बीसीपीएम द्वारा अवैध रुप से गयाजीतपुर बैरीखाला में आशा बहू के पद को रिक्त दिखाते हुए नवीन फर्जी आशा बहू का चयन बिना ए0एन0एम के हस्ताक्षर के पूर्ण किया गया है और विगत 10 माह से फर्जी आशा बहू का भुगतान किया जा रहा है तब पी पीड़िता ने बीसीपीएम रामजीत जायसवाल से बात की तो बीसीपीएम द्वारा पीड़िता को धमकी देते हुए कहा कि मैं जिसकी चाहे नियुक्ति करूं जिसे चाहे निकाल दूं। जो नवीन नियुक्ति हुई है सब ठीक है है।आशा बहू जनतीरा देवी के लगाए हुए आरोपी पर बीसीपीएम रामजीत जायसवाल से बात की गई तो उन्होंने ने बताया कि आशा बहू द्वारा लगाए गए सभी आरोप की जांच चल रही है जांच के बाद स्पष्ट होगा कि नियुक्ति गलत हुई है या सही लेकिन गयाजीतपुर में आशा बहू नियुक्ति से लेकर लगातार घमासान जारी है संबंधित ग्राम पंचायतों में तैनात ए0एन0एम प्रतिमा शुक्ला से फोन के माध्यम से बात कर जानकारी ली गई तो उनके द्वारा बताया गया कि नवीन आशा बहू नियुक्ति से संबंधित मुझे ना कोई जानकारी है और न ही मुझे किसी बैठक में बुलाया गया है नवीन आशा बहू की नियुक्ति की गई यह भी मुझे कोई जानकारी नहीं है । वह इस पूरे विवादों को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र गौर प्रभारी जेपी कुशवाहा ने बीसीपीएम राम जी जायसवाल से पत्र लिखकर जानकारी मागी जिसमें पत्र में लिखा गया है कि ग्राम पंचायत गयाजीतपुर बैरीखाला के प्रधान उमेश चन्द्र द्वारा लिखित रूप से अवगत कराया है कि जनतीरा देवी आशा के स्थान पर रेनू देवी का चयन आपके कार्यालय द्वारा निर्गत प्रत्रावली जिसमें ग्राम पंचायत गयाजीतपुर बैरीखाला को रिक्त दिखाते हुए कर दिया गया है। जो कि पूर्णतः गलत है क्यों कि पूर्व से ही 2006 में आशा की नियुक्ति ग्राम पंचायत मुडिलवा गयाजीतपुर बैरीखाला से हुई थी। 2015 में नई ग्राम पंचायत गयाजीतपुर बैरीखाला हुआ जिसमें निवासी जनतीरा देवी ग्राम बैरीखाला की बहु थी। इस वजह से ग्राम पंचायत मुडिलवा रिक्त होता है न कि ग्राम पंचायत गयाजीतपुर बैरीखाला।

उपरोक्त विषय में प्रधान जी द्वारा दिये गये पत्र के सम्बन्ध में उक्त ग्राम पंचायत में रिक्त आशा पद हेतु आपके द्वारा सम्बन्धित उपकेन्द्र की ए0एन0एम0 से रिक्त पद की सूचना ली गयी थी। यदि ली गयी थी तो पत्र उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें अथवा बी0सी0पी0एम0 एम0आई एस0 पोंटल के आधार पर आपके द्वारा रिक्त पद दिखाया गया था। तो भी आप द्वारा प्रेषित रिक्त आशा पद की पत्रांवली उपलब्ध कराये जिससे प्रधान जी द्वारा मॉगी जा रही सूचना को उपलब्ध कराया जा सके। सूत्रों पता चला है गयाजीतपुर आशा नियुक्ति को लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गौर पर तैनात बीसीपीएम रामजीत चौरसिया की मुख्य भूमिका रही है। जिसको लेकर बवाल मचा हुआ है और गाजीपुर आशा नियुक्ति को लेकर जमकर भ्रष्टाचार किया गया है जिसको लेकर घमासान मचा हुआ है वहीं पीड़ित आशा जनतीरा देवी की बात करें तो लगातार व अधिकारियों के चौखट पर प्रार्थना पत्र पर प्रार्थना पत्र दिए जा रही है लेकिन जांच उन्हें अधिकारियों को दी जा रही है जिनके ऊपर आरोप लग रहे हैं तो जांच कैसे निष्पक्ष हो पाएगी यह एक बड़ा सवाल है जहां तक बात करें जांच की तो जब तक जिले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी पूरे प्रकरण की जांच खुद नहीं करेंगे तब तक ऐसे घमासान मचा रहेगा और पीड़ित आशा को न्याय मिल पाना बहुत ही मुश्किल है।इस पूरे प्रकरण और विवाद पर सीएचसी अधीक्षक गौर जेपी कुशवाहा से बात की गई तो उनके द्वारा बताया गया पूरे प्रकरण पर जांच चल रही है जांच में जो भी तथ्य आएंगे जो भी दोषी पाया जाएगा उस खिलाफ कार्रवाई की जाएगी।

संक्षिप्त खबरें

मकान में लगी आग, दम घुटने से बुजुर्ग की मौत

कानपुर। आज दिनांक 4 मई 2025 की रात्रि लगभग 3:30 बजे नवाबगंज कस्बे में स्थित जयप्रकाश गुप्ता (उम्र 80 वर्ष) के तीन मंजिला मकान में आग लग गई। मकान में टेडी बेयर और खिलौनों की दुकान संचालित होती थी, जिसमें भारी मात्रा में सामान भरा था। आग का कारण शॉर्ट सर्किट बताया जा रहा है। घटना के समय परिवार के सदस्य मकान में सो रहे थे। स्थानीय लोगों ने सभी को सुरक्षित बाहर निकाल लिया, किंतु पीछे के कमरे में सो रहे जयप्रकाश गुप्ता धुएं के कारण फंसे रह गए। प्रभारी निरीक्षक व फायर ब्रिगेड की सहायता से उन्हें बाहर निकाला गया और हैलट अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। मृत्यु का कारण दम घुटना बताया गया है। फायर ब्रिगेड द्वारा आग पर नियंत्रण पा लिया गया है तथा मौके पर स्थिति शांतिपूर्ण है।

गुमशुदा बीएएमएस के छात्र को बरामद कर परिवार को सौंपा

कानपुर। प्रभारी निरीक्षक बिठूर के कुशल नेतृत्व मे थाना बिठूर पुलिस के द्वारा दिनांक 27.04.25 से गुमशुदा चल रहे रमेश कुमार पुत्र कैलाश राय निवासी ग्राम व पोस्ट लक्ष्मण नगर थाना गाय घाट जनपद मुजफ्फरपुर बिहार हाल पता रामा मेडीकल कॉलेज में बीएएमएस मंधना थाना बिठूर कानपुर नगर उम्र करीब 25 वर्ष को तलाश करते हुए कल 3 मई को सकुशल बरामद कर परिवारी जन के सुपुर्द किया गया। गुमशुदा हुए रमेश कुमार की सकुशल बरामदगी से गुमशुदा के परिवारी जनों के द्वारा पुलिस का आभार व्यक्त किया। क्षेत्र की जनता द्वारा सराहनीय कार्य की भूरी भूरी प्रशंसा की गई।

कानपुर में नीट की परीक्षा में सुरक्षा व्यवस्था कड़ी रही

कानपुर। आज दिनांक 4.05.2025 को पुलिस उपायुक्त सेंट्रल श्री दिनेश त्रिपाठी द्वारा नीट परीक्षा 2025 के सफल आयोजन और परीक्षा केंद्रों की सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पुलिस उपायुक्त सेंट्रल द्वारा थाना बजरिया व नजीराबाद क्षेत्र अंतर्गत विभिन्न परीक्षा केंद्रों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान केंद्रों की सुरक्षा, प्रवेश और निकास व्यवस्था, परीक्षार्थियों की सुगम आवाजाही एवं परीक्षा केंद्रों के बाहर अनावश्यक भीड़ नियंत्रण की व्यवस्था की गहन समीक्षा की गई। महोदय द्वारा मौके पर मौजूद अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए गए कि परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की लापरवाही नहीं की जाएगी। साथ ही, संवेदनशील केंद्रों पर अतिरिक्त पुलिस बल की तैनाती सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए। नीट जैसे राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा में भाग लेने वाले छात्रों को एक शांतिपूर्ण एवं निष्पक्ष वातावरण प्रदान करने हेतु पुलिस प्रशासन पूरी तरह से सतर्क और प्रतिबद्ध है।

चोरी के माल के साथ दो शातिर चोर पकड़े

अलीगढ़। थाना सासनीगेट पुलिस टीम द्वारा दो शातिर चोर गिरफ्तार कर उनके कब्जे से चोरी की 12 किलो पीतल व अवैध असलाह बरामद करने में सफलता हासिल की है। थाना सासनीगेट पुलिस टीम ने शातिर विकाश उर्फ निक्की उर्फ छोटू पुत्र सतीश बघेल निवासी ग्राम खुशावली थाना बरला जिला ,राजकुमार पुत्र गणेश चन्द निवासी राजाराम की सराय थाना सासनीगेट को चोरी की 12 किलो पीतल की स्क्रैप (कतरन, छ इंच की राधा कृष्ण की मूर्ति , क्रिकेट टूर्नामेंट का कप (सील्ड)व आधार कार्ड की छायाप्रति, बैंक की पासबुक तथा अभियुक्त विकास के कब्जे से एक देशी तमंचा मय जिन्दा कारतूस तथा राजकुमार के कब्जे से एक अवैध छुरा बरामद किया गया।

दस करोड़ से कानपुर शहर का एक - एक नाला होगा साफ

इस बार शहर की सड़कों पर नहीं भरेगा बरसात का पानी

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। आज 3 मई को सायं 4 बजे नगर निगम मुख्यालय स्थित समिति कक्ष में महापौर प्रमिला पांडेय ने अतिक्रमण अभियान में मलबा एवं नाला-नाली सफाई अभियान में सिल्ट उठाये जाने के सम्बन्ध में नगर निगम अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में महापौर ने अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि अतिक्रमण अभियान में जो भी मलबा है। उसे तत्काल हटाया जाये। ताकि जगह स्पष्ट दिखे। इस बार का सफाई अभियान ऐतिहासिक होना चाहिए।ताकि बरसात में सड़को पर जल भराव न हो सके।अतिक्रमण अभियान में भेदभाव नहीं होना चाहिए। एक तरफ से सभी का अतिक्रमण हटाया जाये।नाले पर अतिक्रमण नहीं होना चाहिए। नाला-नाली सफाई के बाद सिल्ट का भी उठान किया जाये। ताकि पुनः सिल्ट नाला-नालियों मे न जाये। अतिक्रमण अभियान के उपरान्त जो भी जगह खाली होगी, उसे नगर निगम के कब्जे में लिया जाये। महापौर प्रमिला पांडेय ने कहा, खाली स्थानों में पार्किंग, फेरीनीति के अन्तर्गत रोजगार उपलब्ध कराया जायेगा। महापौर द्वारा नाला-नालियों का नक्शा बनवाये जाने के सम्बन्ध में पूछे जाने पर अधिशाषी अभियन्ता दिवाकर भास्कर ने अवगत कराया कि शासन स्तर पर 10 करोड़ से पूरे शहर के एक-एक गली का नाला-नाली रिकार्ड तैयार किये जाने हेतु प्रस्ताव तैयार कराया गया है। जल्द ही कार्य प्रारम्भ हो जायेगा बैठक में अपर नगर आयुक्त जगदीश यादव, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डा.अजय संख्वार, डा.अमित सिंह, जोनल अभियन्ता, जोन-3 राजेश कुमार, जोन-4 आर के तिवारी, जोन-5 कमलेश पटेल, जोन-6 आर के सिंह, जेड एसओ, जोन-1 अमित, जोन-4 देवेन्द्र, रबिश इंचार्ज रफजुल रहमान, नक्शा अधीक्षक मुकेश अग्निहोत्री इत्यादि उपस्थित रहे।

मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेले का किया गया निरीक्षण

भदोही – रविवार को शान द्वारा चलाए जा रहे जन मुख्यमंत्री जन आरोग्य मेला के तहत मुख्य चिकित्सा अधिकारी भदोही डॉक्टर संतोष कुमार चक द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मइ हरदोपट्टी तथा प्राथमिक स्वास्थ्य गिद्र बड़ागांव का निरीक्षण किया जहां पर मेले के लिए रोस्टर ड्यूटी नहीं बनाई गई जहां पर बीसी पीम व अधीक्षक 7 दिन का वेतन बाधित करने का निर्देश दिया लैब पर स्टीकर नहीं लगाए गए थे तत्काल स्टीकर लगाने का आदेश दिया गय इसी तरह गिर्द बड़ा गांव स्वास्थ्य केंद्र कैंपस में साफ सफाई न होने के कारण सफाई कर्मी का 7 दिन का वेतन बाधित करने का निर्देश दिया उन्होंने निर्देशित किया कि अस्पताल परिसर में 20-20 ट्री गार्ड अगर नहीं लगाए गए तो आपके विरुद्ध कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट समेत अभियुक्त को किया गिरफ्तार

7 लाख रुपए कीमत है 59 इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट की बाजार में

स्वतंत्र प्रभात

कानपुर। अपराध शाखा की स्वाट टीम द्वारा इलैक्ट्रॉनिक सिगरेट निषेध अधिनियम के तहत थाना जूही कानपुर नगर में एक अभियुक्त को 59 पैकेट इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट समेत गिरफ्तार किया है। जूही पुलिस ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि अभियुक्त तुषार वर्मा उर्फ रजत पुत्र विरेन्द्र कुमार वर्मा आनन्दपुरी थाना जूही कानपुर नगर उम्र 32 वर्ष को थाना जूही से गिरफ्तार किया गया। अभियुक्त तुषार वर्मा उर्फ रजत पुत्र विरेन्द्र कुमार वर्मा आनन्दपुरी थाना जूही कानपुर नगर को मुखबिर की सूचना पर 48 क्वाटर के पास सड़क के पास थाना जूही कानपुर नगर से मय 59 पैकेट इलैक्ट्रॉनिक सिगरेट (350 इलैक्ट्रिनिक सिगरेट) के साथ गिरफ्तार किया गया। पकड़ी गई इलैक्ट्रॉनिक सिगरटों की कुल अनुमानित कीमत 7,00,000/- लाख रुपये के करीब है। पकड़े गये अभियुक्त के विरुद्ध धारा 4/7 इलैक्ट्रॉनिक सिगरेट निषेध अधिनियम 2019 थाना जूही कानपुर नगर पर दर्ज कराकर आवश्यक विधिक कार्यवाही थाना जूही द्वारा की गई।

अर्पित शुक्ल ने विश्व रिकॉर्ड प्राप्त कर 'होनहार विरवान के होत चीकने पात 'की कहावत को किया चरितार्थ

स्वतंत्र प्रभात

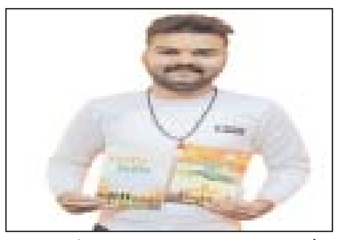

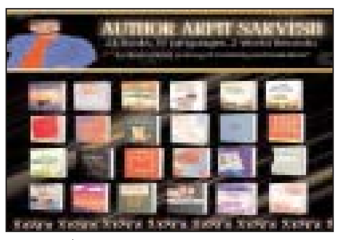

प्रतापगढ़। उम्र अनुभव किसी प्रतिभा को निखारने व आगे बढ़ने में कोई शर्त नहीं है। जुनून एवं जौहर किसी को अनंत सीमा तक आगे ले जाने एवं ख्याति पाने का रास्ता दिखा सकता है। ऐसे ही एक नवयुवक की लालसा उनका कौतूहल व हौसला एवं जिज्ञासा के बल पर विश्व स्तर का कीर्तिमान हासिल करने की कहानी बयां करता है। उत्साही अर्पित शुक्ल का उपनाम अर्पित सर्वेश है। उनका जन्म 17 दिसंबर 2002 को प्रीतम तिवारीपुर , रानीगंज जनपद प्रतापगढ़ में हुआ है।अर्पित शुक्ल की साहित्यिक यात्रा उनकी पहली प्रकाशित रचना लाइट ऑफ डार्कनेस से शुरू हुई।इसके बाद उन्होंने 150 से अधिक संकलनों में सह-लेखक के रूप में योगदान दिया। जिनमें प्रेम, रिश्ते, जीवन, आध्यात्म, समाज, देश, शिक्षा, चुनाव, किसान और ऋतुओं के बदलाव जैसे विविध विषय शामिल हैं। उनके लेखन में गहराई और संवेदनशीलता की झलक ने उन्हें साहित्यिक समुदाय में एक पहचान दिलाई।अर्पित शुक्ल को साहित्य के क्षेत्र में उनके योगदान के लिए एक विश्व रिकॉर्ड प्रमाण पत्र भी प्राप्त हुआ है। उनकी पहली स्वतंत्र रचना वर्ड्स ऑफ अर्पित उनके लेखन यात्रा का एक अहम पड़ाव है। इसके अलावा उन्होंने इंसाने लवर और अर्पित की नीति जैसी दो प्रमुख पुस्तकों का संपादन किया,जिससे उनकी बहुमुखी प्रतिभा और नेतृत्व क्षमता को पहचान मिली। उन्होंने अप्रेन्द्र इंग्लिश ग्रामर नामक एक पाठ्यपुस्तक भी प्रकाशित की है, जो शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को दर्शाती है।अर्पित शुक्ल ने अपनी पुस्तकें 17 भाषाओं में लिखी हैं। जिनमें जर्मन, तुर्की, फ्रेंच, इटालियन, स्पेनिश, हिब्रू, स्वाहिली, वियतनामी, डेनिश, अरबी, जापानी, रूसी, पुर्तगाली, चीनी, कोरियाई, हिंदी और संस्कृत शामिल हैं। उनकी पुस्तकें 15 अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में प्रकाशित हुई हैं और इसके लिए उन्हें विश्व रिकॉर्ड प्राप्त हुआ है। वे विश्व के पहले व्यक्ति बने हैं जिन्होंने 21 वर्ष की आयु में 15 विदेशी भाषाओं में अपनी पुस्तकें एक ही दिन में प्रकाशित की।उन्होंने कुर्दिश भाषा में एक पुस्तक प्रकाशित कर विश्व के पहले भारतीय का दर्जा प्राप्त किया जो इस भाषा में पुस्तक प्रकाशित करने में सफल रहे। अब तक उन्हें दो बार विश्व रिकॉर्ड मिल चुका है और वे 19 भाषाओं में अपनी 24 पुस्तकें प्रकाशित कर चुके हैं, जिसमें से दो पुस्तकों में उन्होंने संकलनकर्ता के रूप में कार्य किया है।अर्पित शुक्ल ने 5 नवंबर को 17 भाषाओं में पुस्तक प्रकाशित की,जिसमें 15 अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में पुस्तक प्रकाशित कर विश्व के पहले व्यक्ति का दर्जा प्राप्त किया। उन्होंने 17 दिसंबर को अपने जन्मदिन पर तीन पुस्तकें प्रकाशित की, जिसमें एक पुस्तक कुर्दिश भाषा में थी और ऐसा करने वाले वह विश्व के पहले भारतीय बन गए।अर्पित ने हाल ही में एक नई पुस्तक प्रकाशित की जिसका नाम ÷तुम्हारा जवाब÷ है। अर्पित की अब तक 25 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अर्पित ने अभी तक तीन विश्व रिकॉर्ड बनाए हैं।इनके पिता डॉ संतोष कुमार शुक्ल एक कालेज में प्रधानाचार्य और माता अनीता शुक्ल गृहिणी हैं। जो अर्पित जैसे पुत्र को जन्म दिये हैं।

सीएम योगी से मिले मानिकपुर ब्लाक प्रमुख, बताई क्षेत्र की समस्याएं

स्वतंत्र प्रभात

चित्रकूट –मानिकपुर ब्लाक प्रमुख अरविन्द मिश्रा ने प्रदेश की राजधानी लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने सीएम योगी को क्षेत्र की समस्याओं के सम्बन्ध में जानकारी दी। मुख्यमंत्री से हुई मुलाकात में मानिकपुर ब्लॉक प्रमुख अरविन्द मिश्रा ने चित्रकूट में एक मेडिकल कॉलिज खोलने, देवांगना एयरपोर्ट घाटी से मारकुंडी तक डबल लेन का निर्माण कराने, चमरौहा नदी पर सेतु निर्माण कराने, बरदहा नदी को ओहन बाध से जोड़ने, मां मंदाकिनी में सीवर लाइन का कार्य कराने, चित्रकूट में रामायण म्यूजियम बनवाने तथा राम वन पथ के समानांतर चित्रकूट से अयोध्या तक रेलवे लाइन का निर्माण कराने की मांग की। इसके साथ ही ब्लाक प्रमुख ने मानिकपुर के पाठा में होने वाली पानी की किल्लत को समाप्त करने के लिए नमामि गंगे योजना के माध्यम से पेयजल परियोजना का कार्य करने वाली कंपनी को जल्द से जल्द कार्य पूरा कराने का अनुरोध किया। इसके अलावा मानिकपुर ब्लाक प्रमुख ने जनपद के विकास को लेकर मुख्यमंत्री से गहन चर्चा की। जिस पर मुख्यमंत्री ने ब्लाक प्रमुख को भरोसा दिया कि चित्रकूट की समस्याओं का निदान करना उनकी पहली प्राथमिकता में है। इस दौरान मानिकपुर ब्लाक प्रमुख ने समाजसेवी रमाकांत मिश्रा के साथ मुख्यमंत्री को स्मृति चिन्ह् भी भेंट किया।

छात्र हित में समस्याओं के निदान के लिए संघर्ष करना ही संगठन का मूल उद्देश्य - नीरज

स्वतंत्र प्रभात

प्रतापगढ़। एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष शुभम मिश्रा ने नियुक्ति पत्र जारी करके रूपापुर निवासी एमडीपीजी कालेज के बीएससी द्वितीय सेमेस्टर के छात्र शिवांशु भट्ट को एमडीपीजी कालेज का इकाई अध्यक्ष नियुक्त किया है।शिवांशु भट्ट को कांग्रेस कार्यालय पर फूल माला के साथ लड्डू खिलाकर स्वागत किया गया और नियुक्ति पत्र सौंपा गया।इस अवसर पर कांग्रेस जिला अध्यक्ष डॉ.नीरज त्रिपाठी ने शिवांशु भट्ट को बधाई देते हुए कहा कि एनएसयूआई छात्र संगठन कांग्रेस पार्टी की रीढ़ है। छात्रों के हितों को ध्यान में रखते हुए कालेज की समस्याओं को चिन्हित कर छात्र छात्राओं के साथ मिलकर आन्दोलन के उपरांत सफलता ही संगठन का मूल उद्देश्य है एनएसयूआई के जिला अध्यक्ष शुभम मिश्रा ने कहा कि बहुत जल्द जनपद के सभी महाविद्यालयों में इकाई गठन करके छात्र हित में कार्य किया जाएगा द्य उन्होंने प्रशासन को आगाह करते हुए कहा कि कुंडा में चार वर्ष की बच्ची के साथ वैन चालक द्वारा दुष्कर्म की हरकत करना न केवल निजी विद्यालय बल्कि जिला प्रशासन भी सवालों के घेरे में आता है 24 घंटे में बच्ची को न्याय नहीं मिला तो जिला अधिकारी को ज्ञापन देकर प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे एमडीपीजी कालेज के नवनियुक्त इकाई अध्यक्ष शिवांशु भट्ट ने शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जो जिम्मेदारी मुझे मिली है पूरी ईमानदारी व निष्ठा से जल्द से जल्द अपनी कमेटी बनाकर पार्टी के दिशा निर्देश के अनुरूप कार्य करूंगा।इस अवसर पर मुख्य रूप से निवर्तमान प्रदेश सचिव बृजेंद्र मिश्रा, कोषाध्यक्ष वेदान्त तिवारी, नगर अध्यक्ष इरफान अली, कांग्रेस सेवादल के प्रदेश उपाध्यक्ष प्रेम शंकर द्विवेदी, जिला अध्यक्ष महेन्द्र शुक्ला, सुनीता पटेल,राजेंद्र वर्मा, सुरेश कुमार सरोज, मो.वसीम,रियाज सुलतान, मो साहिल, राघवेन्द्र तिवारी, प्रभात रंजन, यश द्विवेदी, संजीव सिंह उमेश पांडे, हिमांशु शर्मा, वैभव शर्मा, सूफियान खान, रामेश्वर पांडे, सागर यादव, शिखर सिंह, सूरज पांडे, अतुल, अनुज कनौजिया, सचिन पटेल, अरबाज आलम, रियाज, इदरीश, वैभव पांडे, आशीष शर्मा, दिव्यांशु दुबे उपस्थित रहे।

योग व्यायाम से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है - डॉ पन्ना लाल बिंद

स्वतंत्र प्रभात

भदोही – साइकिलिंग क्लब के तत्वाधान में राष्ट्रीय राजमार्ग बड़ा चौराहा से पर्यावरण और स्वास्थ्य जागरूकता अभियान साइकिल यात्रा निकाली गई। अताउल अंसारी की अध्यक्षता में निकली साइकिल यात्रा को वरिष्ठ चिकित्सक डॉ पन्ना लाल बिंद ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। डॉ पन्ना लाल बिंद ने कहा कि सुबह की हवा बहुत शुद्ध होती है। सुबह के योग व्यायाम से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। सभी को आसपास के काम पैदल या साइकिल से करना चाहिए। मोटरसाइकिल और कार का प्रयोग कम से कम करें। जब आप स्वस्थ रहेंगे तभी अपने परिवार समाज और देश की सेवा कर पाएंगे। साइकिल यात्रा आरंभ होकर चूड़ीहारी मोहाल, सरकारी अस्पताल गली, गौस नगर, मुजाहिद नगर, सोनिया तालाब, नोनियानी मोहाल, नगर पालिका, फूलबाग, सोनखरी, पूरेगुलाब के आस पास का भ्रमण करते हुए वृक्ष लगाओ पर्यावरण बचाओ, वृक्षों की जब करोगे रक्षा, तभी बनेगा जीवन अच्छा, हिंदुस्तान जिंदाबाद, स्वस्थ रहे मस्त रहे, करो योग रहो निरोग, हम सबने ये ठाना है पुरे भदोही को स्वस्थ बनाना है, सुबह की हवा सौ रोगों की दवा, भारत माता की जय, वन्दे मातरम का नारा लगाते हुए लोगों को स्वास्थ्य और पर्यावरण के बारे में जागरूक करते हुए जामिया साबेरा गर्ल्स कॉलेज के सामने इसका समापन हुआ। साइकिल यात्रा में आफताब खान, सरफराज़ अहमद, कमलेश कश्यप, अमन गुप्ता, अबरार हाशमी, राजीव जायसवाल, प्रमोद मौर्य, फैज आलम, कार्तिक सुनील, शमशुल आरफीन, मैनू अली, अज़हर जमाल, प्रेम गुप्ता, अबू हुरैरा अंसारी, अब्दुल गफ्फार, शब्बीर अहमद, साजिद अंसारी समेत आदि रहे।

जीएसटी-सेल्स टैक्स चोरी का माल पकड़ा

अलीगढ। रेलवे स्टेशन पर जीएसटी और सेल्स टैक्स बचाकर ट्रेन में दिल्ली से लाया जा रहा लाखों का माल पकड़ा गया है। पकड़े गए माल में कपड़े, इलेक्ट्रॉनिक्स आइटम व अन्य सामान शामिल है। पकड़े गए माल की कीमत करीब 50 लाख से अधिक बताई जा रही है। दिल्ली से आने वाली पैसेंजर ट्रेन में सवार पैसेंजर की शिकायत पर यह कार्रवाई हुई। जीएसटी और सेल्स टैक्स की संयुक्त टीम मामले में जांच कर रही है।

सोनभद्र शिव पार्वती अमर गुफा-आस्था, प्रकृति और विकास का अद्भुत संगम

●आस्था और विकास के संगम पर श्री शिव पार्वती अमर गुफा

स्वतंत्र प्रभात

ओबरा, सोनभद्र। उत्तर प्रदेश के ओबरा, सोनभद्र के डाला क्षेत्र में स्थित श्री सिद्ध पीठ शिव पार्वती अमर गुफा, जो युगों से आध्यात्मिक शांति और गहरी आस्था का केंद्र रहा है, अब विकास के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार की सक्रियता के चलते मंदिर के सौंदर्यीकरण और विभिन्न विकास परियोजनाओं में तेजी आई है, जिससे यहां आने वाले श्रद्धालुओं में प्रसन्नता की लहर व्याप्त है। स्थानीय श्री हर हर महादेव सेवा समिति के सदस्य और मंदिर के प्रति गहरी श्रद्धा रखने वाले भक्त इस सराहनीय पहल के लिए प्रदेश सरकार के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। उनका कहना है कि भाजपा सरकार ने हमेशा ही हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण स्थलों के विकास को प्राथमिकता दी है, जो अत्यंत सराहनीय कदम है। समिति ने मंदिर के विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने और इस महत्वपूर्ण मुद्दे को उठाने में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले पत्रकारों का भी तहे दिल से धन्यवाद ज्ञापित किया है। कई वर्षों से चली आ रही मंदिर की पारंपरिक रीति-रिवाजों का निर्वहन समिति द्वारा निरंतर किया जा रहा है, जो इस पवित्र स्थल की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत बनाए हुए है।

हालांकि, विकास की इस सकारात्मक पहल के साथ-साथ कुछ मूलभूत समस्याएं भी हैं जिन पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। मंदिर तक पहुंचने का जो मार्ग है, वह अत्यंत ही दुर्गम और कष्टदायक है। रास्ते में जगह-जगह बड़े-बड़े गड्ढे और उभरे हुए पत्थर श्रद्धालुओं, विशेषकर बुजुर्गों और बच्चों के लिए बड़ी परेशानी का कारण बने हुए हैं। समिति के सदस्यों ने चिंता व्यक्त करते हुए बताया कि इन गड्ढों और पत्थरों के कारण अक्सर दुर्घटनाएं होती रहती हैं, जिससे श्रद्धालुओं को शारीरिक और मानसिक कष्ट का सामना करना पड़ता है।एक और विडंबना यह है कि सोनभद्र को %ऊर्जा की राजधानी% के रूप में जाना जाता है, लेकिन इसके बावजूद श्री शिव पार्वती अमर गुफा तक अभी तक बिजली की सुविधा नहीं पहुंच पाई है। मंदिर परिसर में न तो बिजली के खंभे लगाए गए हैं और न ही विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की गई है। समिति के सदस्यों का कहना है कि मंदिर तक पहुंचने के लिए आज तक किसी भी जनप्रतिनिधि या प्रशासनिक अधिकारी के द्वारा पक्की सड़क का निर्माण नहीं कराया गया है। उन्होंने दुख व्यक्त करते हुए कहा कि कितने ही प्रधान और विधायक इस क्षेत्र में आए और चले गए, लेकिन इस महत्वपूर्ण समस्या पर किसी ने भी गंभीरता से ध्यान नहीं दिया। बरसात के मौसम में तो मंदिर का रास्ता कीचड़ और गड्ढों से पूरी तरह से भर जाता है, जिससे श्रद्धालुओं का आवागमन और भी अधिक कठिन हो जाता है।

इन चुनौतियों के विपरीत, यह भी उल्लेखनीय है कि पर्यटन विभाग के सक्रिय सहयोग से सोनभद्र के अन्य धार्मिक स्थलों का कायाकल्प किया जा रहा है, जो लंबे समय से विकास की राह देख रहे थे। यह प्रयास निश्चित रूप से क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देगा।श्री हर हर महादेव सेवा समिति के समर्पित सदस्यों और आसपास के क्षेत्र के निवासियों ने एक स्वर में भाजपा सरकार को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि मंदिर में हो रहे विकास कार्य उनके सामूहिक प्रयासों और समिति के कर्मठ सदस्यों की अथक मेहनत का ही फल है। उन्होंने सभी श्रद्धालुओं और समिति के सदस्यों के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट किया।श्री शिव पार्वती अमर गुफा न केवल एक पवित्र आराधना स्थल है, बल्कि यह इस क्षेत्र की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का भी जीवंत प्रतीक है। मनोरम पहाड़ों के मध्य स्थित भगवान शिव और माता पार्वती का प्राकृतिक शिवलिंग अपने आप में अद्भुत और अद्वितीय है। इस पवित्र स्थल से हजारों-लाखों लोगों की गहरी आस्था और अटूट विश्वास जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र का विकास न केवल धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देगा, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी नई ऊर्जा प्रदान करेगा, जिससे क्षेत्र में रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। यह मंदिर अब एक महत्वपूर्ण तीर्थ और पर्यटन गंतव्य के रूप में तेजी से उभर रहा है, जहां प्रतिवर्ष लाखों श्रद्धालु अपनी श्रद्धा अर्पित करने के लिए आते हैं।इस विकास कार्य से स्थानीय समुदाय में उत्साह और संतुष्टि की भावना स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। यहां वर्ष में दो बार भव्य मेले का आयोजन होता है, जिसमें आसपास के घनी आबादी वाले क्षेत्रों के साथ-साथ दूर-दराज से भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु जल चढ़ाने और अपनी मनोकामनाएं पूर्ण करने के लिए आते हैं। समिति और स्थानीय लोग आशांवित हैं कि भविष्य में भी सरकार और समिति मिलकर इस पावन स्थल के उत्थान के लिए समर्पित भाव से कार्य करते रहेंगे, ताकि यह दिव्य स्थान और भी अधिक भक्तों को आकर्षित कर सके और क्षेत्र की समृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता रहे। मंदिर तक सुगम मार्ग का निर्माण और बिजली जैसी मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता इस दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है, जिससे न केवल श्रद्धालुओं को सुविधा होगी बल्कि मंदिर की महत्ता और भी बढ़ेगी।

संक्षिप्त खबरें

दहेज हत्या में आरोपित महिला मायके से गिरफ्तार

मथुरा। दो अप्रैल को गांव गिडोह में दहेज के लिए महिला की हत्या की घटना की रिपोर्ट थाना कोसीकला पर दर्ज कराई गई थी। घटना के बाद से ही आरोपी फरार थे। कोसीकला पुलिस ने एक आरोपित महिला को उसके मायके गांव बठैन कला कोसीकला से गिरफ्तार कर लिया। घटना में मृतका के पिता द्वारा उसकी बेटी को सुसरालीजनों द्वारा दहेज के लालच में आकर फाँसी लगाकर हत्या कर देने के आरोप में नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई गयी थी। घटना के बाद आरोपित महिला अपने मायके चली गई थी। मुखबिर की सूचना पर रविवार को आरोपित महिला को मायका (घर से) ग्राम बठैन कलां थाना कोसीकलां मथुरा से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्ता के विरूद्ध आवश्यक विधिक कार्यवाही की जा रही है।

चोरी की मोटरसाइकिल बरामद

मथुरा। थाना कोसीकलां पुलिस ने युवक को मोटरसाइकिल चोरी और नशीला पदार्थ रखने के आरोप में गिरफ्तार किया है। इसके पास से पुलिस ने एक मोटर साइकिल व195 ग्राम नशीला पाउडर बरामद किया है। अभियुक्त के खिलाफ थाना कोसीकला पर एक साल से भी कम समय में आधा दर्जन चोरी के मुकदमे दर्ज हुए हैं। कार्यवाही करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक अरविन्द कुमार निर्वाल थाना कोसीकलां, एसआई अमरपाल तोमर चौकी प्रभारी शाहपुर थाना कोसीकलां, एसआई उत्तम चौहान चौकी प्रभारी जिंदल चौराहा थाना कोसीकलां, एसआई अंकित मलिक चौकी प्रभारी बठैन गेट थाना कोसीकलां आदि थे। चौकिंग के दौरान अभियुक्त तालिम पुत्र हाकिम निवासी गांव खेडला थाना बिछोर जिला नूंह मेवात हरियाणा उम्र करीब 20 वर्ष को नई कोसी कामर सडक पर मसान घाट से करीब 80 कदम कोसीकला की तरफ सर्विस रोड पर से 195 ग्राम नशीला पाउडर डायजापाम व चोरी की एक मोटरसाइकिल बिना नम्बर प्लेट के साथ गिरफ्तार किया गया।

पहलगाम में मारे गये लोगों की आत्मशांति के लिए किया हवन

पहलगाम आतंकी हमले में मारे गये लोगों की आत्मशांति कि लिए हवन करते लोग।

मथुरा। चौमुहां में रविवार सुबह छटीकरा के श्री ख्याली धाम गेस्ट हाउस पर कश्मीर के पहलगाम में निर्दोष लोगों की आतंकियों द्वारा हत्या कर दी गयी थी, मृतकों की आत्मशांति हेतु हवन किया जिसमें पंडित सत्यदेव शर्मा द्वारा मंत्र उच्चारण कर हवन को सम्पन्न कराया गया। इसके बाद दिल्ली से आये हुये अखिल भारतीय क्षत्रिय मंच के राष्ट्रीय संयोजक श्री रमेश राघव जी का जोरदार स्वागत किया। राघव जी ने आतंकियों की निंदा करते हुये समाज में फैली कुरीतियों को समाप्त करने पर बल दिया तथा लोगों से अपने-अपने बच्चों को उच्च स्तर की शिक्षा दिलवाने और नशा से बचने को कहा। मथुरा में जल्दी ही एक बड़ा प्रोग्राम करने की बात कही जिसका सभी लोगों ने समर्थन किया। क्षत्रिय मंच के जिला अध्यक्ष अशोक प्रताप सिंह ने संगठन की मजबूती पर बल दिया और गांव गांव जाकर लोगों को संगठन से जोड़ने की बात कही। इस मौके पर मुख्य रूप से रमेश राघव, अशोक प्रताप सिंह, अवनीश सिंह, बिहारी लाल, भगवान सिंह दरोगा, रामकिशोर राजावत,अमित कुमार राजावत, ठा. बलवीर सिंह , सत्यदेव शर्मा , कृष्णा सिंह, रूपेश, कान्हा, ऋषभ चौहान, मुकेश सिसोदिया आदि लोग मौजूद रहे।

ट्रेन के चपेट में आने से युवक का दोनों हाथ कटा हालत गंभीर

सिद्धार्थनगर। उसका बाजार थाना क्षेत्र के नगर पंचायत उसका बाजार के अशोक नगर वार्ड नंबर 06 महुआ ढाला पर रविवार को एक करीब 24 वर्षीय युवक ट्रेन के चपेट में आ गया जिससे दोनों हाथ कट गया। बढ़नी से गोरखपुर जा रही डेमो ट्रेन से युवक के दोनों हाथ कट गए । घायल युवक मंजीत कुमार पुत्र ओम प्रकाश निवासी ग्राम मऊ थाना गोल्हौरा का बताया जाता है। लोगों ने युवक को देखा तो इसकी सूचना तत्काल पुलिस को दी , सूचना पर पुलिस पहुंची तत्काल युवक को एंबुलेंस के माध्यम से उसका बाजार सीएचसी ले जाया गया जहां डॉक्टर ने युवक की हालत गंभीर होने से उसे मेडिकल कॉलेज सिद्धार्थनगर के लिए रेफर कर दिया,जहां युवक का इलाज जारी है। थाना प्रभारी हरिकृष्ण उपाध्याय ने बताया कि सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची तो देखा कि युवक में जान है तत्काल एंबुलेंस को सूचना देकर युवक को अस्पताल भेजवाया गया।

खेलों प्रतियोगिताओं में यूआईडी अनिवार्य, नहीं ले सकेंगे भाग

● राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ अंडर 20 खिलाडियों का चयनित

18 से 19 मई तक आयोजित होगी प्रतियोगिता प्रयागराज में

बिना यूआईडी नंबर के नहीं ले सकेंगे खिलाडी भाग, शीघ्र बनवा लें नम्बर

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। गणेषरा स्पोर्ट्स स्टेडियम मथुरा पर अंडर 20 आयु वर्ग के खिलाड़ियों का ट्रायल हुआ। जिसमें 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। अब चयनित हुए खिलाड़ी प्रयागराज में आयोजित होने वाली राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे। जिला एथलेटिक्स एसोसिएशन के सचिव जय सिंह ने बताया कि इस ट्रायल के दौरान बालकों की 10 किलोमीटर दौड़ में आकाश, विष्णु, ,कुलदीप, 5 किलोमीटर दौड़ में आकाश,कुलदीप , कृष्णा, 3 किलोमीटर स्टीपल चेज दौड़ में विष्णु, कृष्णा, गर्ल्स की 5 किलोमीटर दौड़ में सोनिया उपाध्याय, ज्योति, पायल, बालक वर्ग की 800 मीटर दौड़ में भिक्को, गौरव, अमित बालिका वर्ग की 3000 मीटर दौड़ में सोनिया उपाध्याय, बालक वर्ग की 1500 मीटर दौड़ में श्याम सुंदर, पंकज सिंह, गौरव, बालिका वर्ग की 1500 मीटर दौड़ में शिवानी बालक वर्ग की 400 मीटर दौड़ में हिमांशु चौधरी, आशीष, विनीत, बालिका वर्ग की 400 मीटर दौड़ में पूनम, विशाखा, इंदु, बालक वर्ग की 400 मीटर बाधा दौड़ में अमित,सचिन,लोकेश, बालक वर्ग की 200 मीटर दौड़ में सोनू सैनी,आशीष, दिलीप, बालक वर्ग की 100 मीटर दौड़ में यश चौधरी,संदीप ,यश राज,बालिका वर्ग की 100 मीटर दौड़ में पूनम, पायल, तुषारिका, बालक वर्ग की जैवलिन थ्रो में नरेंद्र, अंकुल, सौरभ, बालक वर्ग की डिस्कस थ्रो में सौरभ ,प्रदीप, बालक वर्ग की शॉट पुट में अंकुल चाहर, प्रदीप चौधरी ,लव जीत नौहवार,

गणेशरा के स्व. मोहन पहलवान राजकीय स्पोर्ट स्टेडियम में अंडर 20 के खिलाडी ट्राइल के दौरान दौड़ लगाते हुए।

बालक वर्ग की लांग जंप में कृष्णकांत, कृष्णा प्रताप, बालक वर्ग की ट्रिपल जंप में कृष्णकांत शर्मा का चयन किया गया। चयनित सभी खिलाड़ी 18 से 19मई तक प्रयागराज में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में हिस्सा लेंगे। उन्होंने कहा कि सभी जिन खिलाड़ियों के पास आक यूआईडी नंबर नहीं है वह दो दिन के अंदर अपना यूआईडी नंबर के लिए रजिस्ट्रेशन करा लें बिना यूआईडी नंबर के आप राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग नहीं ले पा पाएंगे। टाइल के दौरान निर्णायक की भूमिका में के आर डिग्री कॉलेज के शारीरिक शिक्षा विभाग के प्रभारी डॉक्टर दलवीर सिंह कौन्तेय, हरदेव सिंह, नितिन शर्मा, देवेश यादव, राहुल कुंतल, लोकेश गौतम आदि ने शुभकामनाएं दी हैं।

मैक्स पिकअप में 158 किलो गांजे को छोड कर भागे तस्करों तक पहुंची पुलिस

● यमुना एक्सप्रेस वे पर इसी साल सात मार्च को एएनटीएफ मेरठ यूनिट ने की थी कार्यवाही

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। सात मार्च को यमुना एक्सप्रेस वे के माइल स्टोन 97 पर एक मैक्स पिकअप से 158 किलो गांजा बरामद किया गया था। तस्कर गाडी को छोड कर भाग निकले थे। एएनटीएफ मेरठ यूनिट को तभी से फरार हुए मदक पदार्थ तस्करों की तलाश थी। थाना मांट पुलिस व एएनटीएफ मेरठ यूनिट ने एनडीपीएस एक्ट के अभियोग में वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। चौकिंग के दौरान सालासर वाटिका 4 निवारु रोड़ विष्णु विजय पुत्र स्व. सीताराम के मकान की दूसरी मंजिल थाना करधनी जनपद जयपुर राजस्थान से मुखबिर की सूचना के आधार पर एनडीपीएस एक्ट में थाना मांट मथुरा में वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। उल्लेखनीय है कि सात मार्च को एएनटीएफ मेरठ टीम द्वारा यमुनाएक्सप्रेस वे माईल स्टोन

गांजा तस्करी के आरोप में गिरफ्तार अभियुक्त

97 पर आगरा की तरफ से एक वाहन महिन्द्रा पिकअप डीएल 31 सीएस 4625 से 158 किलो अवैध गांजा बरामद हुआ था। जिसमें तीन तीन अभियुक्त गाडी छोडकर भागने में सफल हो गये थे। जिसके सम्बन्ध में एएनटीएफ मेरठ टीम द्वारा थाना मांट पर एनडीपीएस एक्ट पंजीकृत कराया गया था। अभियुक्त के विरूद्ध आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी है। इसके पास से पुलिस ने दो मोबाइल, एक कार बलैनो बरामद हुई है। कार्यवाही करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक जसवीर सिंह थाना मांट, एसआई लोकेन्द्र सिंह एएनटीएफ मेरठ यूनिट आदि पुलिसकर्मी थे।

मथुरा में निकाली भगवान परशुराम की शोभायात्रा

● दो दर्जन झांकियां व बैंड बाजे रहे आकर्षण का केन्द्र

मथुरा। श्री परशुराम शोभा यात्रा समिति के तत्वावधान में आज भगवान परशुराम की शोभायात्रा नगर के विभिन्न मार्गो से होकर बैंडबाजों के साथ धूमधाम से निकाली गई। शोभायात्रा में दो दर्जन झांकियां, डीजे, ताशा और कई बैंड शामिल रहे। शोभायात्रा का नगर में जगह जगह स्वागत किया गया। शोभायात्रा में सबसे आगे परशुराम शोभायात्रा समिति का बैनर, ऊँट, घोड़ा, ढोल ताशा, झाँकी गणेश जी, हनुमान जी, अखाड़ा वृन्दावन, झाँकी विष्णु लक्ष्मी जी, झाँकी नगरकोट वाली मईया, झाँकी नरसिंह भगवान, ताशा पार्टी, झाँकी यमुना जी, श्रीनाथ जी, अखाड़ा, झाँकी भैरों बाबा, झांकी जीवंत परशुराम, रोड शो शिव बरात, झाँकी राम जी अयोध्या वाले, अखाड़ा, जन्मस्थान बैंड, झाँकी जन्मभूमि, शहनाई पार्टी फरसा दल, विंटेज, कार, प्रकाश बैण्ड, अंत में भगवान परशुराम का सुंदर सजा डोला चल रहा था। विप्र समाज के युवक बैंड बाजों की धुनों पर झूमते और परशुरामजी के जयकारे लगाते हुए चल रहे थे। वहीं अखाड़ों में शामिल युवक अपनी कलाबाजी व पटेबाजी का प्रदर्शन करते हुए चल रहे थे। शोभायात्रा प्रारंभ होने से पहले परशुराम शोभा यात्रा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित राम गोपाल शरर्म राष्ट्रीय महामंत्री बंसीलाल शर्मा, आचार्य रमाकांत गोस्वामी, मनोज बॉबी भैया, गजेंद्र शर्मा, ओ पी उपाध्याय, के के शर्मा राधापुरम, चंद्रप्रकाश कवि, गौरी शंकर, अखिलेश गौड़, आशुतोष भारद्वाज, कृष्ण जन्म संस्थान से अनुराग पाठक, सचिव गौरव कांत शर्मा, राकेश गौड़ संजय पिपरोनिया, केके शर्मा, मोनू पंडित, सुनील शर्मा, राजकुमार शर्मा, प्रेमबिहारी शास्त्री, पूजा आचार्य ललित स्वामी एवं लब्बू पंडित जी, सुखदेव गोसाई ,मुकेश शास्त्री, चंदप्रकाश टावर वाले, परशुराम महिला समिति की अध्यक्ष भावना शर्मा ने वैदिक मंत्रों के साथ भगवान परशुराम के विग्रह का अभिषेक किया।

कलरवः जोधपुर झाल पर इंजीनियर पक्षियों ने डाला डेरा'

● अनोखे घौंसले बनाने के कारण बया पक्षी को जाना जाता है इंजीनियर के नाम से भी

भारत में मिलने वाली चार में से तीन प्रजातियां जोधपुर झाल पर करती हैं प्रजनन,जून से शुरू होगा प्रजनन काल

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। आगरा मथुरा और भरतपुर के मध्य स्थित जोधपुर झाल पर इस समय इंजीनियर पक्षियों का कलरव गूंज रहा है। यहां प्रजनन से पहले विभिन्न प्रजातियाँ इन दिनों अपना घोंसला बना रही हैं, इनकी घोंसला बनाने की अद्भुत कला के कारण ही इन्हे इंजीनियर के नाम से भी जाना जाता है। जोधपुर झाल मथुरा जनपद में फरह के निकट स्थित है। इसे उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद द्वारा वन विभाग के सहयोग से वेटलैंडस के रूप में विकसित किया जा रहा है। यहाँ बेहतर वातावरण के चलते बड़ी संख्या में पक्षियों की विभिन्न प्रजातियाँ यहाँ प्रवास करती हैं। बायोडायवर्सिटी रिसर्च एंड डेवलपमेंट सोसाइटी (बीआरडीएस) के पक्षी विशेषज्ञ डॉ केपी सिंह ने बताया कि जोधपुर झाल पर वीवर की तीन प्रजातियां बया बीवर, ब्लैक-ब्रस्टेड बीवर और स्ट्रीक्ड बीवर प्रजनक निवासी हैं।

पशु पक्षियों की विभिन्न प्रजातियां अपनी वंशवृद्धि की प्रक्रिया को अपने अपने तरीकों से पूर्ण करती हैं। पक्षियों की बात करें तो जितनी प्रजातियां हैं उनके घोंसले बनाने से लेकर प्रजनन के लिए साथी का चुनाव और चूजों के पालन पोषण के अलग अलग तौर तरीके हैं। जहां एक ओर पक्षियों को प्रजनन संबधी अनुकूल परिस्थितियों के लिए संघर्ष करना पड रहा हैं तो दूसरी तरफ आगरा-मथुरा की सीमा पर स्थित जोधपुर झाल के संरक्षण और उचित रख रखाव के फलस्वरूप भारत में पाई जाने वाली वीवर की चार में से तीन प्रजातियां जोधपुर झाल पर प्रजनन करती हैं। जोधपुर झाल पर वीवर की प्रजातियों की ब्रीडिंग का अध्ययन कर रहे अब्दुल कलाम के अनुसार वीवर प्रजाति का प्रजनन काल जून से सितंबर तक चलता है। वीवर अपने घौंसले जिस तरह बनाते हैं इस कारण उन्हें बुनकर पक्षी भी कहा जाता है। वेटलैंड्स, नहरें और तालाब के पास के स्थलीय वृक्ष घोंसले बनाने के आदर्श स्थल हैं। यह पाम, खजूर , मूंज , कांस , टाइफा घास अथवा धान की लंबी पत्तियों को घागे की तरह पट्टी काटकर आपस में उन्हे बुनते हैं। केवल नर वीवर घोंसले का निर्माण करते हैं। मादाओं द्वारा आंतरिक सज्जा की जाती है। जिसमें मिट्टी का भी प्रयोग किया जाता है। घोंसले निर्माण में मानसून व शत्रु पक्षियों से सुरक्षा का भी ध्यान रखा जाता है।

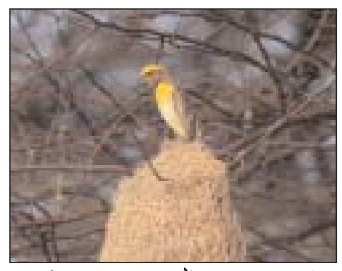

जोधपुर झाल पर घौंसला बुनता पक्षी।

वर्जन

जोधपुर झाल पिछले कुछ सालों के दौरान पक्षियों की बेहतर पसंद का स्थल बन गया है। यहां बड़ी संख्या में विदेशी पक्षी प्रवास करते हैं। बरसात में यहाँ पौधा रोपण किया जाएगा। यहाँ वह सभी सुविधाएं पक्षियों के लिए देने की कोशिश हो रही है, जो उनकी जरूरत है। निर्माण की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। -श्याम बहादुर सिंह, सीईओ

केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट वेलफेयर एसोशिएशन का वार्षिक अधिवेशन एवं शैक्षणिक कार्यक्रम सम्पन्न

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। केमिस्ट एण्ड ड्रगिस्ट वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा एक दिवसीय वार्षिक अधिवेशन एवं शैक्षणिक कार्यक्रम शहर के भीमापार में स्थित एक होटल में आयोजित किया गया।कार्यक्रम में सांसद प्रतिनिधि एसपी अग्रवाल विशिष्ट अतिथि सुरेश गुप्ता तथा संगठन के संरक्षक कौशलेन्द्र त्रिपाठी एवं चेयर मैन परिपूर्णानन्द बख्शी उपस्थित रहे।कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्ज्वलित एवं माँ सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विशिष्ट अतिथि सुरेश गुप्ता ने दवा व्यवसाय कोनियमानुसार ठीक से संचालित करने के लिए महत्व पूर्ण सुझाव दिये। मुख्य अतिथि सांसद प्रतिनिधी पूर्व चेयरमैन एस पी अग्रवाल ने दवा व्यवसाईयों को नियमानुसर व्यवसाय करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं संचालन संगठन के जिला अध्यक्ष रामचन्द्र गुप्ता ने किया। इस अवसर पर मुश्ताक अहमद, शैलेष कुमार पाण्डेय , लाल चन्द गुप्ता, संजय कुमार यादव, तेज प्रताप गिरि, अजहरुद्दीन, अवधेश कुमार मिश्रा, अनिरूद्ध राय, रिषभ जैन, मोहम्मद ओमैरखान, शैलेन्द्र मोदनवाल, संजय कुमार पाण्डेय, गयादीन गुप्ता, अजय कुमार श्रीवास्तव, सुबास चौधरी, राजेश अग्रवाल, शैलेन्द्र पाण्डेय, अब्दुल क्यूम, कृष्ण मुरारी

अग्रवाल, राज किशोकर, इरशाद अहमद, हाजी मोहम्मद तबस्सुम, हाजी इम्तियाज, सुभाष कसौंधन, अवधेश मिश्रा, नीरज वर्मा, दिनेश जायसवाल, बृजेश साहनी, विजय कुमार सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

सामाजिक न्याय के लिए जातिगणना जरूरी, राहुल गांधी की मांग माननी पडी

● हटी सरकार को लेना पडा जातिगत जनगणना कराने का फैसला

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर जिलाध्यक्ष कांग्रेस मुकेश धनगर के नेतृत्व में राहुल गांधी द्वारा जातिगत जनगणना कराई जाने हेतु केंद्र सरकार को बाध्य कराए जाने के लिए जिला कांग्रेस कार्यालय से लेकर विकास बाजार स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा तक धन्यवाद यात्रा निकाली गई। जिलाध्यक्ष मुकेश धनगर ने कहा कि पार्टी के द्वारा नेता प्रतिपक्ष (लोकसभा) राहुल गांधी विगत कई वर्षो से देश में जातिगत जनगणना कराए जाने हेतु केंद्र सरकार से अनवरत मांग करते आ रहे है। उनके लंबे प्रयासों का ही प्रतिफल है कि केंद्र की भाजपा सरकार को जातिगत जनगणना कराई जाने के लिए बाध्य होना पड़ा। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय की लड़ाई में जातिगत जनगणना एक बेहद जरूरी कदम है। महानगर कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष विक्रम बाल्मीकि ने कहा जाति जनगणना अब जन आंदोलन बन चुका है राहुल गांधी जी की आवाज ने भाजपा सरकार को मजबूर किया जनगणना के बिना हिस्सेदारी नहीं और यह धन्यवाद मार्च न केवल राहुल गांधी जी के नेतृत्व को सम्मानित करने का एक प्रयास था बल्कि सामाजिक न्याय और समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पदयात्रा में पार्षद पुनीत बघेल, धनंजय चौधरी, अबरार कुरैशी, प्रवीण गौड़, सतीश शर्मा, राजकुमार तिवारी, ज्ञान सिंह चौधरी, शैलेंद्र चौधरी, अप्रतिम सक्सेना, विपुल पाठक, मनोज गौड़, जिलानी कादरी, मानवेंद्र पांडव, आदित्य तिवारी, विवेक अग्रवाल, प्रदीप

जिला कांग्रेस कार्यालय से जाति गणना के लिए निकाली धन्यवाद मार्च में शामिल कांग्रेस के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता।

सागर, राजा गौतम, बनवारी चौधरी, हरिओम उपाध्याय, उमाशंकर शर्मा, कासन रिजवी, विनोद आर्य, मुस्लिम कुरैशी, आशीष चतुर्वेदी, महेश चौबे, सैयद साबिर, तपेश गौतम , विशाल वाल्मीकि, साहब सिंह प्रधान, अनवर फारुकी, लोकेंद्र यादव, शैलेंद्र कुमार, राजकुमार शर्मा आदि सैकड़ों की संख्या में कांग्रेस जन धन्यवाद यात्रा में उपस्थित थे।

आकाशीय बिजली गिरने से महिला की मौत

स्वतंत्र प्रभात

सिद्धार्थनगर। मोहाना थाना क्षेत्र के फरदहनी गांव निवासी मिथलाही (47) पत्नी फूलचंद आकाशीय बिजली गिरने से झुलसकर घायल हो गई।परिवीजन अनन -फानन उसे सीएचसी में भर्ती कराया जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। मोहाना थाना क्षेत्र के ग्राम फरदहनी निवासी फूलचंद्र की पत्नी मिथलाही देवी (47) रविवार की शाम करीब 4 बजे मिथिलाही अपने घर से भैंस चराने के लिए गांव के उत्तर की तरफ गई थी। रविवार शाम को अचानक आधी पानी आने के कारण उसने जैसे ही पेड़ के पास पहुंची की अचानक तेज गरज के साथ आकाशीय बिजली पेड़ पर गिरी आकाशीय बिजली की चपेट में आने से बेहोश हो कर गिर गई। आकाशीय बिजली से घायल मिथलाही देवी के परिजन सीएचसी बर्डपुर लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया। सीएचसी डॉक्टर महेश कुमार ने कहा कि आकाशीय बिजली से महिला की मौत हुई है। सदर विधायक श्याम धनी राही ने सीएचसी बर्डपुर पर पहुंच कर शोकाकुल परिवार के लोगों से मिलकर संवेदना व्यक्त की और कहा कि शासन द्वारा जो भी सहायता देने का प्रवधान है उसे आवश्य दिलाऊगा।

वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में बच्चों ने मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत कर बटोरी वाहवाही

सिद्धार्थनगर। चिल्हिया बाज़ार के ज्ञानदीप पब्लिक स्कूल के परिसर में शनिवार की रात वार्षिकोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि प्रधान संगठन जिला अध्यक्ष डॉ पवन मिश्रा ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम के माध्यम से विद्यालय के बच्चों ने अनेकों मनमोहक कार्यक्रम प्रस्तुत कर दर्शकों की वाहवाही बटोरी। इस दौरान डॉ पवन मिश्रा ने कहा कि बच्चे देश के भविष्य हैं। उन्हें अच्छे शिक्षण संस्थानों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिलाने की, समाज के हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। इस दौरान प्रधानाचार्य निज़ाम अहमद, कमलेश मिश्रा, सिराज अहमद, इसरार अहमद,मुस्तन शेरुल्लाह आदि मौजूद रहे।

एक राष्ट्र, एक चुनाव लोकतंत्र को स्थायित्व देने वाला कदम- अरुण सिंह

● हरिशंकर राजू यादव बोले देश को चाहिए एकजुट लोकतांत्रिक सोच

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। देश में चुनाव सुधार की दिशा में केंद्र सरकार की श्एक राष्ट्र, एक चुनाव नीति को लेकर शनिवार को गोवर्धन के गुरु कृपा गार्डन, पुराना सौंख बाईपास रोड पर एक प्रबुद्धजन समागम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव एवं राज्यसभा सांसद अरुण सिंह, भाजपा महानगर अध्यक्ष हरिशंकर राजू यादव, विधायक मेघ श्याम सिंह ठाकुर और महापौर विनोद अग्रवाल एमएलसी ठाकुर ओम प्रकाश सिंह ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महानगर अध्यक्ष हरिशंकर राजू यादव ने की। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए अरुण सिंह ने कहा कि 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' कोई राजनीतिक नारा नहीं, बल्कि राष्ट्रहित में लिया गया दूरदर्शी निर्णय है। उन्होंने कहा कि बार बार होने वाले चुनावों से न केवल शासन प्रक्रिया बाधित होती है, बल्कि समय और संसाधनों की भी भारी बर्बादी होती है। इस प्रणाली से देश को

कार्यक्रम में मौजूद भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव एवं राज्यसभा सांसद अरुण सिंह, भाजपा महानगर अध्यक्ष हरिशंकर राजू यादव, विधायक मेघ श्याम सिंह ठाकुर और महापौर विनोद अग्रवाल एमएलसी ठाकुर ओम प्रकाश सिंह एवं अन्य।

स्थिर और विकासोन्मुख प्रशासन मिलेगा। विधायक मेघ श्याम सिंह ठाकुर ने कहा कि बार-बार होने वाले चुनावों में सरकारी मशीनरी जैसे शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी और पुलिस बल बार-बार व्यस्त हो जाते हैं, जिससे विकास कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। 'एक राष्ट्र, एक चुनाव' की अवधारणा से नीति निर्माण और योजनाओं के क्रियान्वयन में निरंतरता बनी रहेगी। भाजपा महानगर अध्यक्ष हरिशंकर राजू यादव ने कहा कि यह प्रणाली राजनीतिक स्थायित्व की दिशा में एक बड़ा सुधार है।

इससे जनता को बार-बार मतदान की प्रक्रिया में शामिल होने की असुविधा नहीं होगी और सरकारें पूरे कार्यकाल तक विकास लक्ष्यों पर केंद्रित रह सकेंगी। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानेंद्र राणा ने किया। इस अवसर पर पूर्व विधायक कारिंदा सिंह हीरा सिंह कुंतल पूर्व महापौर डॉ मुकेश आर्य बंधु पूर्व जिला अध्यक्ष डीपी गोयल पूर्व ब्लाक प्रमुख पन्नालाल गौतम संजय शर्मा कुंज बिहारी चतुर्वेदी रामकिशन पाठक हरिओम शर्मा अंकुर अग्रवाल मीडिया प्रभारी श्याम शर्मा विजय शर्मा यज्ञ दत्त कौशिक दीपक गोला नितिन चतुर्वेदी कपिल पटेल विनीत शर्मा अंकुर गुर्जर बृजेश अहेरिया हनुमान गुर्जर मंडल अध्यक्ष कान्हा शर्मा प्रकाश गौड़ करतार सिंह हाकिम सिंह टीटू जितेन्द्र वार्ष्णेय नितिन कौशिक लोकेश निषाद सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता और जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

एक्सप्रेस वे पर हादसे में सफारी कार सवार दो की मौत तीन की हालत गंभीर

● मांट क्षेत्र में गांव जावरा के पास रात के समय हुआ हादसा

स्वतंत्र प्रभात

मथुरा। यमुना एक्सप्रेस वे पर मांट क्षेत्र में नोएडा से आगरा की तफर माइल स्टोन 98 पर रात के समय हुए भीषण सडक हादसे में दो कार सवार दो की मौत हो गई जबकि तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हैं। हादसे के बाद रात में यमुना एक्सप्रेस वे पर कुछ देर के लिए यातायात भी प्रभावित हुआ। मौके पर पहुंचे पुलिस बल और जेपी की क्रेन की मदद से दुर्घटना ग्रस्त वाहन को हटाया गया और घायलों को जिला अस्पताल लाया गया। जहां चिकित्सकों ने एक महिला और एक पुरूष को मृत घोषित कर दिया। जबकि तीन अन्य को उपचार के लिए भर्ती कर लिया। मृतक और

यमुना एक्सप्रेस वे पर हुए हादसे में क्षतिग्रस्त हुई कार।

घायल सभी सफारी कार में सवार थे। सडक हादसा रात को करीब पौने दो बजे गांव जाबरा के समीप हुआ। माना जा रहा है कि रात मे चालक को नींद की झपकी आने से कार किसी वाहन से टकरा गई। हालांकि घटना कैसे हुई इस बात की ठीक जानकारी नहीं हो सकी है। पुलिस ने मृतक और घायलों की पहचान सुनिश्चित कर ली है। कार में सवार प्रेम सिंह पुत्र रामवृक्ष निवासी गौर सिटी सी 1505 नोएडा, सूर्य सिंह पुत्र प्रेम सिंह निवासी उपरोक्त को अनन्तकीर्ति हॉस्पिटल लक्ष्मी नगर मथुरा तथा पूजा पत्नी प्रेम सिंह, सुमित पुत्र सिकन्दर निवासी दरभंगा बिहार, रोशन पुत्र राजाराम निवासी रविदास गली विश्वास नगर नई दिल्ली पूर्वी हैं। सभी गंभीररूप से घायल अवस्था में जिला चिकित्सालय मथुरा लाया गया जिसमें पूजा व सुमित को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। सीओ मांट गुंजन सिंह ने बताया कि हादसे में दो की मौत हो गई और बाकी घायलों का इलाज चल रहा है। क्षतिग्रस्त कार को क्रेन की मदद से सड़क किनारे किया गया है।

एक ही नम्बर की, दो-दो गाड़िया सड़कों पर चलाकर परिवहन विभाग की आंखों में धूल झोंक रहे वाहन मालिक

स्वतंत्र प्रभात

कौशाम्बी। जनपद में एक चौंकाने वाला मामला सामने आया है बता दें कि एक ही रजिस्ट्रेशन नम्बर पर दौड़ रही हैं दो-दो गाड़ियां यह लापरवाही नहीं, बल्कि कानून को खुली चुनौती है। परिवहन विभाग की आंखों के सामने इस तरह का फर्जीवाड़ा अब सुरक्षा के लिए गम्भीर खतरा बनता जा रहा है। ऐसी फर्जी नम्बर प्लेट वाली गाड़ियों का इस्तेमाल आपराधिक गतिविधियों में आसानी से किया जा सकता है, और अपराध के बाद पकड़ पाना भी मुश्किल हो जाता है। सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर जिले की सड़कों पर कितनी ऐसी गाड़ियां धड़ल्ले से दौड़ रही हैं जिनका कोई ठिकाना नहीं और जिनका रिकॉर्ड सिर्फ कागज़ों तक सीमित है। अब जब मामला ज़िला अधिकारी तक पहुंचा, तो डीएम ने लिया गम्भीरता से संज्ञान में लेते हुए चांज करवाया जायेगा। संभावना है कि जल्द ही जिले भर में

शुरू हो सकती है बड़ी जांच और जबरदस्त कार्रवाई।परिवहन विभाग के ढीले सिस्टम पर सवाल खड़े हो रहे हैं।